Plagiarism Detector v. 2942 - Originality Report 5/25/2026 3:13:30 PM

Analyzed document: CPS-2 (1).pdf Licensed to: Pitamber Dutt Pant

Comparison Preset: Rewrite Detected language: Hi

Check type: Internet Check

TEE and encoding: PdfPig

Detailed document body analysis:

Relation chart:

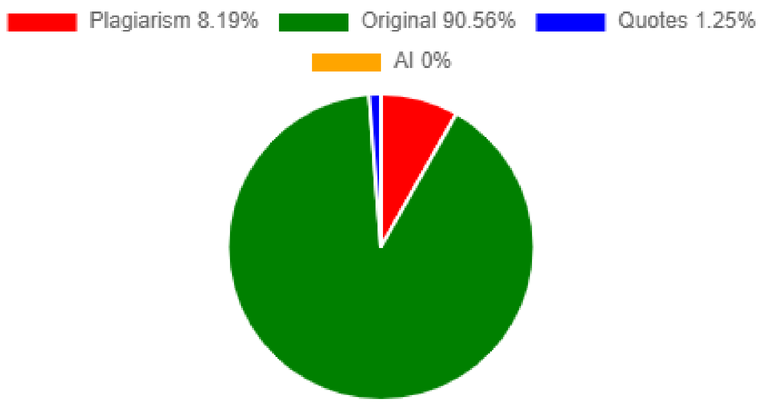

Distribution graph:

Top sources of plagiarism: 24

5%	3195	1. https://mycoaching.in/r-ke-roop-prakar-matra-shabd-hindi
5%	2672	2. https://mycoaching.in/hindi-varnamala
4%	2342	3. https://sanskartutorials.in/hindi-alphabet-hindi-aksharmala-hindi-varnmala/

Processed resources details: 57 - Ok / 9 - Failed

Important notes:

Wikipedia:	Google Books:	Ghostwriting services:	Anti-cheating:
[not detected]	[not detected]	[not detected]	[not detected]

UACE: UniCode Anti-Cheat Engine report:

[uace_line1]

[uace_line2]

3. Document not normalized: normalizer is switched off

[uace_line4]

[uace_line5]

[uace_line_recommendation_title]
[uace_line_recommendation]

Alphabet stats and symbol analyzes:
UACE does not support the doc language! UACE logics skipped!

Active References (Urls Extracted from the Document):

No URLs detected

Excluded Urls:

No URLs detected

Included Urls:

No URLs detected

Detailed document analysis:

CPS -2 इकाई 1 -ज्ञान के विविध स्रोत; सूचना, समंक एिं ज्ञान में अतं र Various Sources of Knowledge; Differences in Information, Data and Knowledge 1.1 प्रस्तािना 1.2 उद्दश्े य 1.3 ज्ञान के विविध स्रोत 1.4 सचना, समक एिं ज्ञान में अतर ू ं ं ं 1.4.1 समक ं 1.4.2 सचना ू 1.4.3 ज्ञान 1.4.4 सचना, समक एिं ज्ञान में अतर ू ं ं ं 1.5 साराश ं 1.6 शब्दािली 1.7 अभ्यास प्रश्नों के उत्तर 1.8 सदर्भ ग्रथ सची ू ं ं 1.9 सहायक/उपयोगी पाठयसामग्री ् 1.10 वनबधात्मक प्रश्न ं 1.1 प्रस्तावना यह सिभ विवदत ह ै वक मनष्य अन्य प्रावियों से वर्न्न ह।ै अन्य प्रावियों की अपेक्षा मनष्य अपने ज्ञान को ु ु आगे बढाता ह ैऔर अपने ज्ञान िवि एिं शवक्त िवि से अपन े िाितािरि में एक समन्िय स्थावपत करने ृ ृ ं का प्रयास करता ह।ै ज्ञान के क्षेत्र में वनरतर प्रगवत उसकी विज्ञासा का प्रवतफल ह।ै एक विज्ञास मानि की ु ं शवक्त असीवमत ह।ै अतः वकसी ्री समस्या के वनदान के वलए उसकी शारीररक एिं मानवसक शवक्तया ं ं एकाग्रवचत होकर उसका समाधान खोिने लगती ह।ै प्रयास सफल हो की नहीं यह आियशक नहीं परन्त ु उसकी विज्ञासा की ज्योवत प्रज्ज्िवलत हो िाती ह।ै ज्ञान स्थलता से सक्ष्मता की ओर ले िाता ह ै ू ू उत्तराखण्ड मक्त विश्वविद्यालय 1 ु CPS -2 यह अध्याय ज्ञान एिं ज्ञान के विवर्न्न स्रोतों की वििेचना पर आधाररत ह।ै ज्ञान की परर्राषा, ज्ञान , ं आकड़े एिं सचना के मध्य अतर को इस अध्याय में सवममवललत वकया गया ह।ै िहा ्रौवतक ज्ञान का ू ं ं ं ं आधार मन ह ै िही आध्यावत्मक ज्ञान का आधार आत्मा ह।ै यह ्री ज्ञात करना आिश्यक ह ै वक वकस ्ीँ प्रकार के मानि व्यिहार को ज्ञान की श्रेिी में वलया िा सकता है।प्रस्तत अध्याय में ज्ञान अविभत करने के ु पारपरररक एिं आधवनक साधन पर ्री बल वदया गया ह।ै वकसी ्री समस्या को हल करने के वलए वचतन, ु ं ं ं मनन एिं पररश्रम की आिश्यकता

Plagiarism detected: **0.04%** https://mycoaching.in/hindi-varnamala id: **1**

होती ह।ै परन्त क्री क्री समस्या का हल प्रयास एिं र्ल से ्री हो ु ू ं ं िाता ह

।ै 1.2 उद्दश्े य प्रस्तत इकाई का अध्ययन करने के पश्चात आप : ु 1. ज्ञान की धारिा से क्या अवर्प्राय ह ै बता सकें गे। 2. ज्ञान के आधारों को अपने शब्दों में व्यक्त कर सकें गे। 3. ज्ञान प्राप्त करन े के विविध स्रोत की चचाभ कर सकें गे। 4. ज्ञान प्राप्त की िैज्ञावनक विवध क्या ह ै और इसकी क्या क्या विशेषताए का विश्लेषि कर सकें गे ं 5. ज्ञान का अवस्तत्ि क्या ह ै और इसकी विवर्न्न अिधारिाओ को बता सकें गे। ं 6. ज्ञान, सचना एिं समक में अतर स्पष्ट कर सकें गे। ू ं ं ं 1.3 ज्ञान के वववववध स्रोत यह सिभविवदत ह ै की वशक्षा का प्रमख उद्दश्े य ज्ञान प्रदान करना ह।ै ज्ञान का सत्य से िही समबन्ध ह ै िो ु सरि का गमी से ह।ै सत्य का अवस्तत्ि त्री मान्य ह ै िब उसका ज्ञान हो। सत्य को ज्ञान से अलग नहीं ू वकया िा सकता । इसीवलए तत्िमीमासा के साथ ज्ञान मीमासा िडी ु ं ं

Plagiarism detected: **0.12%** https://mycoaching.in/hindi-varnamala + 6 resources! id: **2**

होती ह ै । ज्ञान और सत्य एक ही ह ै क्यवीँ क यह व्यवक्त के मन में होता ह ै । ू ज्ञान की उपयोवगता त्री ह ै िब उसे दसरों तक पहचाया िा सके । यही मत ं ू सतो एिं धमप्रभितभको का ्री ह ै । वशक्षा ं ं द्वारा ज्ञान की उपयोवगता को वसि वकया िा सकता ह ै । ज्ञान

िह ह ै िो हमारे िीिन पर लाग होता ह,ै प्राचीन ू होने पर ्री विसका अवस्तत्ि विद्यमान उत्तराखण्ड मक्त विश्वविद्यालय 2 ु CPS -2 ह,ै िो ितभमान में ्री ताज़ा बना हआ ह।ै ज्ञानी नए एिं पराने को िोड़ कर िीिन को िीना िानते ह ै । ु ं प्राचीन ज्ञान के अनसार नए और पराने का समन्िय होना वनतात आियशक ह ै , िैसे एक िक्ष का तना ृ ु ु ं पराना होता ह ै पर उसकी र्वमका आियशक होती ह ैऔर उसकी शाखाए नयी होती ह,ै उसी प्रकार से ु ू ं व्यवक्त का िीिन ्री अनकलनशील होना चावहए । ऋगिेद का प्रथम श्लोक ह,ै ु ू "अवननपिभवर्रऋवषवर्ररधौ नतानैरुतः" प्राचीन और निीन दोनों एक साथ विद्यमान ह ै और यही ज्ञान ह ै । ू ू कोई ्री व्यवक्त दखी या व्यवथत नहीं रहना चाहता । िो हमें दःख से दर ले िाए ,िो हमें दरदवशभता ु ु ू ू वदखाए िो हमारे िीिन को स्फवतभ प्रदान करे , और िो हमारे व्यवक्तगत को सवष्ट से िोड़े , िही

Plagiarism detected: **0.04%** https://www.amojeet.com/2021/05/ka-se-gy-tak… id: **3**

ज्ञान ह ै । ृ ू ज्ञान अत्यत सतोष प्रदान करता ह,ै और यह सबको उपलब्ध ह ै । अतः ज्ञान िह

ह ै िो िीिन में उत्साह ं ं लाये, िो चेहरे पर मस्कान लाए,े और िो िीिन में दरदवशभता लाने का अतबोध द े । ज्ञान सक्ष्म ह ै अथाि ु ू ं ू स्थल, यह एक अवत महत्िपिभ प्रश्न ह ै । िहा वशक्षकों एिं विद्याववथभयों के मन में िानकारी के रूप में ज्ञान ू ू ं ं को सक्ष्म की श्रखला में रखा िा सकता ह ै िही, पस्तकों में िविभत ्राषा में वलखा ज्ञान स्थल होता ह ै । ृ ्ीँ ू ु ू उदहारि के वलए विस प्रकार िल में नमक घल िाता ह ै पर एक बड़ा ढेला स्थल रूप में वदखाई दते ा ह ै , ु ू उसी प्रकार विद्याववथभयों के वलए पस्तक िही नमक का ढेला ह ै विससे उनके ज्ञान का िधभन होता ह ै । ु ज्ञान की सक्रियता एव असक्रियता ं वशक्षा की दवष्ट से ज्ञान की सवियता एिं असवियता को ज्ञात कर लेना अवत आियशक ह ै । वशक्षक द्वारा ं पाठ योिना का स्िरुप बनाना विससे वक िह विद्याववथभयों को ज्ञान का अिभन कराने के वलए उवचत वस्थवतयों का वनमाभि कर सके , सविय ज्ञान की श्रेिी में आता है। वशक्षक का उद्दश्े य होता ह ै वक विद्याथी उस ज्ञान का उपयोग कर सके । प्रयोग के माध्यम से ज्ञान रुवचकर हो िाती ह ै । अन्यथा ज्ञान यवद बोझ लगन े लगे तो विद्याथी उससे ला्राववन्त नहीं हो पाता । प्रत्यक्

Plagiarism detected: **0.29%** https://www.amojeet.com/2021/05/ka-se-gy-tak… + 3 resources! id: **4**

ष ज्ञान एव अप्रत्यक्ष ज्ञान :ज्ञान के दो पक्ष होते ह:ैं प्रत्यक्ष ज्ञान एि अप्रत्यक्ष ज्ञान । ऐसा ज्ञान िो ं ं हमारी ज्ञानेवन्िर्यों से प्राप्त होता ह ै , विसे व्यवक्त अपने िीिन में स्िय प्राप्त करता ह,ै प्रत्यक्ष ज्ञान ह ै । ऐसे ं ज्ञान को ताज़ा ज्ञान कहा िाता ह ै िही दसरी ओर िह ज्ञान िो कथनों एि पस्तकों से प्राप्त वकया िाता ह,ै ीं ु ं ू परोक्ष ज्ञान होता ह ै । परोक्ष ज्ञान को इवसवलये बासी ज्ञान ्री कहा िाता ह ै । िेतभमान यथािभदी दाशभवनक एि िैज्ञावनक प्रत्यक्ष ज्ञान को मानते ह ैं । परन्त वशक्षा के क्षेत्र में दोनों पक्ष के ज्ञान की र्वमका ह ै । ्ारतीय ु ू ं दशभन में प्रत्यक्ष ज्ञान को प्रमा एि परोक्ष ज्ञान को अप्रमा कहा गया ह ै । ्ारतीय दशभन में आगे इस बात का ं ्री िििभन ह ै की ज्ञान एि अज्ञान के ्ेद को वकस प्रकार समझा िाए। प्रत्यक्ष एि परोक्ष ज्ञान

के अलग ं ं अलग लक्षि ्री िविभत वकये गए हैं। इसके अवतररक्त मीमासा दशभन में ्री दो

Plagiarism detected: **0.04%** https://teachingyatra.com/hindi-varnamala/ id: **5**

नों प्रकार के ज्ञान की ं ििेचना की गयी ह ै । इस से यह पवष्ट होती ह ै क

ी वशक्षक वशक्षा के माध्यम से िह विद्यावथभयों को रम म से ु मक्त करन े का प्रयास करता ह ै । ऐसी वशक्षा विससे विद्याथी

Plagiarism detected: **0.04%** https://sabsastaa.com/english-barakhadi/ id: **6**

को ज्ञान का स्िरुप समझाया िा सके । ु क्या ज्ञान परिवततक्रनय है अथवा अपरिवक्रततनीय :यह एक अवत महत्िपिभ प्रश्न ह ै की ज्ञान

का स्िरुप ू परिवतभत होता ह ै अथिा नहीं? ज्ञान के तत्ि बदलते ह ैं अथिा नहीं? वशक्षक अपने विद्यावथभयों को विस उत्तराखण्ड मक्त विश्वविद्यालय 3 ु CPS -2 ज्ञान के तथ्य, विचार , प्रत्यय, वनयम एि वनष्कषभ आवद ज्ञान के कथ्य को समझाता ह ै , उनमे परिितभन ं अथिा बदलाि होता ह ै अथिा नहीं ? यहााँ पर ध्यान देने की बात यह ह ै वक ज्ञान के कछ तत्ि तो बदलते ु ह ैं पर ि इतने समय काल में होते ह ै वक उनका बदलाि अनिर् नहीं हो पाता । िीिन मलय लगर्ग िैसे ु ू ही रहते ह ैं , और ऐसे तथ्य ,वनयम अथिा प्रत्यय प्रायः नहीं बदलते और ज्ञान के य े तत्ि वशक्षा के वलए अवत महत्त्िपिभ ह ै ।वशक्षा द्वारा इन िीिन मलयों के प्रवत विद्यावथभयों में आस्था पैदा की िाती ह ै । परन्त ू ू ु ऐसा नहीं ह ै

Plagiarism detected: **0.06%** https://mycoaching.in/r-ke-roop-prakar-matra-s… + 3 resources! id: **7**

की ज्ञान के तत्िों में परिितभन नही होता । ज्ञान के कछ तत्ि परिितभन से प्र्ावित होते ह ैं । िब ु ज्ञान में अविर्वध होती ह ै तो ज्ञान म

ें परिितभन वनवश्चत ह ै । पाठयिम म ें समय समय पर बदलाि ृ ृ आियशक ह ै विससे की परिवतभत ज्ञान को वशक्षा के माध्यम से विद्यावथभयों तक पहचाँ ाया िा सके । त्री वशक्षा को प्रगवतशील कहा िा सकता ह ै । सत्य के अन्िेषि से िो नए वसात और वनयम उिागर होते ह ै ं ि ज्ञान के स्थल रूप में परिितभन की अपेक्षा रखते ह ैं ।यह सत्य ह ै वक शरीर की आाँखें सब कछ नहीं देख ू ु सकती परन्त ज्ञान चक्ष सब कछ दखे सकती ह ै । वशक्षा हमारे ज्ञान चक्ष खोल दते े ी ह ै अतः कलयािकारी ु ु ु ु विस हो सकती ह ै । िेतभमान पररपेक्ष्य में, वशक्षा मात्र सचनात्मक तथ्यों को विद्यावथभयों तक ू पहचान े का काय भ करती ह ै न वक ठोस ज्ञान का , इससे इसका खोखलापन प्रकट होता ह ै । ं ज्ञान के प्रकाि ज्ञान के चार प्रकार होते ह:ैं 1. आगमनात्मक ज्ञान 2. प्रागनिुा ज्ञान ु 3. विश्लेषि ज्ञान 4. एि सश्लेषि ज्ञान ं ं 1. अनिि्रन्य ज्ञान (A Posteriori Knowledge): अनिर् एि वनरक्षि पर आधाररत ज्ञान ही ु ु ं अनिि्रन्य ज्ञान ह ै । इसके मख्य प्रितभक िॉन लोक थे । उनके अनसार, विद्याथी मन िन्म में कोरा ु ु ु होता ह ै परन्त अनिर् के साथ उसके मन की पट्टी पर लेखन प्रारम्र् हो िाता ह ै । अतः यह कहा िा ु ु सकता ह ै वक अनिर् से ज्ञान की िवि होती ह ै । इस प्रकार के ज्ञान में अलौवकक का स्थान

Plagiarism detected: **0.03%** https://mycoaching.in/hindi-varnamala id: **8**

नहीं होता ृ ु ह ै । समग्र अनिर् से सीखने की प्रबलता बढती ह।ै िॉन लोक के अनसार,

Quotes detected: **0.08%** id: **9**

“ हमारी बवि एि हमारी ु ु ु ं ज्ञानवे न्िर्यों में कछ ्री वनवहत नहीं होता ह ै । िन्म के प्रत्यय के विचार को लोक वनरस्त करते ह ैं और ु प्रत्यक्षीकरि द्वारा ज्ञान को ही िास्तविक ज्ञान मानते ह ैं ।”

अनभवजन्य ज्ञान की क्रवशेषताए : ु ं i. हमें अपने दवै नक िीिन में िो ज्ञान प्राप्त होता ह ै िह यथाथभ नहीं बवलक िही ज्ञान का िास्तविक उदाहरि ह ै । ii. इस ज्ञान के अनसार अनिर् ही ज्ञान का मख्य स्रोत ह ै । अनिर् का अथभ इवन्िय अनिर् से ह।ै ु ु ु ु ु iii. िन्म िात मन में कोई प्रत्यय नहीं होता बवलक िह अनिर् के द्वारा होता ह ै । ु उत्तराखण्ड मक्त विश्वविद्यालय 4 ु CPS -2 iv. प्रारम्र् में मन वनवष्िय रूप में संिेदनाओ को ले लेता ह ै । मन की सवियता प्रारम्र् में नहीं ं ं होती ह ैबवलक अनिर् से होती ह ै। ु v. ज्ञान के मौवलक तत्ि प्रत्यय ह ै और उसकी प्रिवत आध्यावत्मक ह ै । vi. ्ौवतक ज्ञान में ही आदशभ ज्ञान वनवहत होता ह ै ।विज्ञान िाभ्रौम ज्ञान देता ह ै परन्त उसमे ु अवनियतभ ा नहीं होती । 2. प्रागनभव ज्ञान (A Priori Knowledge) : िब वसात को समझ वलया िाता ह,ै तो सत्य की ु ं पहचान होती ह।ै वफर, वनररक्षि, अनिर् एि प्रयोग द्वारा उसे प्रमावित करन े की आिश्यकता नहीं ु ं होती। काट इस विचार के प्रितभक थे । िहााँ आगमनात्मक ज्ञान अनिर् पर बल दते े ा ह,ै िही ीं ु ं प्रागनिर् ज्ञान अनिर् से स्ितत्र होने की बात कहता ह ै । उनके अनसार, सामान्य सत्य स्पष्ट, वनवश्चत ु ु ु ं

होता ह ै । गवित का उदाहरि दते े हए इस ज्ञान को समझा ि ा सकता ह ै । गवित का ज्ञान प्रागनि्र ु ज्ञान ह ै । काट न े तकभ ि ए अनि्र के परस्पर सहयोग से ज्ञान की प्राविप्त की बात करते । दोनों ही ज्ञान ु ं ं के स्रोत ह ैं और दोनों का समान महत्त्ि ह ै । वकसी एक की आलोचना करना ठीक नहीं ह ै । काट के अनसार, ज्ञान की तीन विशेषताए ह ैं : सिाभ ़ रौवमकता, आिश्यकता ि ए नीनता । ु ं ं ं काट ने ़रौवतक विज्ञान ि ए गवित के ज्ञान का सस्लेषि वकया ि ए िास्तविक ज्ञान की सि्रािना का ं ं ं ं ं उललेख वकया । बारह पक्षों को सवममवलत वकया ि ो इस प्रकार से ह ै : अनके ता, एकता, समग्रता, ि्रा, अि्रा, सेवमत्ता, करता, गनाथभकता, अन्योंतता , सि्रािना, िास्तविकता, ि ए अवनियभता । ु ं ं ं काट द्वारा ज्ञान की परी व्याख्या की गयी ह ै । इसका आरमर् सिेदनाओ से होता हआ अतद्दवभ ष्ट पर ू ं ं ं ं ि ाकर समाप्

Plagiarism detected: **0.05%** https://hindialphabet.com/ + 2 resources! id: **10**

त होता ह ै । सिेदनाओ के द्वारा ही बाह्य ससार का बोध कर के ज्ञान का अिभन वकया ं ं ं ि ाता ह ै । काट दो प्रकार क े विश्व की चचा भ करते ह ैं : परमाथभ सत्य ि ए सिवत्त सत्य । पहले ि ाले से ू ं ं ं बोध होता ह ै ि ए दसरे से सिेदना होती ह ै । इन दोनों विचारों का एकाकीकरि कर के ज्ञान पर प्रकाश ं ं ु डालते । इन दोनों विचारों में अनि्र और तकभ सवममवलत ह ैं । ु 3. क्रवश्ले षण (Analyt Ic Method) : वकसी ़री समस्या में क्या ह ै और क्या ज्ञात करना ह,ै कै से ज्ञात करना ह,ै विश्लेषि की श्रखला में आता ह ै । इन स़री घटकों को अलग अलग पढन े की विवध ही ृ ं विश्लेषि ह ै । इसे समस्या का हल खोिने की सिोत्तम विवध कहा ि ा

Plagiarism detected: **0.06%** https://hindiletter.org/k-se-gya-tak id: **11**

ता ह ै ।ज्ञात से अज्ञात का पता वकया ि ाता ह ै । हल प्राप्त करने के वलए प्रश्नों में वदए गए तथ्यों का विश्लेषि करके ि म में रखा ि ाता ह ै । ज्ञ

ात से अज्ञात बढ़ने की प्रविया प्रारमर् हो ि ाती ह ै । वदए गए तथ्यों पर प्रकाश डाल के , उनकी सहायता से पररिामों को प्राप्त वकया ि ाता ह ै , वफर दोनों के मध्य परस्पर समायोिन बैठाया ि ाता ह ै । विश्लेषि विवध के तीन मख्य सोपान ह ै – ज्ञात करना, हल ि ए उत्पवत्त। ु ं इस विवध से तकभ सगत वचतन विकवसत होने के साथ प्राप्त ज्ञान के स्थायी होने की सवनवश्चतता

Plagiarism detected: **0.06%** https://www.wiringmacth.com/home-wiring-in-hi… id: **12**

होती ु ं ं ह।ै विद्याथी प्रारमर् से अत तक समस्त प्रवियाओ से गज़रता ह ै इस प्रकार ि ह विषयिस्त को समझन े ु ु ं ं में सक्षम हो ि ाता ह ै । व

िद्याथी की रटने की अपक्षे ा स्ि य की ़रागीदारी से तकभ करन े की क्षमता प्रबल ं हो ि ाती ह ै । ़रागीदारी से उसके अन्ि षि करने की शवक्त बढती ह ै ि ो उसमे आत्मविश्वास प्रदान उत्तराखण्ड मक्त विश्वविद्यालय 5 ु CPS -2 करता ह ै । परन्त यह विवध लमबी होन े के कारि अवधक समय लेती ह ै । सामान्य बवि ि ाले बच्चों के ु ु वलए यह इतनी सरल नहीं ह ै अतः उनके वलए इसका कोई उपयोग नहीं ह ै । पररिाशता प्राप्त करना ु कवठन हो ि ाता ह ै । यह विवध ि हाँ उपयोगी वसि होती ह ै ि हा विषय िास्त को छोटे छोटे वहस्सों में ु ं बाटकर विश्लेषि वकया ि ा सकता ह ै और वफर पनः उसे सगवठत कर ज्ञात से अज्ञात को सबोवधत ु ं ं ं वकया ि ा सकता ह ै । 4. सस्लेषण क्रवक्ि (Synthesis Method) : विश्लेषि के विपरीत विवध को सस्लेषि विवध कहते ं ं ह ैं । सस्लेषि से तात्पयभ ह,ै अलग अलग िस्तओ को एकत्र करन े की प्रविया । समस्या के अलग ु ं ं अलग ़रागों को एकवत्रत करते हए ज्ञात से अज्ञात की ओर बढ़ा ि ाता ह।ै पररकलपना करते हए अज्ञात कथनों से ि ोड़कर, वनष्कष भ को प्राप्त वकया ि ाता ह ै । चूँवक यह विवध लमबी नहीं होती अतः इससे समय की बचत होती । गवित ि ए विज्ञान िैसे विषयों के ू ं वलए ये विवध अवधक उपयक्त ह ै । यह विवध अपेक्षाकत अवधक सरल, सवक्षप्त ि ए सचारू ह ै । ृ ु ु ं ं परन्त ि ही दसरी ओरमी बनी रहती, यह विवध विद्यावथयों में रटने की ओर ले ि ाती ह ै और उन्ह ें ऊँ ु ू वनवष्ि य बनाती ह ै । विद्यावथभयों के में में कई शकाए उत्पन्न होती ह ै और उनके सतोषिनक उत्तर ने ं ं ं वमल पाने की वस्थवत में अन्दर आत्मविश्वास की कमी हो ि ाती ह ै । इस विवध में तकभ की कमी बनी रहती ह ै , न ही समपिभ समझ विकवसत हो पाती ह ै न ही विद्यावथभयों मेंं आत्मविश्वास । अतः इस ू विवध को अमनोिैज्ञावनक विवध ़री कहा ि ाता ह ै । वनष्कषभ रूप में यह कहा ि ा सकता ह ै की विश्लेषि ि ए सस्लेषि विवध एक दसरे के प्रवतयोगी नहीं ं ं ु ि रन परक ह ैं । विश्लेषि के माध्यम से रचना को करने का कारि और पद के प्रयोग का चनाि करके ू ु और वफर सस्लेषि विवध से इस समस्या को ि मिि ि ए ससगवठत ढग से हल करना सबसे उवचत ु ं ं ं होगा । ज्ञान के स्रोत : ज्ञान के प्रमख स्रोत वनमन प्रकार से ह ै ु i. इक्रन्ि य अनभव : ज्ञानेवन्ि याँ व्यवक्त को ससार की िस्तओ के सपकभ में लाता ह ै और व्यवक्त के ु ु ं ं ं अन्दर सिेदना उत्पन्न करता ह ै । यही सिेदना िास्त का िज्ञान प्रदान करती ह ै । िस्तओ के ु ु ं ं ं प्रत्यक्षीकरि होने से ही सिेदनाओ को ली ़रााँतीसमझा ि ा सकता ह ै । प्रत्याक्षी करि चेतन ं ं मन में अिधारिा उत्पन्न करता ह ै और हमारा ज्ञान इन अिधारिाओ पर ही वनर्रभ करता ह ै । ं अनिि्रादी, तावकभ क प्रत्यक्षिादी, यथाथभिादी, तथा विज्ञानिादी , इवन्ि य अनि्र को ही मख्य ु ु ु स्रोत मानते ह ै । यह ध्यान देने योनय ह ै वक इन इवन्ि य अनि्र से

Plagiarism detected: **0.1%** https://www.amojeet.com/2021/05/ka-se-gy-tak… id: **13**

प्राप्त ज्ञान की विश्वसनीयता का ु आकलन तो सि्र ह ै वकन्त इसकी िैद्यता ज्ञात करना कवठन कायभ ह ै । ं ii. साक्ष्य :साक्ष्य दसरों के प्राप्त अनि्र ि ए वनररक्षि को आधार मानते हए ज्ञान प्राप्त करना साक्ष्य ु ं ू कहलाता ह ै । स्ि य करने की अपेक्षा,

व्यवक्त दसरों के वनररक्षि से ही तथ्य प्राप्त

करके ज्ञान ं ू अविभत करता ह ै । औरों के अनिर् पर आधाररत इस साक्ष्य का बहत उपयोग होता ह ै । व्यवक्त ु उत्तराखण्ड मक्त विश्वविद्यालय 6 ु CPS -2 यवद वकसी स्थान को नहीं देखा हआ होता ह ै परन्त दसरे के अनिर् और वदए गए िििभन से उस ु ु ु स्थान के अवस्तत्ि पर विश्वास कर लेता ह ै । अतः उसके ज्ञान में िवि होती ह ै । साक्षा के स्रोत से ृ व्यवक्त कई ऐसे तथ्यों के बारे में िानकारी प्रापत कर लेता ह ै । iii. तकत बक्रि :तकभ एक मानवसक प्रविया ह ै और हमारा अवधकाँश तकभ पर आधाररत होता ह ै । तकभ ु द्वारा हम अनिर् स े प्राप्त ज्ञान की सिंदनाओ को सगवठत करके सपिभ ज्ञान का वनमाभि करते ह ैं । ु ू ं ं ं ं अतः यह कहा िा सकता ह ै की तकभ अनिर् पर काय भ करता ह ै और उसे ज्ञान में पररिवतभत करता ु ह।ै iv. अतः प्रज्ञा :वकसी तथ्य को अपन े मन में पा िाना अतः प्रज्ञा ह ै । इस ज्ञान पर हमारा पिभ विश्वास ू ं ं होता ह ै । इसको वकसी तकभ की आिश्यकता नहीं होती । न ही हमें इसकी वनवश्चतता या िैदता ृ पर कोई होता ह ै । अतः द्दवष्ट ज्ञान प्राप्त करन े का ऐसा साधन ह ै विसका उललेख दाशभवनको द्वारा ं वकया गया ह ै । अतः द्दवष्ट प्रवतिाशाली लोगों को अकस्मात ही अनिर् हो िाता ह ै । िैसे ृ ु ं उदाहरि के वलए, महात्मा बि को बोवध िक्ष के नीचे बैठ कर ज्ञान प्राप्त हआ । एक वबिली की ृ ु कौंध की तरह ऐसा ज्ञान मवस्तष्क में अचानक ही उदय हो िाता ह ै । एक अन्य उदाहरि में िब मसा को दस महत्िपिभ ईश्वरीय सत्र एक पिभत पर बैठ कर प्राप्त हए िह िी एक अतः द्दवष्ट ही ू ू ू ं कही िायगे ी । इस्लाम के सावहत्य में इसे ‘इलहाम ‘ कहा िाता ह ै । इसकी चचाभ िारतीय दशभन म ें िी की गयी ह ै । अन्तःद्दवष्ट पर नए तरह का प्रकाश मनोविज्ञानों की खोिों से डाला गया । िमभनी के मनोिैज्ञावनक कोह्लेर ने ये अनिषि वकया वक पश िी वकसी समस्या से िझते हए अकस्मात ृ ु ू उसका हल वनकाल ही लेते ह ैं । पर यह िी तिी सिर् ह ै िब िह समस्या की समपिभता की ू ं िानकारी पा िाता ह ै । ऐसा ही वनष्कष भ बालकों पर िी प्रयोग करके के ज्ञात हआ । अतः अन्तःविवष्ट के साधन की व्याख्या की िा सकती ह ै । इसका उत्तम लार् वशक्षा के क्षेत्र में उपयोग करके िी वमल िाता ह।ै अन्ता द्दवष्ट गिीर वचतन का ही पररिाम ह ै । समस्याओ से सघषभ करके ं ं ं ं , कई असफलता के बाद अन्तःविवष्ट प्राप्त होती ह ै । महान दाशभवनकों एि विद्वानों का यही मत ह।ै ं विद्यावथयों के सिनात्मकता के विकास में सहायक होन े के साथ ही पाठय की योिनाओ के ृ ृ ं बनाने में िी

Quotes detected: **0%** id: **14**

“इकाइ ज्ञान”

का प्रयोग वकया िाता ह ै । ऐसा करने से विद्यावथभयों को विषय की समपिभता अबोध हो िाता ह ै । वशक्षा की द्दवष्ट से दखे ा िाए तो यह िैज्ञावनक व्याख्या अवत ू महत्त्िपिभ ह ै । ू v. सत्ता आक्रिकारिक ज्ञान :यह सिभ विवदत ह ै वक मानि समाि में व्यवक्तगत वर्न्नताए ह ैं । कछ ु ं की प्रवतिा वबरले ही होती ह ै और य े प्रवतिाशाली मानि ही ज्ञान के क्षेत्र में अर्तपिभ योगदान ू ू दते े ह ैं । इनके द्वारा वदया गया ज्ञान प्रवतिा ज्ञान कहलाता ह ै । सामान्य व्यवक्तयों को इन प्रवतिाशाली व्यवक्तयों के विचार एि वसिातों को मान लेना चावहए । वशक्षा में सचावलत समस्त ं ं ं पाठयिम इन विद्वानों िििन के अनिर्ों को मथकर वनकाले गए माखन से पररपिभ होता ह ै । ृ ु ू वशक्षा िम को बनाये रखन े के वलए इन पर विश्वास करना महत्िपिभ हो िाता ह ै । ज्ञान के इस ू स्रोत की िारी कमी यह ह ै वक यवद इन विचारों से इतना अवधक प्राावित हो गए तो यह स्िय ं उत्तराखण्ड मक्त विश्वविद्यालय 7 ु CPS -2 की वचतन की शवक्त को समाप्त कर सकती ह ै । अतः अन्धविश्वासी न बनके , अपने स्िय के ं ं वचतन को बनाये रखने की िी उतनी ही आिश्यकता ह ै नहीं तो ज्ञान का विकास का माग भ ं अिरुि हो िाएगा । अभ्यास प्रश्न 1. आगमनात्मक ज्ञान के मख्य प्रितभक ________ थे । ु 2. ________ज्ञान अनिर् से स्ितत्र होन े की बात कहता ह ै ु ं 3. इवन्िय अनिर् से

Plagiarism detected: **0.07%** https://www.amojeet.com/2021/05/ka-se-gy-tak… id: **15**

प्राप्त ज्ञान की विश्वसनीयता का आकलन तो सिर् ह ै वकन्त इसकी िैद्यता ज्ञात ु ं करना कवठन काय भ ह ै । 4. दसरों के प्राप्त अनिर् एि वनररक्षि को आधार मानते हए ज्ञान प्राप्त करन

ा ______कहलाता ह।ै ु ं ू 5. इस्लाम के सावहत्य में ________ ‘इलहाम ‘ कहा िाता ह।ै 6. ज्ञान के ________ स्रोत का कमी यह ह ै वक यह स्िय की वचतन की शवक्त को समाप्त कर ं ं सकती ह ै । 1.4 समक, सचना एवं ज्ञान म अतं र ं ू ें सभ्यता की शरुआत से ही मानि को सचना की आिश्यकता रही ह ै । इसीवलए िह समय समय पर सचना ु ू ू को एकवत्रत करने ि उन सचनाओ के आधार पर सही ि उवचत वनिभय लेने के नए ि विकवसत तरीके ू ं खोिते रहा ह ै । सचना की आिश्यकता ि महत्ि के कारि ही सबसे पहला आविष्कार कागज़ ि कलम ू का हआ । वफर िैसे िैसे मानि का विकास होता गया िैसे िैसे उसने नए शहर, राज्य ि दशे बनाये और उन दशे ों के बीच व्यापार ि िाविज्य के विवर्न्न प्रकार के समबन्ध बने और आि के िल व्यापार ि िाविज्य ही नहीं बवलक िििन की लगर्ग हर सचना का इन्टरनेट के माध्यम से इन दशे ों के बीच आदान ू प्रदान हो रहा ह ै ।सरल शब्दों में, कवष िावन्त एि औद्योवगक िावन्त के बाद आि हम सचना िावन्त के ृ ू ं यग िा रह े ह ैं और वकसी िी अन्य िावन्त की तलना में सचना िावन्त का विकास बहत ही ज्यादा तेज़ ु ु ू गवत से हआ ह।ै सभ्यता की शरुआत में सचनाओ को वमटटी के बतभनों पर वचत्रात्मक रूप में ि

Plagiarism detected: **0.12%** https://mycoaching.in/r-ke-roop-prakar-matra-s… + 4 resources! id: **16**

शब्दों के ु ू ं रूप में वलखा िाता था । वफर कागज़ ि कलम के विकास के साथ ही विवर्न्न प्रकार की सचनाओ को ू ं कागज़ के रूप में store करके रखा िाने लगा और आि हम इन्ही सचनाओ को computer पर ू ं manage करते ह ैं । विवर्न्न प्रकार के आकड़ों (data) का सकलन (collection) करना और वफर उन ं ं आकड़ों को विवर्न्न प्रकार

से िगीकत (classify) करके उनका विश्लेषि (analysis) करना तथा ृ ं उवचत समय पर उवचत वनिभय लेन े की क्षमता प्राप्त करना, इस परी प्रविया को कप्यटर की र्ाषा में data ू ू ं processing करना कहा िाता ह ै । उत्तराखण्ड मक्त विश्वविद्यालय 8 ु CPS -2 1.4.1 समक ं अवसि तथ्य (facts) अक (figures) ि सावख्यकी (static) का िह समह विस पर प्रविया ू ं ं (processing)करने पर एक अथभपिभ सचना प्राप्त हो, समक कहलाती ह ै ।आकड़े मान या मानों का एक ू ू ं ं समह होता ह,ै विसके आधार पर हम वनिभय लेते ह ैं । इसे एक उदाहरि द्वारा समझा िा सकता ह।ै सख्याए ू ं ं दस ही होती ह ै परन्त यवद इसे व्यिवस्थत िम में रखा िाए तो य े एक सचना generate होती ह ै । इसवलए ु ू ये सख्याए data ह ै ।इसी तरह से अग्रेिी र्ाषा में small ि capital letters के कल 52 characters ही ु ं ं ं होते ह,ैं परन्त यवद इन्ह ें एक सव्यिवस्थत िम में रखा िाए, तो हज़ारों पस्तकें बन िाती ह।ै इसवलए ये ु ु ु characters र्ी data ह ै । िैसे वकसी विद्यालय के विवर्न्न विद्यावथभयों की य े िानकारी रखनी हो तो वकसी कक्षा में कौन कौन से विद्याथी ह ैं उनका serial no. क्या ह ै और ि वकस पते पर रहते हैं, तो ये स र्ी तथ्य अवसि रूप में data ह।ै समक तथ्यों के समह होते ह ैं इन्ह ें ू ं सख्या में व्यक्त वकया िाता ह ै । ं समकों का सकलन गिना द्वारा ं ं अथिा यथोवचत शिता से वकये ु गए अनमान द्वारा होता ह ै । समक ु ं पयाभप्त मात्रा में अनेक कारिों से प्र र्ावित होते ह ैं । समकों का ं सकलन या तो आगिन द्वारा वकया ं िा सकता ह ै या तो अनमान द्वारा । ु यवद वकसी अनसधान का

Plagiarism detected: **0.04%** https://mycoaching.in/hindi-varnamala + 4 resources! id: **17**

क्षेत्र ु ं सीवमत ह ै तो समकों का सकलन ं ं गिना द्वरा वकया िाता ह ै । अनसधान का क्षेत्र

व्यापक होने पर ु ं गिना विवध का प्रयोग करना कवठन हो िाता ह ै । ऐसी दशा में अनमान विवध का सहारा वलया िाता ह ै । समकों का सकलन पिभ वनधाभररत ु ू ं ं उद्दश्े य के वलए व्यिवस्थतढग से वकया िाता ह ै । ं 1.4.2 सचना ू आकड़ों पर processing होने के पश्चात िो अथभपिभ पररिाम वनकलता ह ै उसे सचना कहते ह ैं । सचना ू ू ू ं िह सन्देश ह ै विसमे अथभ ह ै , और वनिभय लेन े के वलए एक आधार ह ै । सचना ितभमान एि एवतहावसक ू ं स्रोतों से

Plagiarism detected: **0.04%** https://www.amojeet.com/2021/05/ka-se-gy-tak… id: **18**

प्राप्त हो सकती ह ै । वकसी समस्या के समाधान के वलए या वफर वकसी अिसर को प्राप्त करने क

े वलए सचना एक महत्त्िपिभ र्वमका वनर्ाती ह ै । ू ू ू उत्तराखण्ड मक्त विश्वविद्यालय 9 ु CPS -2 1.4.3 ज्ञान ज्ञान को इस ससार के िास्तविक गिों और सबधों, प्राकवतक और मानिीय तत्त्िों के बारे म ें विचारों की ृ ु ु ं ं ं अवर्व्यवक्त के रूप में दखे ा िा सकता ह।ै ज्ञान में मनष्य की विविध परक की शवक्तयों को सवचत करती ु ं ह ै तथा विषयीकत होती ह।ै एक सगवठत सचना ही ज्ञान का रूप ले सकती ह ै । ऐसी सचना विसे मानि ृ ु ू ू मवस्तष्क समझते हए वकसी वनिभय को लेने में सक्षम होता है, उसके

Plagiarism detected: **0.16%** https://mycoaching.in/r-ke-roop-prakar-matra-s… + 4 resources! id: **19**

ज्ञान में िवि करता ह ै । ज्ञान सचना ृ ू नहीं ह ै और सचना समक नहीं ह।ै ज्ञान सचना से प्राप्त होता ह,ै विस तरह से सचना समक से प्राप्त होती ू ू ू ं ं ह।ै 1.4.4 समक, सचना एव ज्ञान में अति ू ं ं ं सचना ज्ञान ू समक ं सचना को ससावधत समक के उवचत अध्ययन और अनिर् के ू ु ं ं समक असगवठत और ं ं रूप में माना िा सकता ह ै माध्यम से प्राप्त

वकया गये मानि के अप्रसाररत तथ्यों का विससे वनिभय आसान हो समझ

Plagiarism detected: **0.03%** https://hindimatra.org/ id: **20**

को ज्ञान कहा िा सकता ह।ै प्रवतवनवधत्ि करता ह ै । आमतौर िाता ह।ै सचना को आमतौर ज्ञान

आमतौर पर अवधगम , समस्या ू पर समक प्रकवत में वस्थर ह।ै यह ृ ं पर कछ अथभ और उद्दश्े य की समझ , सोच और उवचत समझ ु घटनाओ के बारे म ें असतत ं वमलते ह ैं पर आधाररत ह ै । ज्ञान को तथ्यों का एक सेट का प्रासवगकता के आधार पर सचना ू ं प्रवतवनवधत्ि कर सकता ह ै समक ं की समझ

Plagiarism detected: **0.04%** https://mycoaching.in/hindi-varnamala + 3 resources! id: **21**

के रूप में दखे सकते ह।ैं सचना के वलए एक शतभ ह।ै ू इसे मानिीय सकलपनात्मक ं प्रवियाओ के एकीकरि के रूप म

ें ं माना िा सकता ह ै िो की साथभक वनष्कषभ वनकालने में मदद करता ह ै अभ्यास प्रश्न 7. ितभमान यग को िवन्त का यग कहा िा सकता ह।ैं ु ु 8. आकड़े __________होता ह,ै विसके आधार पर हम वनिभय लेते ह ैं । ं 9. __________ असगवठत और अप्रसाररत तथ्यों का प्रवतवनवधत्ि करता ह।ै ं 10. ससावधत समक को __________

Plagiarism detected: **0.07%** https://mycoaching.in/r-ke-roop-prakar-matra-s… + 4 resources! id: **22**

के रूप में माना िा सकता ह।ै ं ं 11. ज्ञान सचना नहीं ह ै और सचना समक ह।ै (सत्य /असत्य) ू ू ं 12. ज्ञान सचना से प्राप्त होता ह,ै विस तरह से सचना समक से प्राप्त होती ह

।ै (सत्य /असत्य) ू ू ं उत्तराखण्ड मक्त विश्वविद्यालय 10 ु CPS -2 1.5 साराशं वशक्षा का प्रमख उद्दश्े य ज्ञान प्रदान करना ह।ै त्य का अवस्तत्ि त◌ॄी मान्य ह ै िब उसका ज्ञान हो। सत्य को ु ज्ञान से अलग नहीं वकया िा सकता । इसीवलए तत्ि मीमासा के साथ ज्ञान मीमासा िडी

Plagiarism detected: **0.04%** https://mycoaching.in/r-ke-roop-prakar-matra-s… + 2 resources! id: **23**

होती ह ै । ज्ञान ु ं ं और सत्य एक ही ह ै क्योंवक यह व्यवक्त के मन में होता ह

ै । ू वशक्षा की दृवष्ट से ज्ञान की सवियता एि असवियता को ज्ञात कर लेना अवत आियशक ह ै । वशक्षक द्वारा ं पाठ योिना का स्िरुप बनाना विससे वक िह विद्यावथभयों को ज्ञान का अिभन कराने के वलए उवचत वस्थवतयों का वनमाभि कर सके , सविय ज्ञान की श्रेिी में आता ज्ञान के दो पक्ष होते ह:ै प्रत्यक्

Plagiarism detected: **0.13%** https://www.amojeet.com/2021/05/ka-se-gy-tak… + 4 resources! id: **24**

ष ज्ञान एि ं अप्रत्यक्ष ज्ञान । ऐसा ज्ञान िो हमारी ज्ञानेवन्ियों से प्राप्त होता ह ै , विसे व्यवक्त अपन े िीिन में स्िय प्राप्त ं करता ह,ै प्रत्यक्ष ज्ञान ह ै । िही दसरी ओर िह ज्ञान िो कथनों एि पस्तकों से प्राप्त वकया िाता ह,ै परोक्ष ु ं ू ज्ञान होता ह ै । ज्ञान के चार प्रकार होते ह:ै अनिुिन्य ज्ञान , प्रागनिुि ज्ञान, विश्लेषि ज्ञानएि ु ु ं सश्लेषि ज्ञान

ं ज्ञान के प्रमख स्रोत वनमन प्रकार से ह ैं :- ु 1. इवन्िय अनभव : ज्ञानेवन्ियाँ व्यवक्त को ससार की िस्तओ के सपकभ में लाता ह ै और व्यवक्त के अन्दर ु ु ं ं ं सिेदना उत्पन्न करता ह ै । यही सिेदना िस्त का ििज्ञान प्रदान करती ह ै । ु ं ं 2. साक्ष्य: साक्ष्य दसरों के

Plagiarism detected: **0.12%** https://www.amojeet.com/2021/05/ka-se-gy-tak… id: **25**

प्राप्त अनिुि एि वनररक्षि को आधार मानते हए ज्ञान प्राप्त करना साक्ष्य ु ं ू कहलाता ह ै । स्िय करने की अपक्षे ा, व्यवक्त दसरों के वनररक्षि से ही तथ्य प्राप्त करके ज्ञान अविभत ं ू करता ह ै । 3. तकत बवि : तकभ एक मानवसक प्रविया ह ै और हमारा अवधकाँश तकभ पर आधाररत होता ह ै । तकभ ु द्वारा हम अनिुि से प्राप्त

ज्ञान की सिेदनाओ को सगवठत करके सपिभ ज्ञान का वनमाभि करते ह ैं । ु ू ं ं ं ं अतः यह कहा िा सकता ह ै की तकभ अनिुि पर काय भ करता ह ै और उसे ज्ञान में पररिवतभत करता ह।ै ु 4. अतः प्रज्ञा: वकसी तथ्य को अपन े मन में पा िाना अतः प्रज्ञा ह ै । इस ज्ञान पर हमारा पिभ विश्वास ू ं ं होता ह ै । इसको वकसी तकभ की आिश्यकता नहीं होती । न ही हमें इसकी वनवश्चतता या िैदता पर ु कोई होता ह ै । अतः दृवष्ट ज्ञान प्राप्त करने का ऐसा साधन ह ै विसका उललेख दाशभवनको द्वारा वकया ं गया ह ै । 5. सत्ता आवधकाररक ज्ञान: यह सिभ विवदत ह ै वक मानि समाि में व्यवक्तगत वर्नताए ह ैं । कछ की ु ं प्रवतिा िबरले ही होती ह ै और ये प्रवतिाशाली मानि ही ज्ञान के क्षेत्र में अतिपिभ योगदान दते े ह ैं । ू ू इनके द्वारा वदया गया ज्ञान प्रवतिा ज्ञान कहलाता ह ै । समक असगवठत और अप्रसाररत तथ्यों का प्रवतवनवधत्ि करता ह ै ।आमतौर पर समक प्रकवत म ें वस्थर ह।ै ृ ं ं ं यह घटनाओ के बारे में असतत तथ्यों का एक सेट का प्रवतवनवधत्ि कर सकता ह ै समक सचना के वलए ू ं ं एक शतभ ह।ै सचना को ससावधत समक के रूप में माना िा सकता ह ै विससे वनिभय आसान हो िाता ह।ै ू ं ं सचना को आमतौर पर कछ अथभ और उद्दश्े य वमलते ह ैं उवचत अध्ययन और अनिुि के माध्यम से प्राप्त ू ु ु वकया गये मानि के समझ को ज्ञान कहा िा सकता ह।ै ज्ञान आमतौर पर अवधगम , समस्या की समझ , उत्तराखण्ड मक्त विश्वविद्यालय 11 ु CPS -2 सोच और उवचत समझ पर आधाररत ह।ै ज्ञान को प्रासवगकता के आधार पर सचना की समझ

Plagiarism detected: **0.03%** https://mycoaching.in/r-ke-roop-prakar-matra-s… + 3 resources! id: **26**

के रूप म ें ू ं दखे सकते ह।ैं इसे मानिीय सकलपनात्मक प्रवियाओ के एकीकरि के रूप म

ें माना िा सकता ह ै िो की ं ं साथभक वनष्कषभ वनकालन े में मदद करता ह ै 1.6 शब्दावली 1. अतः प्रज्ञा : वकसी तथ्य को अपन े मन में पा िाना अतः प्रज्ञा ह ै ं ं 2. प्रागनभव ज्ञान: ऐसा ज्ञान िो अनिुि से स्ितत्र हो। ु ु ं 1.6 अभ्यास प्रश्नों के उत्तर 1. िॉन लोक 2. प्रागनिुि ु 3. इवन्िय अनिुि ु 4. साक्ष्य 5. अतः प्रज्ञा ं 6. सत्ता आवधकाररक ज्ञान 7. सचना ू 8. मान या मानों का एक समह ू 9. समक ं 10. सचना ू 11. असत्य 12. सत्य 1.7 संदर् भ ग्रंथ सची ू 1. पाण्डेय रामशल (2007), 'वशक्षा के दाशभवनक वसात , आगरा, अग्रिाल पवब्लके शन । ं 2. ओड़ लमीलाल के . (2009), 'वशक्षा की दाशभवनक पष्ठर्वम',ियपर , रािथान वहदी अकादमी। ृ ू ु ं 3. रूहले ा , सत्यपाल , (2014), 'वशक्षा के दाशभवनक तथा सामाविक आधार , आगरा , अग्रिाल पवब्लके शन 4. Best, J.W., & Kahn, J.V. (1996). Research In Education. Prentice-Hall, New Delhi. उत्तराखण्ड मक्त विश्वविद्यालय 12 ु CPS -2 5. Bhatia, K. & Bhatia, B. (1997). The Philosophical and Sociological Foundations, New Delhi Doaba House. 6. Biswas. A. (1992). Educat Ion in India, Arya Book Depot. New Delh I 7. Solomon Robert C. (2008), 'Introducing Philosophy', Oxford University Press, New York. 8. Masih, Y. (1992). Saamaanya Dharmadarshan Evam Daarshnik Vishleshan, Moti Lal and Banarsi Das, New Delhi India. 9. Weber. O.C. (1990). Basic Philosophies of Education, New York Holt, Rinehart and Winston. 1.8 सहायक/उपयोगी पाठ्यसामग्री 1. वसह ,

एन . पी.(2003), वशक्षा दशभन , नई वदलली , नीलकमल पवब्लके शन ◌ 2. पाठक एड यागी (2005), वशक्षा के वसित , आगरा, विनोद पस्तक मवदर । ◌ु ◌ ◌ ◌ 3. ओड़ लमीलाल के . (2009),

Quotes detected: **0.01%** id: **27**

'वशक्षा की दाशभवनक पष्ठवम',

िियपर , रिाथान वहदी अकादमी। ◌ृ ◌ू ◌ु ◌ 4. रूहले ◌ा , सत्यपाल , (2014), 'वशक्षा के दाशभवनक तथा सामाविक आधार , आगरा , अग्रिाल पवब्लके शन 5. Solomon Robert C. (2008), 'Introducing Philosophy', Oxford University Press, New York. 6. Masih, Y. (1992). Saamaanya Dharmadarshan Evam Daarshnik Vishleshan, Moti Lal and Banarsi Das, New Delhi India. 7. Verma, Ashok Kumar (1991). Tattvamimamsa Evam Gyanmimamsa (Sankshipt Samanya Darshan), Motilal Banarsidass Publisher. 1.9 वनबधात्मक प्रश्न ◌ 1. ज्ञान की धारिा से क्या अवप्राय है? 2. प्रत्यक्ष ज्ञान ए अप्रत्यक्ष ज्ञान से आप क्या समझते ह ◌ैं अपने शब्दों में व्यक्त कीविए। ◌ 3. ज्ञान प्राप्त करन ◌े के कौन से स्रोत ह ◌ैं ? वििेचना कीविए 4. ज्ञान प्राप्त की िैज्ञावनक विवध क्या ह ◌ै और इसकी क्या क्या विशेषताए ह?ैं ◌ 5. ज्ञान का अवस्तत्ि क्या ह ◌ै और इसकी विवर्न्न अिधारिाए क्या ह?ैं ◌ 6. ज्ञान, सचना ए समक में अतर कीविए। ◌ू ◌ ◌ ◌ उत्तराखण्ड मक्त विश्वविद्यालय 13 ◌ु CPS -2 इकाई 2- विविन्न अध्ययन क्षेत्रे ◌ों /अनशु ◌ासनों के उद्भि और ◌ु िितमान समय में कल ज्ञान पवरदश्य में उनका स्थान, ◌ृ विद्यालयी पाठ्यचया में काम से संबंवधत विषयों जैसे बागिानी और आवतथ्य के समािेशन की साथकता त Emergence of Various Disciplines and their Place in the Total Knowledge Scenario in the Present Times, Significance of the Inclusion of Work Related Subjects Namely Horticulture and Hospitality in the School Curriculum 2.1 प्रस्तािना 2.2 उद्दश्◌े य 2.3 विवर्न्न अध्ययन क्षेत्रों /अनशासनों के उद्भि और िितभमान समय में कल ज्ञान ◌ु ◌ु पररदृश्य में उनका स्थान 2.4 विद्यालयी पाठयचयाभ में काम से सबवधत विषयों िैसे बागिानी और आवतथ्य के ◌ ◌ ◌ समािेशन की साथभकता 2.4.1 बागिानी के समािेशन की साथभकता 2.4.2 आवतथ्य के समािेशन की साथभकता 2.5 साराश ◌ 2.6 अभ्यास प्रश्नों के उत्तर 2.7 सदर्भ ग्रन्थ सची ि कछ उपयोगी पस्तकें ◌ू ◌ु ◌ु ◌ 2.8 वनबधात्मक प्रश्न ◌ 2.1 प्रस्तावना अध्ययन क्षेत्रों /अनशासनों के उद्भिन को औपचारिक वशक्षा के उद्भिन के समय से ही माना िाता ह।ै ◌ु शैवक्षक िगत के कल सवचत ज्ञान को विवशष्ट शाखाओ में िगीकरि के कारि कालातर में विषयों की ◌ु ◌ ◌ ◌ उत्तराखण्ड मक्त विश्वविद्यालय 14 ◌ु CPS -2 िविटलता विषय की प्रकवत आवद के आधार पर विवर्न्न अनशासनों का उद्भिन हआ। विसका उदश्◌े य यह ◌ृ ◌ु था की एक विषय के अनिर्ों को उसी विषय उप विषय को तावकभ क िम में व्यिवस्थत करन ◌े से ह।ै ज्यों- ◌ु ज्यों विषयों का ज्ञान राविश बढती िाती ह ◌ै त्यों-त्यों विषय तथा अनशासनों की सख्या ◌ी बढती िाती ह।ै ◌ु ◌ अनशासनों के िगीकरि के करि अवधगम, वशक्षि तथा अनसन्धान में सहिता होती ह।ै ◌ु ◌ु िितभमान इकाई में हम विवर्न्न अध्ययनक्षेत्रों /अनशासनों के उद्भि और िितभमान समय में कल ◌ु ◌ु ज्ञान पररदृश्य में उनका स्थान तथा विद्यालयी पाठयचयाभ म ◌ें काम से सबवधत विषयों िैसे बागिानी और ◌ ◌ ◌ आवतथ्य के समािेशन की साथभकता का विस्तार पिभक अध्ययन करेंगे। ◌ू 2.2 उद्दश्◌े य इस इकाई का अध्ययन करेने के पश्चात आप - 1. विवर्न्न अध्ययन क्षेत्रों के उद्भि का अथभ बता सकें गे। 2. अध्ययन क्षेत्रों के उद्भि का महत्ि अपने शब्दों में व्यक्त कर सकें गे। 3. िितभमान समय में कल ज्ञान पररदृश्य में विवर्न्न विषयों के स्थान की व्याख्या कर सकें गे। ◌ु 4. विद्यालयी पाठयचयाभ में काम से सबवधत विषयों की साथभकता की वििेचना कर सकें गे । ◌ ◌ ◌ 5. बागिानी और आवतथ्य विषय के समािेशन की साथभकता का विश्लेषि कर सकें गे। 2.3 वववर्न्न अध्ययन क्षेत्रे ◌ों /अनुशासन के उद्भव और वतमभ ◌ान समय म कु ल ◌ें ज्ञान पवरदश◌ृ य म उनका स्थान ◌ें अनशासन शब्द की उत्पवत्त लैवटन ◌ाषा के discipulus शब्द से हई ह ◌ै विसका आशय वशष्

Plagiarism detected: **0.07%** https://mycoaching.in/hindi-varnamala + 2 resources! id: **28**

य होता ह,ै ◌ु और disciplina विसका अथभ वशक्षि होता ह ◌ै । शैवक्षक अनशासन सीखन ◌े का एक क्षेत्र अथिा एक ◌ु शाखा ह ◌ै विसका समबन्ध विश्वविद्यालय के एक शैवक्षक वि◌ाग से होता ह ◌ै । व

िसे अनसन्धान तथा ◌ु अधेतािवत की उन्नवत के वलए स्थावपत वकया िाता ह ◌ै ।शैवक्षक अनशासन की स्थापना व्यिसायवकों के ◌ृ ◌ु प्रवशक्षि , शोधकताभओ, विद्वानों तथा विशेषज्ञों के वलए बनाया गया ह ◌ै । ◌ एक शैवक्षक अनशासन अथिा

Plagiarism detected: **0.05%** https://mycoaching.in/hindi-varnamala + 7 resources! id: **29**

क्षेत्र ज्ञान की एक शाखा के रूप में परर◌ावषत वकया िाता ह ◌ै ◌ु विसमे विशेषज्ञता, िनमानस,प्रोिेक्ट,समदाय चनौवतयाँ अध्ययन, पररक्षि और शोध का क्षेत्र होता ह

◌ै िो ◌ु ◌ु घवनष्ठ रूप से वकसी विश्वविद्यालय के वि◌ाग से िड़ा होता ह ◌ै िैसे नामतः िैज्ञावनक अनशासन में ◌ौवतक ◌ु ◌ु विज्ञान, गवित, और रसायन विज्ञान आवद । शैवक्षक सस्थानों ने मल रूप से विद्वानों द्वारा सवित ज्ञान को ◌ृ ◌ू ◌ तथा ज्ञान के विस्तारीकरि को सग्रह/सचीबि करने के वलए अनशासन शब्द का प्रयोग वकया। उन्नीसी ◌ू ◌ु ◌ सताब्दी के दौरान िमभन विश्वविद्यालयों में अनशासनात्मक पद का उद्भि हआ । ◌ु अवधकाश शैक्षविक विषयों की उत्पवत्त की िड़ें उन्नीसी शताब्दी कके विश्वविद्यालयों से िडी ◌ु ◌ ह ◌ैं िब परपरागत पाठयिम अशास्त्रीय ◌ाषा और सावहत्य के साथ परक थे विसमें अथभशास्त्र, ◌ ◌ू ◌ उत्तराखण्ड मक्त विश्वविद्यालय 15 ◌ु CPS -2 रािनीवतशास्त्र, समािशास्त्र, लोक प्रशासन, िैसे सामाविक विज्ञान, प्राकवतक विज्ञान ◌ौवतक विज्ञान, ◌ृ रसायन विज्ञान,िीि विज्ञान तथा तकनीकी विषयों इिवनयररग आवद। ◌ ◌ 20 शताब्दी में वशक्षाशास्त्र तथा मनोविज्ञान िैसे नए शैक्षविक विषयों का प्राद◌ाभि हआ । ◌ु 1970 और 1980 के दशक में नये शैवक्षक विषयों का विष्फोट हआ िैसे िनसचार, मवहला अध्ययन, ◌ िनसीँख्या अध्ययन, पयाभिरि अध्ययन आवद विषयों की उत्त्पवत्त हई। कई विषयों की उत्पवत्त

व्यिसावयक दृवष्टकिो से हई विसमें प्रमखतः नवसिंग, होटल मैनेिमेंट, हावटभकलचर आवद हई ।कई अन्तः विषयों की ु उत्तपवत्त हई विसमे विज्ञान, िि रसायन, कमपटर साइस, बायोटेक्नोलोिी आवद विषयों को व्यापक ू ू ं मान्यता प्राप्त हई । बीसीं शताब्दी तक पहचीँ न े के पश्चात इन पदनामों को धीरे धीरे अन्य दशे ों में अपनाया गया ु और सिभ स्ि िकत विषय के रूप में स्थावपत हो गए । हालावक वर्न्न वर्न्न दशे ों में इन्ह ें एक ही नाम से ृ ं िाना िाए ये िरूरी नहीं होता ह।ै बीसी शताब्दी में शावमल विषयों में विज्ञान में ौवतक विज्ञान, रसायन विज्ञान, िि विज्ञान, विज्ञान, खगोल विज्ञान तथा सामाविक विज्ञानों में अथभशास्त्र, रािनीवतशास्त्र, ू समािशास्त्र, और मनोविज्ञान थे। बीसीं शताब्दी से पिभ वबवर्न्न अनशासन प्रायः व्यापक और सामान्य ू ु थी िो उस समय विज्ञान में कम रूवच के करि थी।शैक्षविक व्यिस्था के बाहर एक व्यिसाय के रूप म ें विज्ञान के वलए कछ अिसर मौद थे। उच्च वशक्षा ने िज्ञावनक िाच के वलए सस्थागत सरचना प्रदान की ु ू ं ं ं साथ ही साथ आवथभक सहायता ी प्रदान की विसके फलस्िरूप िज्ञावनक ज्ञान की मात्र में बहत तीव्र िवि हई और अध्ययनकताभओ द्वारा िज्ञावनक गवतविवधयों के सक्षम ागों पर ध्यान के वन्ित वकया िाने ृ ू ं लगा अतः इस करि िज्ञावनक विशेषज्ञता का दौर चला ।विस प्रकार इन विशेषज्ञताओ का विकास हआ, ं विश्वविद्यालयों में आधवनक िज्ञावनक विषयों में ी सधार हआ । अततः वशक्षा की पहचान वकये गए ु ु ं विषयों विशेष विषयों तथा विवशष्ट रुवचओ के कें ि बन गए। ं एथोनी क्रबग्लन के अनसा

Quotes detected: **0.05%** id: **30**

“एक शैवक्षक अनशासन अथिा अध्ययन का क्षेत्र ज्ञान की शाखा के रूप में ु ु ं ह।ै विसके विचार और शोध उच्च वशक्षा का ाग होता ह।ै ”

ड़ेंज़, जेड. के अनसा शैवक्षक अनशासन सीखने का एक क्षेत्र ह ै िो विश्वविद्यालय के वकसी शैवक्षक ु ु वि ाग से समबवधत होता ह ै । इसकी स्थापना शोध तथा अध्ययन की उन्नवत की िाती ह ै । यह ं शोधकताभओ, वशक्षकों तथा विशेषज्ञों के व्यािसावयक प्रवशक्षि के वलए बनाया िाता है। ं अतः एक शैवक्षक अनशासन ज्ञान सीखने की शाखा के रूप में अथिा एक शैवक्षक अन्िषि के रूप म ें ु िाना िाता ह ै िो विद्यावथभयों के वलए विशेष रूप से स्नातक तथा परास्नातक स्तर पर अध्ययन की सरचना अथिा कायभिम को तय करता ह ै अध्ययन

Plagiarism detected: **0.04%** https://mycoaching.in/hindi-varnamala + 5 resources! id: **31**

क्षेत्र से तात्पयभ वकसी विषय के अध्ययन क्षेत्र से ह ै ं और इसके दो पक्ष होते ह ैं - स

िावन्तक पक्ष और व्यािहाररक पक्ष। सैिावन्तक पक्ष में विषय के तथ्यों, वसिातों एि वनयमों का अध्ययन और विश्लेषि वकया िाता ह ै िबवक व्यािहाररक पक्ष मलतः विषय की ू ं ं वशक्षि विवधयों का प्रयोग, अनसन्धान क्षेत्र आवद का अध्ययन िीिा व्यिहार को कें ि में रखकर वकया ु िाता ह।ै विषयों के अनशासन को आक्सफोडभ इवनलश वडक्शनरी के अनसार शैवक्षक अनदशे नों के ु ु ु ं उत्तराखण्ड मक्त विश्वविद्यालय 16 ु CPS -2 अवधगम अनिों की एक शाखा के रूप िाना िाता ह,ै विसमें एक शैवक्षक अनशासन की विवशष्ट ु ु िवटल प्रवशक्षि का रूप दशाभता ह ै । आथभर डक्सभ न े अनशासन को शैवक्षक पररप्रेक्ष्य में बताते हए यह कहते ह ैं वक यह एक विवशष्ट िगभ के ु अध्ययन के अभ्यास से समबवधत ह,ै इसकी शोध प्राविवध, विषयों के बारे में सत्य की खोि करता है, ं इसके मौवलक वसिात, तथ्य एि शब्दािली होती ह ै तथा यह बताता ह ै की विस विषय िस्त को अपना ु ं ं रह ें ह ै उसका अभ्यास करना ह।ै मोती क्रनस्सनी (1997) के अनसा एक अनशासन को अध्ययन की सविधा

Plagiarism detected: **0.06%** https://mycoaching.in/hindi-varnamala + 3 resources! id: **32**

के रूप में परर ावषत वकया ु ु ु ं िा सकता ह ै िो तलनात्मक रूप से अपने ही तरह के विषय विशेषज्ञों के समदाय के पास उपलब्ध ज्ञान ु ु के रूप में िान

ा िाता ह।ै अकादवमक अनशासन की विशेषताए ु ं i. ज्ञान का विशेषीकत क्षेत्र ृ ii. स्िय की विवशष्ट अिधारियें एि वसिात ं ं ं iii. विवशष्ट शब्दािली iv. शोध के विवशष्ट उदेश्य v. वनवश्चत शोध-प्रविवध vi. वनवश्चत विषय-िस्त पर व्यािसावयक सगठनों से चचाभ ु ं सामाविक विज्ञान विषय के बारे में एक आमधारिा बन चकी ह ै वक इसमें नदी, िगल, पहाड़, रािा- ु ं रावनयों की कहावनयाँ, सत्ता और उसमें लोगों की ागीदारी और रोिी-रोटी यानी अथभव्यिस्था की बातें बताई िाती ह ैं और इन बातों को पढ़ने से उन्ह ें कछ नहीं वमलन े िाला। दवै नक िीिन िीने के वलए ु तकनीकी कशलता होनी चावहए और इसके वलए विज्ञान और गवित विषयों की पढ़ाई अवधक िरूरी ह।ै ु ौवतकिादी िीिन िीना एकमात्र लक्ष्य हो गया ह ै तो सामाविक सस्कारों की बात, अच्छे नागररक की ं अिधारिा, नैवतकता आवद चीिें गैि लगने लगी ह ैं । विकास की अधी दौड़ म ें शावमल होकर सामाविक ं और नैवतक मलयों को तच्छ समझा िाने लगा ह ै । परन्त सच्चाई यह ह ै वक मानि में नैवतक मलयों का ू ु ु ू विकास करके ही एक अच्छे नागररक का वनमाभि वकया िा सकता ह ै । वशक्षा के विवर्न्न अध्ययन क्षेत्रों की उत्पवत्त के कई कारक होते ह ैं विनमें से वनमनवलवखत प्रमख कारक ु ह:ै - i. तकनीकी उन्नवत ii. इवतहास ज्ञान iii. स्िास्थ्य सबधी ज्ञान ं ं iv. गवितीय क्षमताओ का ज्ञान ं v. सभ्यता और सस्कवत के ज्ञान से अिगत कराना ृ ं उत्तराखण्ड मक्त विश्वविद्यालय 17 ु CPS -2 vi. सस्कवत के द्वारा नैवतक और आध्यावत्मक वशक्षा को बढ़ािा ृ ं vii. सस्कवत का सरक्षि ृ ं ं viii. नारी सशवक्तकरि ix. राष्ट्रीय आवथभक िवि ृ x. अतराभष्ट्रीय व्यापार ं xi. ाषायी विवर्न्नता को समझना xii. वमवडया की उत्त्पवत्त xiii. औद्योगीकरि में रोिगार के अिसर xiv. फै शन xv. तलनात्मक वशक्

Plagiarism detected: **0.03%** https://sabsastaa.com/english-barakhadi/ id: **33**

षा का ज्ञान ु xvi. समि के उत्थान के वलए सरकारी नीवतयों के वकयाभन्ियन का ज्ञान

स्री विषयों का अपना एक स्ितत्र

Plagiarism detected: **0.03%** https://mycoaching.in/hindi-varnamala + 5 resources! id: **34**

क्षेत्र, स्ितत्र पाठयिम और वशक्षि विवध तथा अनसन्धान क्षेत्र होता ृ ु ं ं ह

।ै वकसी ्री विषय को अनशावसत बनाने के वलए उसमें वनमनवलवखत विशेषताएँ होनी चावहए ु i. प्रसग ं ii. विषय िस्त ु iii. पाठयिम ृ iv. प्रकरि v. मद्द े ु vi. मल प्रश्न ू vii. सकाय ं viii. अनसन्धान कें ि ु ix. शोध पवस्तका ु x. उत्प्रेरित्मक उद्दश्े य सामाक्रजक अध्ययन सामाविक अध्ययन से अवर्प्राय ऐसे विषय से ह ै ि मानिीय सबधों की िानकारी प्रदान करता ह।ै ं ं सामाविक अध्ययन का िन्म अमेररका में हआ। इसमें र्गोल, इवतहास, रािनीवत शास्त्र तथा अथभशास्त्र ू का समािेश था। 1911 में कमेटी ऑफ टेन ने इसे समाि शास्त्र से िोड़ कर सामाविक अध्ययन बना वदया। सामाविक अध्ययन की धारिा को स्पष्ट करने के वलए कई विद्वानों ने इसको अलग अलग परर्रावषत वकया ह:ै जे० एफ० फ़ोस्टि के अनसाि " सामाविक अध्ययन समाि का अध्ययन ह ै और इसका प्रमख उद्दश्े य ु ु विद्यावथभयों को उस ससार को समझने में सहायता प्रदान करना ह ै विसमें उन्हीं रहना ह ै तावक ि उसके ं उत्तराखण्ड मक्त विश्वविद्यालय 18 ु CPS -2 उत्तरदायी सदस्य बन सकें । इसका ध्येय विेचनात्मक वचतन और सामाविक पररितभन की तत्परता को ं प्रोत्सावहत करना ह,ै सामान्य कलयाि के वलए कायभ करने की आदत को विकवसत करना, दसरी ू सस्कवतयों के प्रवत सराहना तथा यह दृवस्टकोि रखना की स्री मानि तथा राष्ट्र एक दसरे पर आवश्रत ह ैं ृ ं ु "। शैक्रक्षक अनसािन क्रवश्वकोष के अनसाि " सामाविक अध्ययन िह अध्ययन ह ै ि हर मानि के रहन ु ु ं सहन के ढग, उसकी आिश्यकताओ तथा उन्ह ें परा करन े से समबवधत विवर्न्न वियाकलापों और उसके ू ं ं ं द्वारा विकवसत सस्थाओ के बारे में ज्ञान प्रदान करता ह"ै । ं ं सामाक्रजक अध्ययन क्रशक्षण के उद्देश्य :- a. उत्तम नागररकता के गिों का विकास ु b. सामाविकता के गिों का विकास ु c. बौविक और मानवसक शवक्तयों का विकास d. नैवतकता और सदाचरि के गिों का विकास ु e. व्यवक्ति के सिांगीि विकास में सहायक f. सामाविक पररितभन लान े में सहायक ितभमान समय में कल ज्ञान पररदृश्य में सामाविक अध्ययन का स्थान ु आि सामाविक विज्ञान विषय दशे र के स्कलों में वकसी न वकसी रूप में पढ़ाए िा रह े ह।ैं पहले आम ू तौर पर ऐसी वस्थवत नहीं थी। आिादी के पहले समािशास्त्र, रािनीवत विज्ञान और यहाँ तक वक अथभशास्त्र की वशक्षा ्री मख्य रूप से विश्वविद्यालयों ि महाविद्यालयों तक सीवमत थी। आिादी के बाद ु सामाविक विज्ञान के विषयों की वशक्षा में वनरन्तर विस्तार हआ तथा िलदी ही इन्ह ें स्कलों में पढ़ाए िाने ू की माँग बढ़ने लगी। अथभव्यिस्था, रािनीवत और समाि वकस तरह काम करते हैं, इसके बारे में सामान्य िानकारी होने से विद्यावथभयों को उनकी आगे की विन्दगी में यह समझन े में मदद वमलेगी वक सािभिवनक िीिन में नीवतयों की क्या र्वमका होती ह।ै यह उन्ह ें इस बारे में एक वशवक्षत दृवष्टकोि बनाने का आधार ू प्रदान कर सकता ह ै वक कछ खास नीवतयाँ ही क्यों अपनाई िाती ह ैं और अन्य क्यों नहीं। साथ ही अपनाई ु िाने िाली नीवतयों में से कछ ही क्यों सफल होती ह ैं और बाकी क्यों नहीं। ु सामाविक विज्ञान का ज्यादा महत्िपिभ योगदान नीवत-वनधाभरि के वलए प्रवशवक्षत करने में नहीं ह ै बवलक ू वशवक्षत ि समझदार नागररक तैयार करने में ह।ै लोकतत्र के अच्छे सचालन के वलए वशवक्षत नागररक िगभ ं ं का होना अपररहाय भ ह।ै कोई व्यवक्त अच्छे नागररक होने के गि अनायास हि में से नहीं पकड़ता, उन्ह ें ु हावसल करने और बढ़ािा देने के वलए एक खास प्रकार की वशक्षा की िरूरत होती ह।ै एक अच्छा नागररक होने के वलए वसफभ ्रौवतक ि िैविक वियाकलापों का िानकार होना ही काफी नहीं होता, अच्छे नागररक को उस सामाविक ससार के बारे में ्री समझ होना िरूरी ह ै विसका िह वहस्सा ह।ै सामाविक ं विज्ञान मानि समाि का अध्ययन करने िाली शैवक्षक विधा ह।ै यह प्राकवतक विज्ञानों के अवतररक्त अन्य ृ उत्तराखण्ड मक्त विश्वविद्यालय 19 ु CPS -2 विषयों का एक समह ह।ै इन विषयों की अपनी अलग-अलग सीमाएँ ह ैं। परन्त हमें इन सीमाओ को ू ु ं खोलना ह।ै िब तक हम स्री विषयों के आपसी समबन्धों और िड़ाि को बच्चों को अच्छे से नहीं ु समझाएँगे तब तक सामाविक विज्ञान के वशक्षि का उद्दश्े य परा नहीं हो सकता। अथभव्यिस्था, रािनीवत ू और समाि वकस तरह काम करते ह,ैं इसके बारे में सामान्य िानकारी होने से विद्यावथभयों को उनकी आगे की विन्दगी में यह समझन े में मदद वमलेगी वक सािभिवनक िीिन में नीवतयों की क्या र्वमका होती ह।ै िब ू हम इवतहास पढ़ाते ह ैं तो हमें बच्चों को यह समझाना होगा वक इवतहास के िल घटनाओ और वतवथयों का ं विषय नहीं ह ै बवलक इसकी सहायता से ससार को और ्री सन्दर बनाया िा सकता ह।ै सामाविक विज्ञान ु ं का सबसे महत्िपिभ कायभ वशवक्षत ि समझदार नागररक तैयार करना ह।ै लोकतत्र के अच्छे सचालन के ू ं ं वलए वशवक्षत नागररक िगभ का होना आिश्यक ह।ै अच्छे नागररक के गि हावसल करन े और बढ़ािा दने े ु के वलए एक खास प्रकार की वशक्षा की िरूरत होती ह।ै एक अच्छा नागररक बनने के वलए उसे उस सामाविक ससार

Plagiarism detected: **0.05%** https://www.hindihelpzone.com/2022/09/hindi-v… id: **35**

के बारे में ्री समझना होगा विसका िह वहस्सा ह।ै इसके वलए यह िरूरी ह ै वक उन्ह ें ं सामाविक ि प्राकवतक दवनया के बारे म

ें स्पष्टता से और व्यिवस्थत ढग से सोचन े के वलये प्रोत्सावहत ृ ं ु वकया िाए। इसी कारि से सामाविक अध्ययन का कल ज्ञान पररदृश्य में एक महत्िपिभ स्थान ह।ै ु ू प्राकक्रतक क्रवज्ञान ृ विज्ञान मानि के द्वारा वकया गया एक प्रयास ह।ै प्रागैवतहावसक काल से मानि न े अपने कलयाि के वलए प्रकवत को अपने िश में करन े की कोवशश की। प्रकवत को समझने और उस समझ का प्रकवत को वनयवत्रत ृ ृ ृ ं करने के ले वलए इस्तेमाल करन े की प्रविया ही वि

Plagiarism detected: **0.03%** https://www.amojeet.com/2021/05/ka-se-gy-tak… id: **36**

ज्ञान ह ै। प्राकवतक विज्ञान प्रकवत और ◌ौवतक दवनया ृ ृ ु का व्यिवस्थत ज्ञान ह

◌ोता ह,ै या व़िर इसका अध्ययन करने िाली इसकी कोई शाखा। असल में विज्ञान शब्द का प्रयोग लगर्ग हमेशा प्रकवतक विज्ञानों के वलये ही वकया िाता ह।ै प्राकवतक विज्ञान आनर्विक ृ ृ ु विज्ञान की िह शाखा ह ै प्राकवतक िगत का प्रवतवनवधत्ि करती ह ै तथा प्रस◌ाव्य मात्रात्मक वनयमों ृ ं अथा िैज्ञावनक प्रवतमानों को बनाने और उनकी शिता का परीक्षि करती ह।ै ु मानि स्ि◌ाि◌ाि से विज्ञास होता ह ै और िो कछ ◌ी उसके सामाविक और प्राकवतक क्षेत्र में घवटत होती ृ ु ु ह ै उसके बारे में िानने की विज्ञासा सहि और स्ि◌ाि◌ाविक ह।ै इन्हीं प्रश्नों के उत्तर खोिने में लगे रहने के कायभ को विज्ञान कहा िाता ह।ै विज्ञान मानि की विवर्न्न कवठनाइयों एि समस्याओ के वनिारि हते ु ं ं ं सशक्त साधन ह।ै प्राकवतक विज्ञान को मख्य रूप से तीन शाखाओ में वि◌ावित वकया िा सकता ह ै :- ृ ु ं a. प्राकवतक विज्ञान- इसमें प्राकवतक घटनाओ का अध्ययन वकया िाता ह।ै ृ ृ ं b. औपचाररक विज्ञान - विसमें घटनाए तथ्यात्मक ि विवधित विज्ञान से विपरीत चलती ह।ै ं c. सामाविक विज्ञान - विसमें मानि व्यिहार ि समाि का अध्ययन वकया िाता ह।ै ृ प्राकवतक विज्ञान की दो शाखाए होती ह ै - ◌ौवतक विज्ञान और िैि विज्ञान। ◌ौवतक विज्ञान के अन्तगभत ृ ं ◌ौवतक विज्ञान, रसायनशास्त्र, पथ्िी विज्ञान, पररवस्थवत विज्ञान, समि विज्ञान, र्विज्ञान आवद शाखाए ृ ु ू ं उत्तराखण्ड मक्त विश्वविद्यालय 20 ु CPS -2 आती ह।ैं िैि विज्ञान के अन्तगभत िैि विज्ञान, प्रािी विज्ञान, मानि िैिीन विज्ञान, िनस्पवत विज्ञान आवद शाखाए आती ह।ैं विज्ञान की अन्य शाखाए िो व्यिहार पैर आधाररत ह ै िैसे व्यिहाररक विज्ञान, ं ं मेवडकल विज्ञान इत्यावद। प्राकवतक विज्ञान की वनमनवलवखत विशेषताए ंहैं :- ृ a. विज्ञान क्या था या क्या होना चावहए इसपर विचार नहीं करती बवलक क्या है, क्या हो रहा ह ै और इसका क्या पररिाम होगा इसपर विचार करती ह।ै b. विज्ञान के अध्ययन की एक विशेष पिवत होती ह ै विसे िैज्ञावनक विधी का नाम वदया िाता ह।ै c. विज्ञान के अध्ययन के वलए स◌ी साधन, उपकरि और माध्यम पिभतया िैज्ञावनक होते ह।ैं ू d. विज्ञान िस्तओ और घटनाओ का पिभ विश्लेषि करने में सक्षम होती ह।ै ु ू ं ं e. विज्ञान में ज्ञान को सगवठत करने िाली विवध अन्य विषयों की विवध से वर्न्न होती ह।ै ं क्रवज्ञान क्रवषय का उद्देश्य ऒौ लक्ष्य विज्ञान विषय की वशक्षा का वनमनवलवखत उद्दश्े य ह ै :- a. िैज्ञावनक िानकारी बढ़ाना b. व्यिहाररक उद्दश्े य c. िैज्ञावनक दृवष्टकोि का विकास d. सास्कवतक उद्दश्े य ृ ं e. िीविकोपािभन सबधी उद्देश्य ं ं f. मनोिैज्ञावनक उद्दश्े य g. अन्य विषयों के अध्ययन में आिश्यक h. प्रयोग सबधी कशलता उत्पन्न करने में सहायक ु ं ं ितभमान समय में कल ज्ञान पररदृश्य में प्राकक्रतक क्रवज्ञान का स्थान ृ ु

Plagiarism detected: **0.04%** https://sanskartutorials.in/hindi-alphabet-hindi-a… id: **37**

विज्ञान ने मानि की प्रगवत में अत्यत महत्िपिभ र्वमका वन◌ाई ह।ै आि विज्ञान मानि िीिन के प्रत्यके ू ू ं क्षेत्र

में सहयोग कर रहा ह ै वफर चाह े िो सचार, यातायात, वचवकत्सा, वशक्षा, कवष, उद्योग, मनोरिन, ृ ं ं विद्यत, परमाि शवक्त, ि◌ू वनमाभि, िास्त कला। इसवलए प्राकवतक

Plagiarism detected: **0.19%** https://sanskartutorials.in/hindi-alphabet-hindi-a… id: **38**

विज्ञान का ज्ञान के क्षेत्र में अत्यत ही ृ ृ ु ु ु ं महत्िपिभ स्थान ह।ै ू भाषाक्रवज्ञान ◌ाषाविज्ञान ◌ाषा के अध्ययन की िह शाखा ह ै विसमें ◌ाषा की उत्पवत्त, स्िरूप, विकास आवद का िैज्ञावनक एि विश्लेषिात्मक अध्ययन वकया िाता ह।ै ◌ाषाविज्ञान के अध्येता '◌ाषाविज्ञानी' कहलाते ं ह।ैं ◌ाषाविज्ञान, व्याकरि से वर्न्न ह।ै व्याकरि में वकसी ◌ाषा का कायाभत्मक अध्ययन वकया िाता ह ै उत्तराखण्ड मक्त विश्वविद्यालय 21 ु CPS -2 िबवक ◌ाषाविज्ञानी इसके आगे िाकर ◌ाषा का अत्यन्त व्यापक अध्ययन करता ह।ै अध्ययन के अनेक विषयों में से आिकल ◌ाषा-विज्ञान को विशेष महत्ि वदया िा रहा ह।ै आधवनक विषय के रूप में ◌ाषा-विज्ञान

का सत्रपात यरोप में सन 1786 ई0 में सर विवलयम िोन्स नामक ु ू ू विद्वान द्वारा वकया गया माना िाता ह।ै सस्कत ◌ाषा के अध्ययन के प्रसग में सर विवलयम िोन्स न े ही ृ ं ं सिभप्रथम सस्कत, ग्रीक और लैवटन ◌ाषा का तलनात्मक अध्ययन करते हुए इस सि◌ािना को व्यक्त वकया ृ ु ं ं था वक सि◌ितः इन तीनों ◌ाषाओ के मल में कोई एक ◌ाषा रूप ही आधार बना हआ ह।ै अतः इन तीनों ू ं ं ◌ाषाओ (सस्कत, ग्रीक और लैवटन) के बीच एक सक्ष्म सबध सत्र अिश्य विद्यमान ह।ै ◌ाषाओ का

Plagiarism detected: **0.06%** https://sanskartutorials.in/hindi-alphabet-hindi-a… + 2 resources! id: **39**

इस ृ ू ू ं ं ं ं ं प्रकार का तलनात्मक अध्ययन ही आधवनक ◌ाषा-विज्ञान के क्षेत्र का पहला कदम बना। ु ु डॉ॰ श्यामसन्दर दास ने अपन े ग्रन्थ ◌ाषा रहस्य में वलखा ह-ै

Quotes detected: **0.03%** id: **40**

"◌ाषा-विज्ञान ◌ाषा की उत्पवत्त, उसकी ु बनािट, उसके विकास तथा उसके ह्रास की िैज्ञावनक व्याख्या करता ह।ै "

मगल दिे शास्त्री (तलनात्मक ु ं ◌ाषाशास्त्र) के शब्दों में- "◌ाषा-विज्ञान उस विज्ञान को कहते ह ैं विसमें (क) सामान्य रूप से मानिी ◌ाषा (ख) वकसी विशेष ◌ाषा की रचना और इवतहास का और अन्ततः (ग) ◌ाषाओ या प्रादवे शक ◌ाषाओ के ं ं िगों की

पारस्पररक समानताओ और विशेषताओ का तलनात्मक विचार वकया िाता ह।ै " डॉ॰ ◌ोलानाथ ◌ु ◌ं ◌ं वतिारी के '◌ाषा-विज्ञान' ग्रन्थ में यह परर◌ाषा इस प्रकार दी गई है-

Quotes detected: **0.08%** id: **41**

"विस विज्ञान के अन्तगभत ििभनात्मक, ऐवतहावसक और तलनात्मक अध्ययन के सहारे ◌ाषा की उत्पवत्त, गठन, प्रकवत एि विकास ◌ृ ◌ु ◌ं आवद की समयक व्याख्या करते हए, इन स◌ी के विषय में वसान्तों का वनधाभरि हो, उसे ◌ाषा विज्ञान कहते ह।ैं "

ितभमान समय में कल ज्ञान पररदृश्य में ◌ाषा-विज्ञान का स्थान ◌ु ◌ाषा-विज्ञान के अध्ययन से हमें अनके लार् होते हैं, िैसे- a. अपनी वचर-पररवचत ◌ाषा के विषय में विज्ञासा की तवप्त या शकाओ का वनमभलन। ◌ृ ◌ू ◌ं ◌ं b. ऐवतहावसक तथा प्रागैवतहावसक सस्कवत का पररचय। ◌ृ ◌ं c. वकसी िावत या समपिभ मानिता के मानवसक विकास का पररचय। ◌ू d. प्राचीन सावहत्य का अथभ, उच्चारि एि प्रयोग समबन्धी अनेक समस्याओ का समाधान। ◌ं ◌ं e. विश्व के वलए एक ◌ाषा का विकास। f. विदशे ◌ी ◌ाषाओ को सीखने में सहायता। ◌ं g. अनिाद करने िाली तथा स्िय टाइप करने िाली एि इसी प्रकार की मशीनों के विकास और ◌ु ◌ं ◌ं वनमाभि में सहायता। h. ◌ाषा, वलवप आवद में सरलता, शिता आवद की दृवष्ट से पररितभन-पररिभन में सहायता। ◌ु i. इन स◌ी ला◌ों की दृवष्ट से आि के यग में ◌ाषा-विज्ञान को एक अत्यन्त उपयोगी विषय माना ◌ु िा रहा ह ै और उसके अध्ययन के क्षेत्र में वनत्य नीन विकास हो रहा ह।ै उत्तराखण्ड मक्त विश्वविद्यालय 22 ◌ु CPS -2 अभ्यास प्रश्न 1. अनशासन शब्द की उत्पवत्त लैवटन ◌ाषा के __________ शब्द से हई ह ै ◌ु 2. अकादवमक अनशासन की क्या विशेषताए ह ै ? ◌ु ◌ं 3. आधवनक विषय के रूप में ◌ाषा-विज्ञान का सत्रपात यरोप में सन 1786 ई0 ◌ु ◌ू ◌ू में__________नामक विद्वान द्वारा वकया गया माना िाता ह।ै 4. प्राकवतक विज्ञान की दो शाखाए __________और __________ह ै । ◌ृ ◌ं 5. वकसी ◌ी विषय को अनशावसत बनाने के वलए उसमें क्या विशेषताएँ होनी चावहए ? ◌ु 2.4 ववद्यालयी पाठ्यचया म काम से संबवधत ववषयों जैसे बागवानी और ें ◌ं आवतथ्य के समावेशन की साथभकता समाि के वकसी ◌ी घटक के विकास एि उन्नवत के वलए वशक्षा एक महत्िपिभ साधन ह।ै वशक्षा हमारे ◌ू ◌ं िीिन की सव्यिस्था के काम आती ह।ै वशक्षा के अिा में कछ ◌ी अथभपिभ हावसल नहीं वकया िा ◌ु ◌ु ◌ू ◌ं सकता।वशक्षा के माध्यम से ही िीिन के स◌ी प्राप्तव्य प्राप्त वकय े िा सकते ह ै । यह लोगों के िीिन स्तर में सधार तथा उनके िीिन की गिित्ता को बढ़ाने हते क्षमताओ का वनमाभि कर उनके वलए बेहतर रोिगार ◌ु ◌ु ◌ु ◌ं के अिसर उपलब्ध कराने के मामले में महत्िपिभ र्वमका वन◌ाता ह।ै इस ◌ौवतक ससार में सफलतापिभक ◌ू ◌ू ◌ू ◌ं िीिन यापन करने हते समाि की प्रत्येक इकाई को आवथभक रूप से आत्म वनर्भर बनाने में ◌ी महती ◌ु र्वमका वन◌ाती ह ै । िीविकोपािीन का एक महत्िपिभ पक्ष ह।ै अपनी योनयता के अनसार एक विशेष ◌ू ◌ू ◌ु व्यिसाय का चनाि िो हम अपने र्विष्य के वलय े करते ह ैं विद्याथी विस िवत्त का चनाि करते ह ैं िही ◌ृ ◌ु ◌ु आपके र्विष्य की आधरवशला ह।ै पिभ में , लोग पहले अपनी वशक्षा परी करते थे, वफर अपनी िीविका ◌ू ◌ू का वनिभय करते थे। लेवकन आि की पीढ़ी अपनी विद्यालयी वशक्षा परी करने से पहले ही अपने र्विष्य ◌ू वनमाभि की वदशा में कदम बढ़ा लेती ह।ै िीविका का चनाि वकसी व्यवक्त की िीिन शैली को अन्य वकसी ◌ु घटना की तलना में सबसे अवधक प्र◌ावित करता ह।ै काय भ हमारे िीिन के कई रूपों को प्र◌ावित करते ◌ु ह।ैं हमारे िीिन में मलयों, दृवष्टकोि एि हमारी प्रिवत्तयों को िीिन की ओर प्र◌ावित करता ह।ै इस ◌ीषि ◌ृ ◌ू ◌ं प्रवतयोवगता की दवनया में प्रारमर् में ही िीविका समबन्धी सही चनाि अत्यवधक महत्िपिभ ह।ै इसीवलए ◌ु ◌ू ◌ु एक ऐसी प्रविया की आिश्यकता है, िो वकसी व्यवक्त को विविन्न िीिन िवत्तयों से उसके वशक्षा काल ◌ृ में ही अिगत कराए। यवद वशक्षा ग्रहि करने के समय ही उसकी पाठयचयाभ में विविध व्यािसावयक विषयों ◌् का समािेश ही िाए तब विद्याथीयों को वशक्षा ग्रहि करते समय ही अपनी रुवचयों क्षमताओ और ◌ं मनोिवतयों का उसे और उसकी वशक्षा से िड़े स◌ी वहतकारको को सहायता वमल िाएगी ।तथा ◌ृ ◌ु बेरोिगारों की सख्या में ◌ी कमी आएगी तथा इस पहल से उसके अथोपािभन की क्षमता बढ़ती ह।ै ◌ं पाठयचयाभ में काम से समबवधत विषयों के समािेशन से विविन्न वशलप एि कला–कौशल का अभ्यास ◌् ◌ं ◌ं उत्तराखण्ड मक्त विश्वविद्यालय 23 ◌ु CPS -2 ◌ी

Plagiarism detected: **0.03%** https://mycoaching.in/hindi-varnamala id: **42**

हो िाता ह ै और व्यसाय के अिसरों से ◌ी िो प्रारमर् से ही पररवचत हो िाता ह।ैं इन

आधारों पर मनष्य नौकरी अथिा स्ििालमबी उपािभन में अवधक सफल होता ह।ै ऐसे–ऐसे अनेक ला◌ों को ध्यान में ◌ु रखते हए वशक्षा में विविध व्यािसावयक कायभिमों का समािेश वकया गया । महात्मा गाँधी के वशक्षा ऐसी होनी चावहए िो की रोिगार परक हो । उनका मानना था वक ◌ारत में बच्चों को 3H की वशक्षा अथाभत ◌् head, hand, heart की वशक्षा दी िाए । गाधी के अनसार वशक्षा ऐसी हो िो आवथभक ◌ु ◌ं आिश्यकताओ की पवतभ कर सके बालक आत्मवनर्भ बन सके तथा बेरोिगारी से मक्त हो।चने हए वशलप ◌ू ◌ु ◌ु ◌ं की वशक्षा दके र अच्छा वशलपी बनाकर स्ििालमबी बनाया िाए। बच्चों को प्ररमर् से ही शारीररक श्रम को महत्ि बताया िाय े तावक सीख े हए वशलप के द्वारा िीविकोपािभन कर सके । वशक्षा बालकों के िीिन, घर, ग्राम तथा ग्रामीि उद्योगों, हस्तवशलपों और व्यिसाय घवनष्ट रूप से सबवधत हों।बच्चों द्वारा बनाई ◌ं ◌ं गई िस्तए विनका प्रयोग कर सके एि उनको बेचकर । चवक बवनयादी वशक्षा राष्ट्रीय सभ्यता, सस्कवत के ◌ृ ◌ु ◌ू ◌ु ◌ं ◌ं ◌ं ◌ं का प्रचलन वकया गया ह।ै मवस्तष्कीय विकास की दृवष्ट से- अथोपािभन िैसी आिश्यकता परी करने की ◌ू दृवष्ट से –अवत आिश्यक वशक्षा का विकास होना ही चावहए- उससे हर व्यवक्त को ला◌ावन्ित होना ही चावहए। इसमें दोराय े नहीं हो सकतीं।ज्ञान, अथोपािभन, वशलप, कला आवद का अपना महत्ि और कायभक्षेत्र ह।ै ◌ौवतक प्रगवत के वलए उन सबकी िरूरत ह।ै गाधी न े बवनयादी वशक्षा के पाठिम के ◌् ◌ु ◌ं अतगभत आधारर्त वशलप िैसे: कवष, कताई-बनाई, लकड़ी, चमड़े, वमट्टी का काम, पस्तक कला, मछली ◌ृ ◌ू ◌ु ◌ु ◌ं पालन, फल ि सब्िी की बागिानी, बावलकाओ हते गहविज्ञान तथा स्थानीय एि ◌ौगोवलक ◌ृ ◌ु ◌ं ◌ं आिश्यकताओ के अनकल वशक्षाप्रद हस्तवशलप इसके

अलािा मातृराषा, गवित, सामाविक अध्ययन ृ ु ू ं ए सामान्य विज्ञान, कला, वहदी, शारीररक वशक्षा आवद रखा। वशक्षि विवध को वशक्षि का िास्तविक ं ं कायभ-वियाओ और अनिुरों पर अवनियभ रूप से आधाररत वकया। सामदावयक िीिन के आधारर्त ु ु ू ं व्यिसायों से िुड़ी हई थी। तथा सीखे हए आधारर्त वशलप के द्वारा व्यवक्त अपने िीिन का वनिाभह कर ु ू सकता था। अतः यह वशक्षा हमारे िीिन के बवनयाद या आधार से िुड़ी हई थी इसवलए इसका नाम ु ु बवनयादी या आधारर्त वशक्षा रखा गया । उनका मानना था

Plagiarism detected: **0.09%** https://hindimatra.org/ka-se-shabd-hindi id: **43**

की बच्चों को विवर्न्न विषयों की वशक्षा ु ू वकसी आधारर्त वशलप के माध्यम से दी िाए। गार्धीी न े बवनयादी वशक्षा में सीखने की समिाय पिवत ू ु ं का उपयोग वकया। विसक अतगभत उन्होंने समस्त विषयों की वशक्षा वकसी काय भ या हस्तवशलप के माध्यम ं स

े दी।कोठारी आयोग (1964) ने वशक्षा को काम से समवन्ित करने के उद्दश्े य से "कायाभनिुर्" को वशक्षा ु के सर्ी स्तरों पर वशक्षा का अवर्न्न अग बनाने की वसफाररश की तथा इस आयोग ने 10+2+3 वशक्षा ं योिना में +2 पर अकादवमक धारा के अवतररक्त दसरी धारा

Quotes detected: **0%** id: **44**

"व्यािसावयक धारा"

पाठयिम में रखने तथा ृ ू 50% विद्यावथभयों को इस धारा से िोड़ने की वसफाररश की थी। 1951 – 52 में पचिषीय योिना आरर् ं ं करने के अिसर पर आचायभ विनोबा र्ािे ने कहा था वकसी र्ी राष्ट्रीय योिना की पहली शतभ सबको रोिगार दने ा ह ै । यवद योिना से सबको रोिगार नहीं वमलता, तो यह एकपक्षीय होगा, राष्ट्रीय नहीं । कायाभनिुर् को, सर्ी स्तरों पर दी िाने िाली वशक्षा का एक आिश्यक अग होना चावहए। कायाभनिुर् एक ु ु ं ऐसा उद्दश्े यपिभ और साथभक शारीररक काम ह ै िो सीखने की प्रविया का अवनियभ अग ह ै विससे समाि ू ं को िस्तुए ंया सेिाए ंवमलती ह।ैं यह अनिुर् एक ससगवठत और िमबि कायभिम के द्वारा वदया िाना ु ु ु ं उत्तराखण्ड मक्त विश्वविद्यालय 24 ु CPS -2 चावहए। कायाभनिुर् की गवतविवधयाँ विद्यावथभयों की रूवचयों, योनयताओ और आिश्यकताओ पर ु ं ं आधाररत होंगी। वशक्षा के स्तर के साथ ही कशलताओ और ज्ञान के स्तर में िवि होती िाएगी। इसके ृ ु ं द्वारा प्राप्त वकया गया अनिुर् आगे चलकर रोिगार पान े में बहत सहायक होगा। माध्यवमक स्तर पर वदए ु िाने िाले पिभ-व्यािसावयक कायभिमों से उच्चतर माध्यवमक स्तर पर व्यािसावयक पाठयिमों के चनाि ृ ू ु में सहायता वमलेगी। वशक्षा का उद्दश्े य होना चावहए की छात्र को इस योनय बनाये की िो अपनी िीविका और ज़रूरतों को स्िय परा कर सके । वशक्षा तर्ी साथभक वसि होगी िब िह प्रत्येक छात्र को वकसी कायभ ू ं के योनय बनाएगी। इसवलए व्यिसाय के वलए वशक्षा न के िल ऐवच्छक बवलक अवनिाय भ शतभ ह।ै वशक्षा में औपचाररकता एि मौवखकता को दर करने के वलए व्यािसावयक कायाभनिुर् आिश्यक ह।ै गार्धीी न े र्ी ु ं ं ू बेवसक वशक्षा प्रिाली द्वारा हस्तकला या कायभधाररत वशक्षा प्रिाली परै बल वदया क्योंवक उन्होंने आत्मवनर्रभ ता को वशक्षा का महत्िपिभ आधार माना। आि के औद्योवगक यग में वशक्षा का ू ु व्यिसायीकरि महत्िपिभ ह।ै यह एक मनोिैज्ञावनक और सामाविक आिश्यकता ह।ै प्रत्यके व्यवक्त में ू कछ न कछ करने की प्राकवतक लगन होती ह ै और वशक्षा को चावहए की उनकी उस इच्छा की सतवष्ट करे ृ ु ु ु ं तावक िो अपनी योनयताओ और क्षमताओ को पिभतया दशाभ सकें । गार्धीी के शब्दों में सच्ची वशक्षा ू ं ं ं बेरोिगारी के विरुि बीमें के रूप में होनी चावहए। कोठारी आयोग ने र्ी समाि उपयोगी उत्पादन कायभ अथिा कायाभनिुर् (S. U. P. W.) पर बल वदया ह।ै उन्होंने वशक्षा को कायभधाररत बनान े पर बल वदया ह ै ु और य. िी. सी. के वनदशे न में इस काय भ के वलए आवथभक सहायता र्ी िटाई तावक देश के बहत से ू ु महाविद्यालयों में व्यािसावयक पाठयिम चलाया िा सके । मानि का समपिभ विकास आिश्यक ह।ै ृ ू व्यािसावयक पक्ष व्यवक्तत्ि का एक र्ाग ह,ै परत िीिन को समपिभ बनाने के वलए दसरे पक्षों

Plagiarism detected: **0.04%** https://educalingo.com/hi/dic-hi/ka id: **45**

का विकास ु ू ं ु र्ी ज़रूरी ह ै अथाभत व्यािसावयक के साथ साथ नैतक और बौविक विकास र्ी ज़रूरी ह।ै हमारे देश म ें बेरोिगारी की इस र्ीषि समस्या के अनेक कारि ह ैं । उन कारिों म ें लॉडभ मैकॉले की दोषपिभ वशक्षा ू पिवत, िनसख्या की अवतशय िवि, बड़े-बड़े उद्योगों की स्थापना के कारि कटीर उद्योगों का ह्रास आवद ृ ु ं प्रमख ह ैं । वशक्षा प्रिाली में रोिगारोन्मख वशक्षा व्यिस्था का समािेशन से ही इन समस्याओ से वनज़ात ु ु ं पाया िा सकता ह ै । हमारी परमपरागत वशक्षा र्ी इसी ओर इवगत करती ह ै कहा गया ह ैं की अथभकरी च ं विद्या अथाभत विद्या ऐसी हो िो हमें अथोपािभन के योनय बनाए। विद्यालयी पाठयचयाभ में काम से सबवधत विषयों के समािेशन के उद्दश्े य: ृ ं ं कायभ से समबवधत वशक्षा विद्याथी को उसकी उसकी , उसके पररिार तथा समदाय की ु ं आिश्यकताओ िरुेन, स्िास्थ्य और स्िच्छता, िस्त्र, आिास, मनोरंिन और सामाविक सेिा ं ं के सबध में की पहचान करने में सहायता करती ह ै । ं ं समदाय में उत्पादक गवतविवधयों के साथ उसे पररवचत करती ह ै । ु कच्चे माल के स्रोतों को िानने और माल और सेिाओके उत्पादन में उपकरि और उपकरिों ं के उपयोग को िानने में सहायता करती ह।ै विविध प्रकार के कायों में शावमल िैज्ञावनक तथ्यों और वसिातों को िानने में सहायक ह ै । ं उत्तराखण्ड मक्त विश्वविद्यालय 25 ु CPS -2 उत्पादक कायों की योिना एि वनयोिन प्रविया को समझने में सहायक । ं उत्पादक कायों के चयन, खरीद, व्यिस्था और उपकरि और उत्पादक काय भ के विवर्न्न रूपों के वलए सामग्री के उपयोग के वलए कौशल का विकास करना। उत्पादक

कायभ ए् समि सि वस्थवतयों में समस्या को सलझाने के तरीकों के कौशल का ु ं विकास करना। मैनअल काम और मैनअल श्रवमकों के प्रवत सममान का विकास करना। ु ु आत्मवनर्रभ ता, समबिता, अनशासन ,सहयोग , दृढ़ता, सहनशीलता, आवद के ि‍छनीय मलयों ु ू ं का विकास। उत्पादक कायभ और सिओ के क्षेत्र में उपलवब्धयों के माध्यम से आत्म-सममान और ं आत्मविश्वास का विकास करना। पयाभिरि के वलए वचतन और अपनेपन, विममेदारी और समि के वलए प्रवतबिता की ि्ाना ं का विकास करना। समि के सामाविक-आवथभक समस्याओ के बारे में िागरूकता का विकास करना। ं 2.4.1 बागवानी या उद्यान क्रवज्ञान के समावेशन की साथतकता बागिानी'लैवटन शब्द

Quotes detected: **0%** id: **46**

'Hortus'

(उद्यान) और

Quotes detected: **0%** id: **47**

'सस्कवत'

(खेती) में बगीचा खेती अथभ से ली गई ह।ै ृ ं बागिानी विज्ञान फल, सवब्ियों, फल, मसाले, सिाटी पौधे, िक्षारोपि फसलों, कद फसलों, औषधीय ृ ू ं और सगवधत पौधों की खेती के साथ िड़ा हआ ह ै । यह एक कला और विज्ञान ह।ै पौधे ,फल और ु ु ं सवब्ियों इत्यावद हमारी रिमराभ की विदगी से िड़े हए ह ैं । बागिानी का अध्ययन ्ारत िैसे कवष ृ ु ं प्रधान अथभव्यिस्था में बहत महत्ि का ह।ै बागिानी एक अनप्रयोवगत विज्ञान ह ै । बागिानी या उद्यान ु विज्ञान के प्रकार में फल विज्ञान, पष्प विज्ञान, सब्िी विज्ञान, फल सब्िी पररररक्षिके अलिा बागिानी ु वचवकत्सा ्ी शावमल ह ै । अत : यह विषय आकषकभ व्यिसाय अिसरों को प्रदान करती ह ै । इस क्षेत्र में न के िल ज्ञान या आसपास के सौंदयीकरि बवलक सयत्र प्रचार और खेती, फसल उत्पादन, वमट्टी की ं ं तैयारी, प्लाट ब्रीवडग और िनेवटक इिंिवनयररग, सयत्र िि रसायन और प्लाट वफवियोलॉिी के साथ ्ी ं ं ं ं ं ं ं ं सबवधत ह।ै बागिानी लगर्ग वकसी ्ी क्षेत्र में इच्छक व्यवक्त के वलए कै ररयर के अिसरों के साथ एक ु ं ं बहत ही विविध क्षेत्र ह।ै नौकरी पीएच.डी. के साथ उन लोगों के वलए बागिानी में लगर्ग हर वकसी के वलए मौिद ह ैं । ू 2.4.2 आक्रतथ्य के समावेशन की साथतकता: आक्रतथ्य अग्रेज़ी के शब्द hospitality, अथाभत आवतथ्य, का उद्गम लैवटन शब्द hospes से हआ ह;ै तथा hospes ं की उत्पवत्त hostis से हई ह,ै विसका मल अथभ ह,ै शवक्त होना. शावब्दक रूप से

Quotes detected: **0%** id: **48**

"मिेबान"

का अथभ ू उत्तराखण्ड मक्त विश्वविद्यालय 26 ु CPS -2

Quotes detected: **0.01%** id: **49**

"अिनवबयों का स्िामी"

होता ह।ै अत: आवतथ्य का तात्पय भ अिनबी को मिेबान के बराबर/समतलय ु रखना, उसकी दखे ्ाल करना तथा उसे सरवक्षत महसस कराना होता ह,ै तथा उसकी मिेबानी के अत म ें ु ू ं उसे अगले पड़ाि का मागभदशभन प्रदान करना होता है।्ारत ससार की सबसे परानी सभ्यताओ में से एक ु ं ं ह,ै तथा अवतवथयों के ईश्वर के समतलय मानने की इसकी प्राचीन सस्कवत ह ै

Quotes detected: **0.01%** id: **50**

"अवतवथ दिे ो ि्"

के दशभन ृ ु ं शास्त्र म ें विश्वास रखते ह ैं । आवतथ्य आचार शास्त्र अनप्रयक्त आचार शास्त्र की एक शाखा ह।ै व्यिहार में, ु ु यह अनप्रयक्त आचार शास्त्र की अन्य शाखाओ के सबधों को वमलाता ह,ै िसे वक व्यापार आचार शास्त्र, ु ु ं ं ं पयाभिरिीय आचार शास्त्र, व्यिसावयक आचार शास्त्र, ए् अन्य। चँवक आवतथ्य ए् पयभटन सवममवलत ू ं ं रूप से विश्व में सबसे बड़े सिा उद्योगों का सिन करता ह,ै अतः आवतथ्य ए् पयभटन से िड़े व्यवक्तयों के ृ ु ं वलये अच्छे और कायों की बहत सम्ािनायें ह।ैं ं अभ्यास प्रश्न 6. 3H की वशक्षा अथाभत __________, __________और__________ ? 7. __________ने कहा था वकसी ्ी राष्ट्रीय योिना की पहली शतभ सबको रोिगार देना ह ै । 8. लैवटन शब्द __________का अथभ उद्यान ह ै । 2.5 सारांश एक शैवक्षक अनशासन अथिा

Plagiarism detected: **0.05%** https://mycoaching.in/hindi-varnamala + 7 resources! id: **51**

क्षेत्र ज्ञान की एक शाखा के रूप में परर्ावषत वकया िाता ह ै विसमे ु विशेषज्ञता, िनमानस,प्रोिेक्ट,समदाय चनौवतयाँ अध्ययन, पररक्षि और शोध का क्षेत्र होता ह

ै िो घवनष्ठ ु ु रूप से वकसी विश्वविद्यालय के वि्ाग से िड़ा होता ह ै िसे नामतः िज्ञावनक अनशासन में ्ौवतक ु ु विज्ञान, गवित, और रसायन विज्ञान आवद । शैवक्षक सस्थानों ने मल रूप से विद्वानों द्वारा सवित ज्ञान को ृ ू ं तथा ज्ञान के विस्तारीकरि को सग्रह/सचीबि करने के वलए अनशासन शब्द का प्रयोग वकया। उन्नीसी ू ु ं सताब्दी के दौरान िभिन विश्वविद्यालयों में अनशासनात्मक पद का उद्भि हआ । ु अवधकाश शैक्षविक विषयों की उत्पवत्त की िड़ें उन्नीसी शताब्दी कके

विश्वविद्यालयों से िडी ु ं ह ैं िब परपरागत पाठयिम अशास्त्रीय ्राषा और सावहत्य के साथ परक थे विसमें अथभशास्त्र, ु ू ं रािनीवतशास्त्र, समािशास्त्र, लोक प्रशासन, िैसे सामाविक विज्ञान, प्राकवतक विज्ञान ्रौवतक विज्ञान, ृ रसायन विज्ञान,िीि विज्ञान तथा तकनीकी विषयों इंिीवनयररग आवद। ं ं 20 शताब्दी में वशक्षाशास्त्र तथा मनोविज्ञान िैसे नए शैक्षविक विषयों का प्रादु्राभि हआ । ु 1970 और 1980 के दशक में नये शैवक्षक विषयों का विष्फोट हआ िैसे िनसचार, मवहला अध्ययन, ं िनसींख्या अध्ययन, पयाभिरि अध्ययन आवद विषयों की उत्पवत्त हई। कई विषयों की उत्पवत्त व्यिसावयक दृवष्टकोि से हई विसमें प्रमखतः नवसिंग, होटल मैनेिमेंट, हावटभकलचर आवद हई ।कई अन्तः विषयों की ु उत्तराखण्ड मक्त विश्वविद्यालय 27 ु CPS -2 उत्पवत्त हई विसमे विज्ञान, िीि रसायन, कमपटर साइस, बायोटेक्नोलािी आवद विषयों को व्यापक ू ू ं मान्यता प्राप्त हई । बीसिीं शताब्दी तक पहचीं न े के पश्चात इन पदनामों को धीरे धीरे अन्य दशे ों में अपनाया गया और विभ ् स्िीकत विषय के रूप में स्थावपत हो गए । हालावक वर्न्न वर्न्न देशों में इन्ह ें एक ही नाम से िाना िाए य े ृ ं िरूरी नहीं होता ह।ै बीसिी शताब्दी में शावमल विषयों में विज्ञान में ्रौवतक विज्ञान, रसायन विज्ञान, िीि विज्ञान, र्विज्ञान, खगोल विज्ञान तथा सामाविक विज्ञानों में अथभशास्त्र, रािनीवतशास्त्र, समािशास्त्र, और ू मनोविज्ञान थे। बीसिीं शताब्दी से पिभ वबवर्न्न अनशासन प्रायः व्यापक और सामान्य थी िो उस समय ू ु विज्ञान में कम रूवच के करि थी।शैक्षविक व्यिस्था के बाहर एक व्यिसाय के रूप में विज्ञान के वलए कछ अिसर मौिद थे। उच्च वशक्षा ने िैज्ञावनक िाच के वलए सस्थागत सरचना प्रदान की साथ ही साथ ु ू ं ं ं आवथभक सहायता ्री प्रदान की विसके फलस्िरूप िैज्ञावनक ज्ञान की मात्र में बहत तीव्र िवि हई और ृ अध्ययनकताभओ द्वारा िैज्ञावनक गवतविवधयों के सक्ष्म ्रागों पर ध्यान के वन्ित वकया िाने लगा अतः इस ू ं करि िैज्ञावनक विशेषज्ञता का दौर चला ।विस प्रकार इन विशेषज्ञताओ का विकास हआ, विश्वविद्यालयों ं में आधवनक िैज्ञावनक विषयों म ें ्री सधार हआ । अततः वशक्षा की पहचान वकये गए विषयों विशेष ु ु ं विषयों तथा विवशष्ट रुवचओ के कें ि बन गए। ं इस ्रीषि प्रवतयोवगता की दवनया में प्रारमर् में ही िीविका समबन्धी सही चनाि अत्यवधक ु ु महत्िपिभ ह।ै इसीवलए एक ऐसी प्रविया की आिश्यकता ह,ै िो वकसी व्यवक्त को विवर्न्न िीिन िवत्तयों ृ ू से उसके वशक्षा काल में ही अिगत कराए। यवद वशक्षा ग्रहि करने के समय ही उसकी पाठयचयाभ में ् विविध व्यािसावयक विषयों का समािेश ही िाए तब विद्याथोयों को वशक्षा ग्रहि करते समय ही अपनी रुवचयों क्षमताओ और मनोिवतयों का उसे और उसकी वशक्षा से िड़े स्री वहतकारको को सहायता वमल ृ ु ं िाएगी ।तथा बेरोिगारों की सख्या में ्री कमी आएगी तथा इस पहल से उसके अथोपािभन की क्षमता ं बढ़ती ह।ै पाठयचयाभ में काम से समबवधत विषयों के समािेशन से विवर्न्न वशलप एि कला–कौशल का ् ं ं अभ्यास ्री

Plagiarism detected: **0.03%** https://mycoaching.in/hindi-varnamala id: **52**

हो िाता ह ै और व्यसाय के अिसरों से ्री िो प्रारमर् से ही पररवचत हो िाता ह।ैं इन

आधारों पर मनष्य नौकरी अथिा स्िािलमबी उपािभन में अवधक सफल होता ह।ै ऐसे–ऐसे अनेक ला्रों को ध्यान ु में रखते हए वशक्षा में विविध व्यािसावयक कायभिमों का समािेश वकया गया । महात्मा गाींधी के वशक्षा ऐसी होनी चावहए िो की रोिगार परक हो । उनका मानना था वक ्रारत में बच्चों को 3H की वशक्षा अथाभत head hand heart की वशक्षा दी िाए । गाधींिी के अनसार वशक्षा ऐसी हो िो आवथभक ् ु ं आिश्यकताओ की पवतभ कर सके बालक आत्मवनर्रभ बन सके तथा बेरोिगारी से मक्त हो।चने हए वशलप ू ु ु ं की वशक्षा दके र अच्छा वशलपी बनाकर स्िािलमबी बनाया िाए। बच्चों को प्ररमर् से ही शारीररक श्रम को महत्ि बताया िाय े तावक सीख े हए वशलप के द्वारा िीविकोपािभन कर सके । वशक्षा बालकों के िीिन, घर, ग्राम तथा ग्रामीि उद्योगों, हस्तवशलपों और व्यिसाय घवनष्ट रूप से सबवधत हों।बच्चों द्वारा बनाई ं ं गई िस्तए विनका प्रयोग कर सके एि उनको बेचकर । चवक बवनयादी वशक्षा राष्रीय सभ्यता, सस्कवत के ृ ु ू ु ं ं ं ं का प्रचलन वकया गया ह।ै मवस्तष्कीय विकास की दृवष्ट से— अथोपािभन िैसी आिश्यकता परी करने की ू उत्तराखण्ड मक्त विश्वविद्यालय 28 ु CPS -2 दृवष्ट से –अवत आिश्यक वशक्षा का विकास होना ही चावहए—उससे हर व्यवक्त को ला्रावन्ित होना ही चावहए। बागिानी विज्ञान फल, सवब्ियों, फल, मसाले, िैिाटी पौधे, िक्षारोपि फसलों, कद फसलों, ृ ू ं औषधीय और सगवधत पौधों की खेती के साथ िड़ा हआ ह ै । यह एक कला और विज्ञान ह।ै पौधे ,फल ु ु ं और सवब्ियों इत्यावद हमारी रोिमराभ की विदगी से िड़े हए ह ैं । बागिानी का अध्ययन ्रारत िैसे कवष ृ ु ं प्रधान अथभव्यिस्था में बहत महत्ि का ह।ै बागिानी एक अनप्रयोवगत विज्ञान ह ै । बागिानी या उद्यान ु विज्ञान के प्रकार में फल विज्ञान, पष्प विज्ञान, सब्िी विज्ञान, फल सब्िी पररररक्षिके अलािा बागिानी ु वचवकत्सा ्री शावमल ह ै । अत : यह विषय आकषभक व्यिसाय अिसरों को प्रदान करती ह ै ।: आवतथ्य का तात्पयभ अिनबी को मेिबान के बराबर/समतलय रखना, उसकी दखे ्राल करना तथा उसे सरवक्षत ु ु महसस कराना होता ह,ै तथा उसकी मेिबानी के अत में उसे अगले पड़ाि का मागभदशभन प्रदान करना होता ू ं ह।ै ्रारत ससार की सबसे परानी सभ्यताओ में से एक ह,ै तथा अवतवथयों के ईश्वर के समतलय मानने की ु ु ं ं इसकी प्राचीन सस्कवत ह ै

Quotes detected: **0.01%** id: **53**

"अवतवथ दिेो ्र"

के दशभन शास्त्र में विश्वास रखते ह ैं । आवतथ्य आचार शास्त्र ृ ं अनप्रयक्त आचार शास्त्र की एक शाखा ह।ै ु ु 2.6 अभ्यास प्रश्नों के उत्तर 1. Discipulus 2. अकादवमक अनशासन की विशेषताए वनमनवलवखत ह ैं ु ं a. ज्ञान का विशेषीकत क्षेत्र ृ b. स्िय की विवशष्ट अिधारिायें एि वसद्धात ं ं ं c. विवशष्ट शब्दािली d. शोध के विवशष्ट उद्देश्य e. वनवश्चत शोध-प्रविवध f. वनवश्चत विषय-िस्त पर व्यािसावयक सगठनों से चचाभ ु ं 3. सर विवलयम िोन्स 4. ्रौवतक विज्ञान और िीि विज्ञान। 5. वकसी ्री विषय को अनशावसत बनाने के वलए उसमें वनमनवलवखत विशेषताए ंहोनी चावहए :- ु a. प्रसग ं b. विषय िस्त ु c. पाठयिम ् d.

प्रकरि e. मद्द े ु f. मल प्रश्न ू उत्तराखण्ड मक्त विश्वविद्यालय 29 ु CPS -2 g. सकाय ं h. अनसन्धान कें ि ु i. शोध पवस्तका ु j. उत्प्रेरीत्मक उद्दश्े य 6. head hand and heart 7. आचाय भ विनोबा ि्रे 8. Hortus 2.7 सदं र् भग्रन्थ सची ू 1. वबहारी, लाला रमन वशक्षा के दाशभवनक और समिाशास्त्रीय वसाित, रस्तोगी पवब्लके शन, मेरठ। ं 2. पचौरी, वगरीश, उदीयमान ्रारतीय समिा में वशक्षक, लायल बक वडपो, मेरठ। ु 3. पाण्डे, रामशकल, वशक्षा के दाशभवनक ए समिाशास्त्रीय पष्ठर्वम, विनोद पस्तक मवन्दर। ृ ू ु ं 4. National Education Commission. (1964-66). Ministry of Education, Government of India, New Delhi 5. National Policy on Education. (1986 & 92). Ministry of Human Resource Development Government of India, New Delhi. 2.8 वनबधात्मक प्रश्न ं 1. विवर्न्न अध्ययन क्षेत्रों के उद्भि का अथभ बताईए ? 2. अध्ययन क्षेत्रों के उद्भि का महत्ि अपने शब्दों में व्यक्त कीविए। 3. ितभमान समय में कल ज्ञान पररदृश्य में विवर्न्न विषयों के स्थान की व्याख्या कीविए। ु 4. विद्यालयी पाठयचयाभ में काम से सबवधत विषयों की साथभकता की वििेचना कीविए। ् ं ं 5. बागिानी और आवतथ्य विषय के समिेशन की साथभकता का विश्लेषि कीविए। उत्तराखण्ड मक्त विश्वविद्यालय 30 ु CPS -2 इकाई 3 - विविन्न विषयों का विद्यालयी पाठ्यचया में िूवमका और स्थान Role and Place of Various Subjects in the School Curriculum 3.1 प्रस्तािना 3.2 उद्दश्े य 3.3 पाठयचयाभ में विवर्न्न विषय ् 3.3.1 ्राषा 3.3.2 गवित 3.3.3 विज्ञान 3.3.4 सामाविक विज्ञान 3.3.5 कला 3.3.6 कमप्यटर विज्ञान ू 3.3.7 शारीररक ए स्िास्थ्य सबधी वशक्षा ं ं ं 3.3.8 शावन्त वशक्षा 3.3.9 काम और वशक्षा 3.4 साराश ं 3.5 शब्दािली 3.6 अभ्यास प्रश्नों के उत्तर 3.7 सन्दर्भ ग्रथ सची ू ं 3.8 वनबधात्मक प्रश्न ं 3.1 प्रस्तावना विद्यालयी स्तर पर कई विषयों का अध्यापन वकया िाता ह ै । वकसी ्री विषय को पाठ में शावमल करने के पीछे एक व्यापक दृवष्ट और सकलप होता ह ै । वकसी ्री पाठयचयाभ वनमाभि के पीछे िो उद्दश्े य होते ह ैं उनमें ् ं यह वनधाभररत वकया िाता ह ै वक विद्याथी को इस विषय के अतगभत क्या सीखना ह,ै वकन वियाओ के ं ं माध्यम से सीखना ह,ै और कौन से अनिर्् प्राप्त करन े ह ैं । विद्यावथभयों से उस कक्षा के पश्चात या उस स्तर ् ु उत्तराखण्ड मक्त विश्वविद्यालय 31 ु CPS -2 के बाद विस व्यिहार पररितभन की आशा की िाती ह ै उससे समबवधत पाठों को पाठयचयाभ में िगह दी ् ं िाती ह ै । इसमें से कछ को पाठय-पस्तकों में सवममवलत वकया िाता ह ै विसे वशक्षि के माध्यम से ् ु ु समपावदत वकया िाता ह ै और कछ को पाठयसहगामी वियाओ के माध्यम से वदए िाने का प्रयास वकया ् ु ं िाता ह ै । 3.2 उद्दश्े य इस इकाई के अध्ययन के अध्ययन के पश्चात आप :- 1. ्राषा का विद्यालयी पाठयचयाभ में र्वमका और

Plagiarism detected: **0.04%** https://hindiletter.org/k-se-gya-tak id: **54**

स्थान का ििभन कर सकें गे। ् ू 2. गवित की पाठयचयाभ में र्वमका को स्पष्ट कर सकें गे । ् ू 3. विज्ञान व

िषयों विद्यालयी पाठयचयाभ में र्वमका और स्थान की वििेचना कर सकें गे । ् ू 4. सामाविक विज्ञान का विद्यावथभयों के वलए उपयोवगता को वििेचत कर सकें गे । 5. कला और अन्य रचनात्मक विषयों में का विद्यावथभयों के सिांगीि विकास में र्वमका का ू विश्लेषि कर सकें गे। 6. शारीररक वशक्षा और शावत वशक्षा िैसे विषयों की पाठयचयाभ में उपयोवगता का ििभन कर सकें गे। ् ं 7. विवर्न्न विषयों का पाठयचयाभ में र्वमका और महत्ि को स्पष्ट कर सकें गे । ् ू 3.3 पाठ्यचया म ववववर्न्न ववषय ें पाठयचयाभ कैसी होना चावहए के उत्तर में यह कहा िा सकता ह ै वक िो बालक के अन्तवनभवहत योनयताओ ् ं का विकास मे सहायता करने के साथ ही साथ उसके विकास का मलयाकन ्री कर सके । पाठयचयाभ के ् ू ं समबन्ध में सैलर और अलेकिंडर का कहना है वक विद्यालयी पाठयचयाभ में विद्यालय का समपिभ प्रयास ् ू होता ह ै विसके द्वारा विद्यालय और विद्यालय के बाहर की पररवस्थवतयों में िांवछत उपलवब्ध को प्रदवशभत ं करना सिर् हो सके । ं राष्ट्रीय पाठयचयाभ की रुपरेखा 2005 िो अब तक्री पाठयचयाभ विकास करने की आधारर्त ् ् ू दस्तािेि समझी िाती ह ै उसमें प्रारर् में ही सार सक्षेप में ही रविन्द्रनाथ टैगोर के वनबध "सभ्यता और ं ं ं ं प्रगवत को इस बात के वलए उवललवखत वकया गया ह ै सिनात्मक ए उदार आनद बचपन की किी ह ै ृ ु ं ं ं और नासमझ ियस्क ससार द्वारा उनकी विकवत का खतरा ह.ै पाठयचयाभ का विकास करते समय इस बात ृ ् ं का ध्यान रखना अत्यत आिश्यक ह ै वक पाठयचयाभ इस प्रकार की हो िो बच्चों में सिन शवक्तयों का ृ ् ं विकास करे साथ ही साथ इस विकास के वलए िह बोवझल न हो िाए बवलक रोचकता वलए हए हो । राष्ट्रीय पाठयचयाभ की रुपरेखा 2005 के अनसार विद्यालयी स्तर पर विवर्न्न विषयों को पाठयचयाभ में ् ् ु स्थान इसी आधार पर वदया गया ह ै । उत्तराखण्ड मक्त विश्वविद्यालय 32 ु CPS -2 क्रचत्र सख्या-1 ं पाठयचयात में समाक्रहत क्रवक्रभन्न क्रवषय ् ्राषा गवित सामाविक विज्ञान विज्ञान पाठयचयाभ ् शारीरर कला ि (पाठय, पाठयसहगामी) ् ् क वशक्षा सगीत ं नैवतक कप्यटर ू ं अन्य वशक्षा वशक्षा वकसी ्री पाठयचयाभ का लक्ष्य यही होता ह ै वक स्री बच्चों को इसप्रकार की शैवक्षक अिसर प्रदान वकया ् िाए वक िह उनकी विवशष्टता की पहचान करे ,उनके सामथ्य भ का विकास करे और उनकी प्रवसवि को सवनवश्चत करे । एक वशक्षाथी के रूप में बालक आर विविध वशक्षि प्रविवधयों का प्रयोग पाठयचयाभ का ् ु अविनाय भ विशेष गि ह ै । ु पाठयचयाभ इस बात पर ्री बल देता ह ै वक विन बच्चों की शैवक्षक आिश्यकताए विवशष्ट ह ैं उन ् ं पर अवधक ध्यान वदया िाए और उनके द्वारा वियात्मक साक्षरता ए गवितीय ज्ञान को प्राप्त करने को ं महत्ि दते ा ह ै । यह कक्षा के अवधकाश विद्यावथभयों की शैवक्षक िरूरतों के साथ प्रवत्राशाली बच्चों की ं विशेष आिश्यकताओ की ओर ्री ध्यान दते ा ह ै । ं उपयभक्त वचत्र (वचत्र सख्या-1) से स्पष्ट ह ै वक पाठयचयाभ में गवित, ्राषा, सामाविक विषय,विज्ञान, कला, ् ु ं सगीत, इत्यादी ्राषाओ ेँ का महत्िपिभ स्थान ह.ै विद्यालयी स्तर पर इन विषयों के पाठयचयाभ में र्वमका ् ू ू ं और स्थान की चचाभ हम विस्तार से करेंगे. उत्तराखण्ड मक्त विश्वविद्यालय 33 ु CPS -2 3.3.1 भाषा पाठयचयाभ में सवममवलत विवर्न्न विषयों में ्राषा मख्य स्थान रखती ह.ै यही कारि ह ै वक प्राथवमक ् ु कक्षाओ में 3 R अथाभत पढ़ना, वलखना और गवितीय वियाओ (Reading, Writing,Arithmetic) ं ं को विशेष स्थान वदया गया ह.ै परन्त वशक्षा व्यिस्था में यह बात वचतािनक ह ै वक अवधकाश वशक्षक इस ु ं ं बात से अिगत तक नहीं वक ्राषा को पाठयचयाभ में क्यों रखा िाता ह,ै

विवर्न्न कहावनयों,कविताओ ् ं और वनबधों को पाठयचयाभ में क्यों स्थान वदया गया ह ै । ्राषा एक ऐसा विषय ह ै िो विद्यालयी पाठयचयाभ ् ् ं में मख्य रूप से प्राथवमक कक्षाओ में सबसे अहम स्थान रखती ह ै क्योंवक यह ्राषा ही ह ै िो वकसी ्री ् ु ं अन्य विषय में ज्ञान अिभन के वलए आधार तैयार करती ह ै । ्राषा िह पहला विषय ह ै विससे सबसे प्रथम कक्षा में विद्याथी को पररवचत कराया िाता ह ै । ्राषा मात्र एक विषय ही नहीं बवलक यह िह माध्यम ह ै विसके द्वारा सचनाओ और िानाओ का आदान-प्रदान वकया िाता ह ै । मनष्य के रूप में हम अपन े ू ु ं ं पिभिों से इसी प्रकार वर्न्न और श्रेष्ठ ह ैं वक हमारे पास स्िर ग्रवथ ह ै । ू ं ्रारत िैसे दशे में िहाँ ्राषायी विविधता इतनी अवधक हो िहा ्राषा को वकस प्रकार स े ं पाठयचयाभ में रखा िाए और उसकी र्वमका क्या होनी चावहए यह िहद चचाभ का विषय ह.ै ्रारत में ृ ् ू ् लगर्ग 200 ्राषाएँ और 1600 से अवधक बोवलयाँ ह ैं ऐसे में पाठयचयाभ में ्राषा को सही स्थान देना ् चनौतीपिभ ह.ै इस ्राषायी विविधता की चनौती को वब्रवटशकाल में ्री समझा गया और यही कारन ह ै वक ु ू ु िड वडस्पैच 1854 में ्री तीन ्राषाओ ीं को पाठयिम में स्थान देन े का सझाि वदया गया. 1935 में ् ु ु महात्मा गाँधी ने बेवसक वशक्षा में वत्र्राषा सत्र की वसफाररश की. ू स्ितत्रता के पश्चात हम वत्र्राषा सत्र का विद्यालयी वशक्षा में महत्िपिभ स्थान को दोहराते रह े ह.ैं ् ू ू ं राष्ट्रीय वशक्षा नीवत-1986 ने ्री ्रारत के कछ राज्यों में वत्र्राषा सत्र की पिभ अिहले ना और कछ राज्यों ु ू ू ु में सतोषप्रद तरीके से लाग होता हआ न दखे कर इसे परी तरह से वफर से लाग करने के वलए पनः ू ू ू ु ं प्रस्तावित वकया. समपिभ राष्ट्र में तमाम बहसों और विचार विमशभ के बाद के न्िीय वशक्षा सलाहकार ू सवमवत ने राष्ट्रीय पाठयचयाभ की रुपरेखा-2005 को स्िीकत वकया िो कहती ह ै वक वद्व्रावषकता या ृ ् बह्रावषकता से वनवश्चत सज्ञानात्मक लार् होते ह ैं । वत्र्राषा सत्र के वलए कहती ह ै वक यह ्रारत की ू ं ्राषा-वस्थवत की चनौवतयों और अिसरों को सबोवधत करने का प्रयास ह ै । ु ं सामान्य तौर पर पाठयचयाभ में विन ्राषाओ ीं को सवममवलत करते ह ैं उनमें वहदी ्राषी ् ं राज्यों में पहली ्राषा वहदी होती ह,ै दसरी ्राषा सस्कत और तीसरी ्राषा के रूप में अतराभष्ट्रीय क्षेत्र में ृ ं ं ं ू पकड़ और उपयोवगता को दखे ते हए अग्रिे ी को शावमल वकया िाता ह ै । कछ विद्यालयों में वहदी/सस्कत ृ ु ं ं ं की िगह कोई अन्य देशी या विदेशी ्राषा शावमल की िाती ह ै ह ै । उन प्रदेशों में िहाँ मात्राषा वहदी नहीं ृ ं ह ै िहा पहली ्राषा के रूप में िहाँ की मात्राषा, दसरी ्राषा वहदी और तीसरी ्राषा के रूप में अग्रिे ी ृ ं ं ं ू शावमल की िाती ह ै । परन्त ्रारत के प्रत्यके राज्य में इस सत्र का अनसरि नहीं वकया िाता ह ै । ु ू ु राष्ट्रीय पाठयचयाभ की रुपरेखा-2005 के अनसार ्राषा वशवक्ष में मात्र एक ्राषा नहीं शावमल ् ु की िवन चैये बवलक यह बह्रावषक होनी चावहए । प्राथवमक स्तर पर घरेल ्राषा को ही वशवक्ष माध्यम ू के रूप में लेना चावहए । गैर वहदी रािों में वहदी ्राषा और वहदी बोले िाने िाले राज्यों में िह ्राषा पढ़ाई ं ं ं उत्तराखण्ड मक्त विश्वविद्यालय 34 ु CPS -2 िानी चावहए िो उस क्षेत्र में नहीं बोली िाती या वफर आधवनक ्राषा के रूप में सस्कत को शावमल ृ ु ं वकया िा सकता ह ै। उच्च स्तरों पर शास्त्रीय और विदशे ी ्राषाओ ीं को स्थान वदया िा सकता ह ै । अभ्यास प्रश्न 1. पाठयचयाभ विकास करते समय मख्य रूप से वकन बातों का ध्यान रखना चावहए ? ् ु 2. िड वडस्पैच 1854 में ्राषा वशक्षा के वलए क्या सझाि वदए गए थे? ु ु 3.3.2 गवणत ्राषा के पश्चात प्राथवमक स्तर पर विस विषय को महत्ि वदया िाता ह ै िह गवित ह ै । प्रारवर्क स्तर पर ् ं गवित में मात्र अकगवित

Plagiarism detected: **0.07%** https://sabsastaa.com/english-barakhadi/ id: **55**

का ज्ञान बच्चों को वदया िाता ह ै पर बढ़ते स्तर के साथ (कक्षा 4 या 5) उसमें ं बीिगवित और वफर वत्रकोिवमवत को सवममवलत वकया िाता ह ै । प्रारवर्क स्तर पर बच्चों को गवित का ं ज्ञान

दने े का मख्य उद्दश्े य उन्ह ें अपने दवै नक िीिन में गवितीय वियाओ को कर सकन े की क्षमता प्रदान ु ं करने के साथ उच्च स्तर के वलए उन्ह ें एक आधार प्रदान करना और उनके मवस्तष्क को तैयार करना ्री ह।ै गवित से वमला ज्ञान बच्चों को तावकभ क तरीके से सोचन,े समझने , समस्या समाधान करने, वकसी तथ्य को गहराई से िाचन े और अमतभ अिधारिाओ को समझने की योनयता विकवसत करता ह ै । िैसा वक हम ू ं ं िानते ह ैं हमारे वदनानवदन का कायभ वबना गवितीय वियाओ के नहीं वकया िा सकता अतः कक्षाओ में ु ं ं गवित को सवममवलत करना आिश्यक ह ै । गवित की प्रकवत या उपयोवगता को दखे ते हए ही गवित की ृ कक्षा को समय-साररिी में पहले घटे में रखने का सझाि वदया िाता ह ै । ु ं हमारे विद्यालयों में गवित को मात्र एक कवठन और उबाऊ विषय बना कर रख वदया गया ह ै । दखे ा गया ह ै वक विद्याथी इस विषय से र्य्रीत होते ह ैं और परीक्षाओ में अवधकाश विद्याथी गवित में ही ं ं असफल होते ह ैं । इसके साथ ही समाि में एक पिाभग्रह ह ै वक वलग के आधार पर गवितीय कशलताओ में ू ु ं ं अतर पाया िाता ह ै । परुष विद्याथी मवहला विद्यावथभयों की तलना में गवित में बेहतर होते ह ैं । कई बार ु ु ं वशक्षक ्री इसी पिाभग्रह से ग्रवसत होते ह ैं । विद्यावथभयों के मन में गवित के प्रवत र्य के पीछे कई कारि ह ैं । ू इसमें से पहला कारि पिाभग्रह और लोगों की धरना ही ह ै विसे विद्याथी बचपन से सनते आते ह ैं । दसरा ू ु ू कारि गवित में रूवच का अिाि ह ै । वशक्षक अपनी कक्षा को रुवचकर नहीं बना पाते और उनका ज्ञान देने का तरीका गवितीय समस्याओ को मात्र श्यामपट्ट पर हल कर दने ा ह ै । दसरा यह वक पाठयचयाभ में गवित ् ं ू को बहत बोवझल तरीके से रखा िाता ह ै और कई बार विद्याथी अपन े दवै नक िीिन की समस्याओ से इन ं समस्याओ को समबवधत नहीं कर पाते ह ैं विससे अवधगम का स्थानातरि नहीं हो पाता ह ै और हर ं ं ं अगली कक्षा के साथ विद्याथी वपछली कक्षा में पढ़ी चीिों को र्लते चले िाते ह ैं । एक और समस्या ू विनका सामना विद्यावथभयों और वशक्षकों को करना पड़ता ह ै वक पाठयपस्तकों में दी अवधकतर समस्याए ् ु ं चनौवतपिभ नहीं ह ैं और उनमें दोहराि ह ै विससे प्रवत्राशाली छात्र वनराश होते ह ैं । इसके अवतररक्त ु वशक्षकों का कक्षा में पढ़न े का तरीका, बोवझल तरीके से अध्यापन, कई बार वशक्षकों के अन्दर उत्तराखण्ड मक्त विश्वविद्यालय 35 ु CPS -2 आत्मविश्वास की कमी, कक्षा

लेने से पिभ में की गयी तैयारी का अिर्ा इत्यावद ्री छात्रों में गवित के ्र प्रवत िह रूवच उत्पन्न नहीं करती िो उसे करना चावहए । एक समस्या कै लकलेटर या कप्यटर का ु ू ं अत्यवधक प्रयोग ्री ह ै । पहले विद्याथी िहीँ अवधकतर गिनाय ें स्िय करते थे और यह वनरतर अभ्यास ं ं उनकी कौशल शवक्त के विकास में योगदान करता था िही आसन गवितीय वियाओ के वलए ्री ीँ ं कै लकलेटर या कप्यटर पर वनर्भरता उन्ह ें आत्मवनर्रभ नहीं बनने द े रही ह ै । ु ू ं प्राथवमक स्तर पर गवित वशक्षि के माध्यम से गवितीय कौशल के विकास के साथ-साथ इसका प्रयास करना चावहए वक विद्यावथभयों में मतभ ज्ञान को अमतभ तक ले िाने वक योनयता का विकास हो सके । ू ू और इस हते वशक्षक का यह प्रयास होना चावहए वक िह विद्यावथभयों में गवित के प्रवत रूवच और रुझान ु उत्पन्न करते हए लक्ष्यों को

Plagiarism detected: **0.05%** https://www.amojeet.com/2021/05/ka-se-gy-tak… id: **56**

प्राप्त करन े का प्रयास करे । उच्च प्राथवमक स्तर के विद्यावथभयों के वलए वशक्षकों का प्रयास उनके कक्षा में सीखे गए ज्ञान का सामान्यीकरि, प्राप्त

सचनाओ का विस्ताररत ू ं उपयोग, कलपना कौशलों का विस्तार तथा वद्वआयामी और वत्रआयामी समझ को बढ़ान े हते होना चावहए। ु माध्यवमक कक्षाओ में िब गवित एक अनशासन का रूप लेने लगता ह,ै इस स्तर पर विद्याथी ु ं सामान्यीकरि, अनमान लगाना और वनयमों तथा तावकभ कता के आधार पर वकसी ्री तथ्य को वसि ु करने की योनयता का विकास वकया िा सकता ह ै । इसी तरह उच्चतर माध्यवमक स्तर पर िहीँ गवित पिभ ू रूप से एक अनशासन के रूप में पररिवतभत हो िाता ह ै िहीँ विद्यावथभयों को और उच्च स्तर के वलए तैयार ु करने के साथ विद्यावथभयों में सक्षम अतदृवभ ष्ट विकवसत की िानी िरुरी ह ै वक ि परस्पर विरोधी मागो के ू ं ं बीच सािधानी से सही विकलप का चनि कर सकें । ु 3.3.3 क्रवज्ञान मानि अपने इस स्िरुप में आने के बाद से ही खोिी और अन्िेषिक रहा ह ै और मनष्य के इसी स्िि्ा ने ु

Plagiarism detected: **0.24%** https://sanskartutorials.in/hindi-alphabet-hindi-a… id: **57**

विज्ञान को िन्म वदया । विज्ञान हमारे िीिन के प्रत्येक वहस्से में ह.ै विज्ञान मात्र उतना ही नहीं ह ै वितना हमारे पाठयपस्तकों में वदया गया ह ै बवलक हमारे सोचने, समझन,े देखन,े विचार करन,े और तदपश्चात ् ु ् वकसी वनिभय पर पहचँ ने स्री में सवममवलत ह.ै विज्ञान को परर्ावषत करते हए विज्ञान की यही परर्ाषा दी िाती ह ै वक िह स्री ज्ञान िो िमिबि, व्यिवस्थत एि कायभ-कारि समबन्धों से समबवधत हो िह ं ं विज्ञान ह ै । विज्ञान को परर्ावषत करते हए राष्रीय पाठयचयाभ की रुपरेखा-2005 ने कहा ह ै वक विज्ञान ् गत्यात्मक और वनरतर पररिवधभत ज्ञान का र्ंडार ह ै विसमें अनि्र् के नए-नए क्षेत्रों को शावमल वकया ु ं िाता ह ै । एक प्रगवतशील और विष्योन्मखी समाि में विज्ञान

सचमच मवक्तदायी र्वमका वन्ा सकता ु ु ु ू ह,ै इसके सहयोग से लोगों को गरीबी, अज्ञान और अन्धविश्वास के दष्चि से वनकाला िा सकता ह ै । ु (राष्रीय पाठयचयाभ की रुपरेखा-2005) । ्

Plagiarism detected: **0.04%** https://sanskartutorials.in/hindi-alphabet-hindi-a… id: **58**

विज्ञान की सबसे बड़ी विशेषता यह ह ै वक यह वकसी ्री ज्ञान को शाश्वत या सािभ्ौवमक नहीं मानता. इसके अनसार प्रत्येक

वदन में हो रह े खोिों और अन्िेषिों के द्वारा वनत नए ज्ञान की रचना हो रही ु उत्तराखण्ड मक्त विश्वविद्यालय 36 ु CPS -2 ह ै और इसी कारि से वकसी ्री ज्ञान को शाश्वत रूप में स्िीकार नहीं वकया िा सकता. उदहारिस्िरुप- कछ िषभ पिभ तक प्लटो सौर मडल के नौ ग्रहों में नििाँ ग्रह था परन्त बाद में खगोलशावस्त्रयों ने उसे ग्रह नहीं ु ू ू ु ं माना और ितभमान समय में सौर मडल में 8 ग्रह ह ै पर इनकी सख्या में ्री पररितभन सि्र् ह ै । ं ं ं दखे ा गया ह ै वक विज्ञान मात्र तकनीकी एि प्रगवत से नहीं िड़ा ह ै बवलक यह सामाविक विकास ु ं एि सामाविक प्रगवत से ्री समबवधत ह.ै िो समाि िैज्ञावनक रूप से वितना ही विकवसत होता ह ै ं ं सामाविक लचीलापन, खलापन और पररितभन को स्िीकत कर सकने की ि्ाना उतनी ही अवधक होती ृ ु ह.ै अतः कक्षा में विज्ञान पढ़ान े का उद्दश्े य मात्र िैज्ञावनक ज्ञान ही नहीं बवलक सामाविक विकास ्री है, क्योंवक यह िैज्ञावनक तरीके से सोचने समझने की क्षमता का विकास करता ह ै । पर यह हमारे दशे का द्ाभनय ही ह ै वक हम विज्ञान िैसे विषय को बोवझल बनाते हए इसे रचनात्मकता तथा अन्िेषिों से कोसों ु दर रखते ह ैं । हम

Plagiarism detected: **0.06%** https://sanskartutorials.in/hindi-alphabet-hindi-a… id: **59**

विज्ञान विषयों का प्रयोग समतामलक समाि की स्थापना हते कर सकते ह ैं और विवर्न्न ू ु ू क्षेत्रो ने व्याप्त अतरों को कम करन े के वलए कर सकते ह ैं । विज्ञान

अध्ययन-अध्यापन दक्षता तो ला रहा ह ै ं पर इसमें कछ गिात्मक पररितभन लाने की आिश्यकता ह ै विससे यह अपने शैवक्षक लक्ष्यों की प्रावप्त कर ु ु सके । प्राथवमक स्तर पर विज्ञान को ्ाषा और गवित से समबवधत कर पढ़ाना चावहए । इस स्तर पर ं विज्ञान के माध्यम से बच्चे की विज्ञास प्रिवत और अन्िेषिात्मक शवक्त का विकास करें । विद्यावथभयों को ृ ु उत्सक रूप से अिलोकन करने, नयी चीिों को खोिने, नयी पररवस्थवतयों में सामिस्य करने की योनयता ु ं विकवसत करनी चावहए । विज्ञान के महत्ि और िीिन के हर क्षेत्र में उपयोग की महत्ता को दखे ते हए साथ ही आगामी कक्षाओ में इसके महत्ि को समझते हए यहाँ इस स्तर पर एक उद्दश्े य होना चावहए िि्ाी ं विज्ञान वशक्षा के वलए उन्ह ें आधार प्रदान वकया िाए । उच्च प्राथवमक स्तर विद्यावथभयों को प्रयोगों और गवतविवधयों के माध्यम से सीखान े का प्रयास करना चावहए । इसके वलए सामवहक कायभ, सहयोगात्मक ू रूप से कायभ करना,

विचार-विमशभ, यिोनायें बनाना और वनरतर तथा वनयवमत मलयाकन अपनायी िानी ू ं ं चावहए । माध्यवमक स्तर पर विज्ञान को सहसमबवन्धत कर पढ़ाना चावहए । इस स्तर पर ्रौवतक विज्ञान, रसायन विज्ञान और िीि विज्ञान; तीनों अलग हो िाते ह ैं पर कई सकलपनाएँ अतसिंबवधत होती ह ैं । ं ं ं इनको सहसमबवन्धत कर अध्यापन करन े से विद्यावथभयों को सकलपना का सही ज्ञान वमलेगा । यह विया ं उच्च प्राथवमक स्तर और उच्चतर माध्यवमक स्तर पर अपनायी िा सकती ह ै । तकनीकी के साथ शरीर और पयाभिरि से िड़े मद्दों को शावमल करना चावहए और गवतविवधयों और विश्लेष्िात्मक द्दवष्टकोि के ु ु साथ पढ़ाया िाना चावहए । उच्चतर माध्यवमक स्तर पर उनके विष्य के वलए उनकी आकाक्षायें देखते ं हए उस प्रकार से ज्ञान देना चावहए । इसके वलए प्रयोगों, समस्या समाधान विवध और विश्लेष्िात्मक नीवत की मदद ली िा सकती ह ै । ढेर सारे सतही ज्ञान के स्थान पर कम विषयों का गहराई से अध्ययन को प्रोत्सावहत वकया िाना चावहए । उत्तराखण्ड मक्त विश्वविद्यालय 37 ु CPS -2 अभ्यास प्रश्न 3. उच्च प्राथवमक स्तर पर गवित वशक्षा का क्या उद्दश्े य होना चावहए ? 4. प्राथवमक स्तर पर विज्ञान वशक्षि के माध्यम से वकन योनयताओ का विकास विद्यावथभयों में करने ं चावहए? 3.3.4 सामाक्रजक क्रवषय सामाविक विज्ञान के अतगभत विन विषयों को शावमल वकया िाता ह ै उनमें इवतहास, र्गोल और ू ं रािनीवतशास्त्र ह ैं । आगे चलकर इसमें समािशास्त्र, अथभशास्त्र और मानि विज्ञान को ्री सामाविक विज्ञान में शावमल वकया िाता ह ै । यवद विस्तत अथभ में दखे ा िाए तो मानि और उसके समाि से िड़ा हर ृ ु एक पहल; िह चाह े प्रत्यक्ष रूप से हो या परोक्ष रूप से, सामाविक विज्ञान में शावमल वकए िाते ह ैं । ू ं आि के दौर में िहाँ विज्ञान का बोलबाला ह ै िहीं सामाविक विज्ञान िैसे विषयों को हावशय े पर रखा िाता ह।ै क्योंवक यह माना िाता ह ै वक विज्ञान विषयों के अध्ययन के पश्चात रोिगार के अिसर ् बढ़ते ह ैं िबवक सामाविक विज्ञान अिसरों को सीवमत कर दते ा ह ै । अतः विद्यावथभयों को सामाविक विज्ञान के माध्यम से ्री प्रचर अिसरों को उपलब्ध करान े का प्रयास करना चावहए । सामाविक विज्ञान ु को पाठ्यचयाभ में सवममवलत करने के पीछे राष्ट्रीयता, .समानता, समता, रम ातत्ि, विश्व-बधत्ि, अतराभष्ट्रीय ृ ् ु ं ं सद्भाि िैसे मलयों का विकास करना ह ै । वशक्षकों को यह प्रयास करना चावहए वक ि विद्यावथभयों में ू सामाविक, सास्कवतक गिों को सामाविक विज्ञान वशक्षि के माध्यम से बढ़ाए और उनमें विश्लेष्िात्मक ृ ु ं ं ं द्दवष्टकोि को बढ़ािा दे सके । सामाविक विज्ञान

Plagiarism detected: **0.06%** https://mycoaching.in/r-ke-roop-prakar-matra-s… + 6 resources! id: **60**

को मात्र सचना देन े से समबवधत मान वलया िाता ह ै और िास्ति में विद्यालयों ू ं में इसका रूप ऐसा ही बना वदया गया ह।ै विद्यार्थी तथ्यों को मात्र

रटकर उत्तीिभ होने का प्रयास करते ह ैं तो ऐसे में आिश्यकता ह ै वक इसे इस रूप में विद्यावथभयों के सामने रखा िाए वक यह उनकी सज्ञानात्मक ं विकास में मदद कर सके , विद्यावथभयों में रचनात्मकता को बढ़ािा द े और उनमें अतरानशासनात्मक वचतन ु ं ं करने को बढ़ािा द े सके । प्राथवमक स्तर के विद्यावथभयों हते वशक्षक का यह प्रयास होना चावहए वक िह विद्यार्थी के समक्ष ु सामाविक और प्राकवतक पयाभिरि को ्राषा तथा गवित के ्राग के रूप में रखे । पाठ में ऐसी ृ गवतविवधयाँ शावमल करना चावहए विससे िैविक, सामाविक, सास्कवतक िातािरि को समझ सकें । ृ ं मलयों के बीिारोपि के वलए प्राथवमक स्तर से ही प्रयास होना चावहए तो इस हते सामाविक विज्ञान के ू ु माध्यम से विद्यावथभयों में पयाभिरि के प्रवत प्रेम और सरक्षि की िािना, लैंवगक सिेदनशीलता, समानता, ं ं प्रेम िैसे मलयों को विकवसत करने का प्रयास वकया िाना चावहए । िहाँ प्राथवमक स्तर पर सामाविक ू विषय और विज्ञान को लेते हए पयाभिरि विज्ञान

Plagiarism detected: **0.05%** https://mycoaching.in/r-ke-roop-prakar-matra-s… id: **61**

के रूप में रखा िाता ह ै िही उच्च प्राथवमक स्तर पर ्ाँ सामाविक विज्ञान में र्गोल, इवतहास, रािनीवत विज्ञान और अथभशास्त्र शावमल हो िाता ह ै तो इस

स्तर ू पर वशक्षकों का यह प्रयास होना चावहए वक ि प्रिातावन्त्रक मलयों, राष्ट्रीयता की िािना और अतराभष्ट्रीय ू ं उत्तराखण्ड मक्त विश्वविद्यालय 38 ु CPS -2 समझ िैसे मलयों का विकास करें । माध्यवमक स्तर पर र्गोल, इवतहास, अथभशास्त्र, रािनीवतशास्त्र स्ी ू ू विषय अलग पढाए िाते ह ैं तो इस स्तर पर इन स्ी विषयों में राष्ट्रीय स्तर के विषयों, मद्दों, चनौवतयों को ु ु िोड़े िान े का प्रयास करना चावहए । विद्यार्थी इस अिस्था में मानवसक रूप से पररपक्ि होना शरू हो िाते ु ह ैं तो वशक्षकों द्वारा उनमे राष्ट्रीय और अतराभष्ट्रीय मद्दों पर व्यापक द्दवष्टकोि , विश्व की बेहतर समझ, ु ं पररितभन को समझन े का द्दवष्टकोि, सकारात्मक आलोचन की क्षमता तथा ्रारतीय सविधान में िविभत ं मलयों िैसे समानता, स्ितत्रता, न्याय, बधत्ि, धमभवनरपेक्षता इत्यावद का विकास हो । िह कक्षा में प्राप्त ू ु ं ं ज्ञान का प्रयोग अपने िीिन दवै नक िीिन में कर सकें । उच्चतर माध्यवमक स्तर पर र्गोल, इवतहास, ू रािनीवत शास्त्र, अथभशास्त्र के साथ समािशास्त्र, और मानि विज्ञान अलग-अलग प्रपत्र के रूप में पाठ्यचयाभ के अतगभत शावमल वकए िाते ह ैं । इस स्तर के पश्चात अवधकाँश विद्यार्थी अपनी ् ् ं विश्वविद्यालयी वशक्षा प्रारर् करते ह ैं अतः इस स्तर पर उन्ह ें इन विषयों पर मिबत पकड़ बनानी चावहए ू ं विससे िह आगामी वशक्षा के वलए मिबत आधारस्तर् द े सकें । ू ं 3.3.5 कला विद्यालयों में कला की वशक्षा अवनिायभ ह ै और यह कला तथा सौन्दयबभ ोध की वशक्षा कई रूपों में दी िाती ह ै । शैक्षविक विषय/ससाधन के रूप में कला में वकन चीिों को सवममवलत वकया िाना चावहए तथा ं इसकी प्रावप्त वकस प्रकार हो सकती ह,ै ये सोचन े से पिभ इसका वनधाभरि करना अवधक आिश्यक ह ै वक ू कला को शैक्षविक विषय/ससाधन के रूप में क्यों शावमल वकया िाए । वकसी सशक्त दाशभवनक आधार के ं अ्िा में कला वशक्षि मात्र एक अनौपचाररक कायभिम बन कर रह िाएगा या वफर पाठयिम में ् सवममवलत होने के कारि इसे नीरस ढग से वियावन्ित कर वदया िाएगा िैसा अवधकाश विद्यालयों में ं ं अब तक होता रहा ह;ै िो कदावप कला वशक्षि का उद्दश्े य नहीं ह ै । पाठ्यचयाभ में कला विषय का होना और समय-साररी में कला

समबन्धी विशेष कक्षा होना ् आिश्यक ह ै। यह र्ले ही सप्ताह में एक कक्षा ही क्यों न हो पर कला की कक्षा अलग होना आिश्यक ह।ै इसके द्वारा विद्याथी कला को समझन,े उसको सीखने, इसके अन्िषि के साथ सही अथों में अपनी ि्राावर्व्यवक्त और समालोचना करना सीख सकते ह ैं । प्रारवर्क वशक्षा में कला वशक्षि को पाठयचयाभ में सवममवलत वकए िान े के पीछे का मख्य उद्देश्य ् ु ं यह ह ै वक विद्याथी वशक्षा प् र्ििन दोनों में ही कला की महत्िपभ र्वमका को समझ सकें । कला वशक्षा ू ू ं के वलए समय-समय पर विवर्न्न आयोगों, सवमवतयों न े सझाि वदए ह ैं और उनके प्रवतिेदन में कला और ु सौन्दयभबोध की वशक्षा हते अनशसा की गयी ह ै । कला को एक मख्य विषय के रूप में शावमल करने के ु ु ु ं साथ विवर्न्न विषयों के साथ िोड़ कर पढ़ाना चावहए । राष्ट्रीय पाठयचयाभ की रुपरेखा-2005 में र्ी ् विवर्न्न विषयों को सहसमबवन्धत कर पढ़ाने पर बल वदया गया ह ै। राष्ट्रीय शैवक्षक अनसन्धान और ु प्रवशक्षि पररषद द्वारा प्रकावशत आधार पत्र 2009; िो प्राथवमक से उच्चतर माध्यवमक स्तर की कक्षाओ ं ् में कला सगीत नत्य और रगमच के वशक्षि से समबवधत ह;ै में यह अनशवसत वकया गया ह ै वक

Quotes detected: **0.08%** id: **62**

'कला ृ ु ं ं ं ं ं उत्तराखण्ड मक्त विश्वविद्यालय 39 ु CPS -2 वशक्षा को सर्ी विषयों के साथ िोड़ा िाना चावहए और विवर्न्न अिधाररिाओ को पढ़ाने के वलए एक ं माध्यम के रूप में इस्तेमाल करना चावहए विशेषकर कक्षाओ I, II एि III में'

। इसके साथ ही इस ं ं आधार पत्र में आगे अनशसा की गयी ह ै वक विद्यावथभयों को रचनात्मक कायों में सलनन करना चावहए ु ं ं तावक उनकी सविय सहर्ावगता सवनवश्चत हो सके । इसके साथ ही अलग

Plagiarism detected: **0.05%** https://hindialphabet.com/ id: **63**

प्रकार की कला के वलए ु अलग-अलग कालाश हों । ं कला तथा सौन्दयबभ ोध के माध्यम से विद्यावथभयों के अन्दर वशक्षकों को इस प्रकार क

ी योनयता की विकास करना चावहए वक िह अपने स्थानीय िाताविरि से समबवधत सकलपनाओ की पहचान सकें तथा ं ं ं उनका विकास कर सकें । वचत्रकला, मवतभकला, नत्य, गायन, िादन, नाटक, पेंवटग, कठपतली का खेल ृ ू ु ं और इनके िैसी कला की अन्य अनके ों विधाए बच्चों की सिनात्मकता और सक्ष्म-गामक कौशलों का ृ ू ं विकास तथा विवर्न्न मलयों का विकास करती ह ैं । विविध कलाओ के वशक्षि के द्वारा प्रारवर्क कक्षा के ू ं ं छात्र को सीखन े के समस्त क्षेत्रों में लार्ावन्ित होंगे साथ ही साथ वनवश्चत कला के द्वारा वमली सराहना से िह आत्मविश्वास हावसल करते ह ैं साथ ही स्ि-मलयाकन र्ी कर पाते ह ैं और यही कला वशक्षा का उद्दश्े य ू ं ह ै । अभ्यास प्रश्न 5. सामविक विज्ञान के अतगभत वकन वकन विषयों को शावमल वकया िाता ह?ै ं 6. कला वशक्षा के माध्यम से वशक्षकों को विद्यावथभयों में वकन गिों का विकास करना चावहए? ु 3.3.6 कप्यटि क्रवज्ञान ू ं ितभमान यग तकनीकी और प्रौद्योवगकी का यग ह ै ।और तकनीकी और प्रौद्योवगकी की कलपना वबना ु ु कप्यटर के नहीं की िा सकती । समय और समिा की माग के अनसार वशक्षा और वशक्षि सस्थाए पवतभ ू ु ू ं ं ं ं करते ह ैं तो इस पवतभ हते विद्यालयों में कप्यटर विज्ञान ितभमान समय में एक अहम विषय ह ै । यह प्राथवमक ू ु ू ं कक्षाओ से ही पाठयचयाभ में सवममवलत वकया िा रहा ह ै विसका उद्दश्े य कप्यटर के क्षेत्र में ऐसे पशे ेिरों को ् ू ं ं तैयार करना ह ै िो समिा की प्रगवत हते कप्यटर का प्रर्ािी उपयोग कर सकें । हालावक इस वदशा में ु ू ं सबसे बड़ी समस्या हमारे देश में बवनयादी सविधाओ का अर्ाि ह ै । हमारे दशे में विसकी िनसख्या विश्व ु ु ं में दसरे स्थान पर ह,ै यहााँ के प्रत्यके विद्यालय में पयाभप्त सख्या में कप्यटर को महयै ा कराना एक बहत बड़ी ू ु ं ं ू चनौती ह ै । इसके साथ ही सर्ी विद्यालयों में कशल वशक्षकों की र्ती र्ी टेढ़ी खीर ह ै । शहरी और ु ु ग्रा

Plagiarism detected: **0.07%** https://mycoaching.in/hindi-varnamala + 4 resources! id: **64**

मीि क्षेत्रों में पयाभप्त अन्तर र्ी कप्यटर वशक्षा के वलए एक समस्या ह ै तो इस हते वकसी बीच के रास्ते ू ु ं को तलाश करने की आिश्यता ह ै । हमारे शहरी और ग्रामीि क्षेत्र

ों के विद्यालयों में दी िाने िाली वशक्षा में पयाभप्त अन्तर र्ी ह ै इस अन्तर को समाप्त करने या कम करन े के वलए कप्यटर वशक्षा एक किी के रूप ू ु ं ं उत्तराखण्ड मक्त विश्वविद्यालय 40 ु CPS -2 में काम कर सकती ह ै । इसके वलए कप्यटर वशक्षा से समबवधत पाठयचयाभ में व्यापक पररितभन लाने की ् ू ं ं आिश्यकता ह ै । 3.3.7 शािीररक एि स्वास्थ्य सम्बन्िी क्रशक्षा ं कहा िाता ह ै वक एक स्िस्थ शरीर में एक स्िस्थ मवस्तष्क वनिास करता ह.ै यवद कोई व्यवक्त शारीररक रूप से स्िस्थ ह ै तो यह उममीद की िाती ह ै वक िह मानवसक रूप से र्ी स्िस्थ होगा. स्िास्थ्य व्यवक्त को के िल शारीररक रूप से ही हृष्ट-पष्ट नहीं बनाता बवलक मानवसक और बौविक विकास को र्ी प्रर्ावित ु करता ह.ै अतः पाठयचयाभ में स्िास्थ्य और शारीररक वशक्षा को रखा िाना महती आिश्यक ह.ै ् शारीररक वशक्षा स्िास्थ्य से िड़ी हई ह ै और स्िास्थ्य वशक्षा वकसी के वलए र्ी अत्यन्त ु महत्िपभ ह.ै स्िास्थ्य में शारीररक के साथ साथ मानवसक स्िास्थ्य र्ी िड़ा ह ै । और यह के िल शारीररक ू ु ि मानवसक विकास के साथ ही नहीं िड़ा ह ै बवलक शैवक्षक, सामाविक, आवथभक विकास को र्ी प्रत्यक्ष ु रूप से प्रर्ावित करता ह ै । यह बच्चे को मात्र शारीररक रूप से हृष्ट-पष्ट दखे ने से ही समबवधत नहीं ह ै ु ं बवलक विद्यालय में सही समय पर नामाकन, कक्षा में उपवस्थवत, कक्षा के अन्य विद्यावथभयों के साथ ं समायोिन, पढन े में रूवच, कक्षा में वनष्पादन, विद्यालय में अन्य विद्यावथभयों और वशक्षकों के प्रवत प्रदवशभत व्यिहार; सर्ी को प्रर्ावित करता ह ै । सवक्षप्त में कहा िाए तो यह विद्याथी के समग्र विकास से िड़ा ह ै । ु ं विद्यालय में शारीररक वशक्षा दने े का इवतहास र्ी पराना ही ह ै । 1940 के दशक में विद्यालयों

के ु वलए विस्तत स्ािस्थ्य कायभिम बनाया गया विसके छः घटक थे- स्ािस्थ्य सेिा, स्िच्छ स्कल पयाभिरि, ृ ू दोपहर का िोिन, स्ािस्थ्य और शारीररक वशक्षा । विद्यालयों में सिी कक्षाओ में बच्चे के शारीररक विकास और पोषि पर ध्यान वदया िाता ह;ै ं विशेषकर पिभ प्राथवमक और प्राथवमक कक्षाओ के विद्यावथभयों को समवचत िोिन और दखे िाल की ू ु ं िरुरत होती ह ै क्योंवक यह बच्चे के विकास की सबसे अहम अिस्था होती ह ै । देश में िहााँ एक बड़ी िनसख्या गरीबी रेखा ने नीचे वनिास करती ह ै िहााँ उन पररिारों से िड़े बच्चों को पौवष्टक िोिन उपलब्ध ु ं कराना सरकार की विममेदारी ह ै और यही कारि ह ै वक सरकार के द्वरा पिभ प्राथवमक से लेकर उच्च ू प्राथवमक स्तर पर मध्याह्न िोिन योिना प्रारर् की गयी थी । इसका इवतहास अत्यन्त पराना ह ै । मध्याह्न ु ं िोिन सबसे पहले फ्ांस में 1925 में प्रारर् हई थी । 1980 के दशक में यह गिरात, के रल और शेष ु ं तवमलनाड में शरू हई परन्त कें ि स्तर पर यह 15 अगस्त 1995 को प्रारर् की गयी । विद्यालयों में ु ु ु ं वनयवमत स्ािस्थ्य िााँच िी इसी स्ािस्थ्य और शारीररक वशक्षा का ही िाग ह ै । इसके अवतररक्त खेल, व्यायाम, सफाई समबन्धी कायभिम, पयाभिरि सरक्षि िी इसके अतगभत आते ह ैं । ं ं दशे में यौन वशक्षा को लेकर काफी विरोध का सामना करना पड़ता ह ै । सबसे बड़ी समस्या इसके नाम को लेकर ह ै क्योंवक यौवनकता से िड़े से मसलों पर बात करना हमारे दशे में िविभत िैसा माना िाता ह ै । अतः ु पाठयचयाभ विशेषज्ञों को यह प्रयास करना चावहए वक यौवनकता से िड़े मद्दों को शारीररक वशक्षा के ् ु ु उत्तराखण्ड मक्त विश्वविद्यालय 41 ु CPS -2 अतगभत रखा िाए क्योंवक इससे विद्यावथभयों के प्रश्नों और रम ािवतयों का वनिारि िी होगा और नाम को लेते ं ं हए कोई समस्या लोगों को नहीं होगी । कक्षाओ में वबना वकसी पिाभग्रह के सिी के वलए यौन वशक्षा को ू ं शावमल वकया िाना चावहए । कक्षा के स्तर के अनसार पाठों को शावमल करना चावहए । ु HIV/AIDS िैसी समस्याओ के समाधान के वलए शारीररक वशक्षा में इससे समबवधत पाठ को ं ं शावमल करना चावहए और इसकी वशक्षा दी िानी चावहए । इसके अवतररक्त पाठयचयाभ में ड्रनस, तथा अन्य ् प्रकार के नशे से समबवधत समस्याओ को पढ़ाया िा सकता ह ै । ं ं शारीररक वशक्षा में स्काउट-गाइड, राष्ट्रीय सेिा योिना, राष्ट्रीय कै डेट कोर को िी शावमल करना चावहए । ये सिी मात्र शारीररक विकास से ही समबवधत नहीं ह ै बवलक व्यवक्तत्ि के सिांगीिविकास में िी ं योगदान करता ह ै । राष्ट्रीय कै डेट कोर के िवनयर विग और वडिीज़न को उच्च प्राथवमक और माध्यवमक ू ं स्तर पर और उच्चतर माध्यवमक स्तर पर सीवनयर विग या वडिीज़न में िागीदारी लेन े के वलए विद्यावथभयों ं को प्रोत्सावहत वकया िा सकता ह ै । शारीररक वशक्षा म ें शावमल सिी घटकों से समबवधत वशक्षा को अन्य ं विषयों िैसे, गवित, विज्ञान, िाषा या कला िैसा ही महत्ि दने ा चावहए । वनयवमत स्ािस्थ्य िााँच के वलए डॉक्टर तथा सहायक वचवकत्साकमी वनयवमत रूप से विद्यालय में आन े चावहए ।लड़वकयों के वलए यह और िी आिश्यक ह ै क्योंवक उनकी शारीररक और स्ािस्थ्य समस्याए लड़कों की तलना में अवधक ु ं िवटल होती ह ैं और उनका वनिारि वकया िाना आिश्यक ह ै ।लड़वकयों के वलए मवहला डॉक्टर और नसभ होनी चैये विससे ि अपनी समस्याओ पर खल कर बात कर सकें । शारीररक वशक्षा के वलए विद्यालय में ु ं एक अध्यापक होना चावहए ।वकशोररयों के वलए एक मवहला वशक्षक होनी चावहए । शारीररक वशक्षा में मात्र सैिावतक कक्षायें ही नहीं होनी चावहए बवलक प्रायोवगक होनी चावहए । ं विद्यावथभयों को खेल के मैदान में ले िाना चावहए । िो िी स्थानीय खेल हों उन्ह ें सवममवलत करने चावहए वहस्से कम झाचभ में विद्यावथभयों को खेल सामग्री उपलब्ध हो सके । समय-समय पर प्रवतयोवगताओ का िी ं आयोिन कराया िाना चावहए । अन्य विषयों की िावत इसकी िी परीक्षा होनी चावहए और इसके वलए ं मलयाकन में अक नहीं बवलक ग्रडे वदए िाने चावहए । ू ं ं अभ्यास प्रश्न 7. कप्यटर वशक्षा के मागभ में हमारे दशे में सबसे बड़ी चनौवतयााँ क्या ह ैं ? ू ु ं 8. कें ि स्तर पर मध्याह्न िोिन योिना कब शरू की गयी थी? ु 3.3.8 शाक्रत क्शक्षा ं ितभमान समय में समपिभ विश्व विस प्रिाह वस्थवत से गिर रहा ह,ै इन पररवस्थवतयों में शावत वशक्षा अत्यत ू ु ं ं िरुरी हो िाती ह.ै और यह िी आिश्यक ह ै वक यह मात्र पस्तकीय ज्ञान बनकर न रह िाय े बवलक ु उत्तराखण्ड मक्त विश्वविद्यालय 42 ु CPS -2 विद्याथी इसे अपने िीिन में उतारें अतः इसके वलए यह आिश्यक हो िाता ह ै वक यह विषय प्रारवर्क ं वशक्षा में ही पाठयिम में सवममवलत कर वदया िाए और इसे इस तरह से पढ़ाया िाये वक इससे समबवधत ् ं ं बातों को बच्चों में बीिारोवपत वकया िा सके . बीिारोवपत करने का आशय यहााँ यह ह ै वक िब िी विद्यावथभयों को अपने दवै नक िीिन वकसी समस्यात्मक वस्थवत में प्रवतविया करनी हो िह ससगत तरीके से ु ं शावत के साथ ही प्रवतविया करें और इसके वलए शावत से िड़े मलयों का बीिारोपि वकया िाना ु ू ं ं आिश्यक ह.ै और यही कारन ह ै वक शावत वशक्षा को पाठयचयाभ में शावमल करना अवनिायभ ह.ै ् ं आि का यह दौर वहसा का दौर बन चका ह।ै व्यवक्त के अन्दर का विघटन समबिभ राष्ट्र और ु ु ं विश्व को अपन े चपेट में ले चका ह ै और यह विघटनकारी प्रिवतयााँ वनत नए रूप में वहसा के रूप में सामने ृ ू ं आ रही ह।ैं यह सोचन े और समझने िाली बात ह ै वक व्यवक्त विस रूप में वहसक हो उठा ह ै और विस ं तरह का व्यिहार प्रदवशभत कर रहा ह,ै उस वस्थवत में उस व्यवक्त का अतस वकतना विकत और नगन होगा ृ ं िहााँ मानिता वबलकल नहीं बची होगी। धावमभक उन्माद, कट्टरता, िोध, वहसक गवतविवधयााँ, हर दसरे के ु ं ू वलए सममान का अिाि, असवहष्िता, मलयों की कमी लगिग हम सब के अन्दर आ गयी ह ैं िो िक्त ु ू विकृत शब्दों या कत्यों के द्वारा बाहर वनकलती रहती ह।ैं ऐसे में आिश्यकता ह ै वक हर स्तर पर चाह े यह ृ एक व्यवक्त का दसरे व्यवक्त से हो, एक समह का दसरे समह से हो या एक राष्ट्र का दसरे राष्ट्र से, इन सिी ू ू ू ू ू स्तरों पर वििादों को सलझाने के वलए वकसी िी प्रकार की वहसा का सहारा न वलया िाए। एक शावब्दक ु ं वहसा िी आगे चलकर विकृत रूप ले लेती ह।ै राष्ट्रीय पाठयचयाभ की रुपरेखा-2005 में िी यह उवललवखत ् ं ू वकया गया ह ै वक “िैवश्वक, राष्ट्रीय एिं स्थानीय स्तर पर बढ़ती हई वहसा के चलते राष्ट्रीय स्कली ू ं ं पाठयचयाभ के ढाचे के इस दस्तािेि में शावत की वशक्षा का स्थान बाध्य रूप से स्पष्ट ह।ै शावत स्थावपत ् ं ं ं करने की दीघभकावलक प्रविया में वशक्षा एक महत्िपिभ आयाम ह”ै । क्योंवक वशक्षा ही िह मागभ ह ै विसके ू द्वारा अतराभष्ट्रीय सद्भाि, विश्व-बधत्ि, राष्ट्रीयता, विविधता की समझ, विविन्न सस्कवतयों के प्रवत आदर ृ ु ं ं ं का िाि, समानता, न्याय एिं सहनशीलता िैसे

मलयों ि शावत के वलए आश्यक ह,ैं उन मलयों को ू ू ं ं विकवसत वकया ि सकता ह ै । ितभमान समय में घर और बाहर का ितािरि मलयों का ह्रास वकए ि रह े ह।ैं टटते पररिार, ू ू क्षररत होते समबन्ध, स्िाथभपरता के मध्य घर में ्री बच्चों में सही मलयों का बीिारोपि नहीं हो रहा ह ै । ू इसके साथ में यह ्री ह ै वक आि के समय में विस प्रकार की वशक्षा विद्यालयों में दी ि रही ह ै उनमें ्री मलयों का अिा्ि ह ै और यही कारि ह ै वक यह वशक्षा वहसा को और बढ़ािा द े रही ह।ै आि के समय में ू ं विद्यावथभयों को वहसक और आपरावधक गवतविवधयों में वलप्त दखे ा ि सकता ह ै । िब वशक्षा द्वारा इन ं मलयों का विकास वकया ि सकता ह ै और विद्यालयों में ही विद्यावथभयों में अन्दर विघटनकारी शवक्तयों को ू बढ़ािा वदया िाना वदख रहा ह ै तो ऐसे में स्पष्ट ह ै वक वशक्षा अपन े उद्दश्े यों को परा करने में असफल वसि ू हो रही ह।ै अतः आश्यक ह ै वक वशक्षा के उद्दश्े यों को पनःपररा्िावषत वकया िाए, विद्यालयों और ु वशक्षक की र्वमका को वनधाभररत वकया िाए और पाठयचयाभ में आश्यक पररितभन वकया िाय।े इसके ृ ू साथ ही मलयाकन की प्रविया में पररितभन लाया िाए। शावत वशक्षा का मलयाकन वलवखत परीक्षा के ू ू ं ं ं उत्तराखण्ड मक्त विश्वविद्यालय 43 ु CPS -2 माध्यम से ना हो बवलक िषभर्र छात्रों के प्रदशभन के माध्यम से ग्रेड प्रदान वकए िाय ें और एक वनधाभररत ग्रडे स्री विद्यावथभयों द्वारा लाना अवनिायभ हो अन्यथा उन्ह ें पनः उसी प्रविया एि कक्षाओ से गिरना हो । ु ु ं ं विद्यावथभयों को करिीय और अकरिीय चीिों का ज्ञान हो । उनकी अिस्था के अनसार अलग-अलग ु आय समह के विद्यावथभयों के वलए र्वन्न पाठयचयाभ हो । वशक्षकों, माता-वपता और अवर्िािकों को यह ृ ु ू चावहए वक िह विन गिों की अपेक्षा विद्यावथभयों में करते ह ैं िह गि स्िय ्री प्रदवशभत करें और समय- ु ु ं समय पर विद्यावथभयों से उनसे अपेवक्षत व्यिहार के विषय में चचाभ करते रहना चावहए। विद्यावथभयों में वकसी ्री ििवछत व्यिहार को विकवसत करन े के वलए उसको उनके दवै नक िीिन की घटनाओ से ं ं िोड़कर पढ़ाने और वसखाने का प्रयास करना चावहए । 3.3.9 काम आिै क्रशक्षा काम का पाठयचयाभ में आशय श्रम की वशक्षा से ह।ै यह श्रम वशक्षा से समबवधत गवतविवधयों को ृ ं सवममवलत करता ह ै विसमें कछ वनमाभि कायभ वकया िाए। विद्यालयों में दी िान े िाली इस वशक्षा में कई ु गवतविवधयों को वलया ि सकता ह ै । पाठयचयाभ में श्रम से समबवधत वशक्षा महात्मा गाँधी ने बेवसक ृ ं वशक्षा के साथ ही प्रस्तावित की थी । यही नहीं, स्ितत्रता से पिभ ्री विवर्न्न आयोगों और सवमवतयों ने ू ं इसे प्रस्तावित वकया था । काम का आशय वनी उत्पादक कायों से लेकर सामाविक एि प्रशासवनक रूप से उपयोगी ं गवतविवधयों से ह।ै काम के अतगभत हम उन स्री गवतविवधयों को सवममवलत कर सकते ह ैं िो वकसी ्री ं तरह से मनष्य के वहत से समबवधत ह ैं । इन स्री वियाओ की गिना काम के रूप में की ि सकती ह ै । ु ं ं व्यवक्त के िीिन का उद्दश्े य स्िय हते और समाि हते अपेवक्षत उत्तरदावयत्िों का वनिभहन ह ै । वशक्षा और ू ु ं िीिन के उद्दश्े यों को अलग करके नहीं दखे ा ि सकता । वशक्षा का उद्दश्े य िही होते ह ैं िो िीिन के उद्दश्े य ह ैं । वशक्षा प्रयास करती ह ै वक व्यवक्त का सिाांगीि विकास हो, वक िह अपना िीिन वनिाभह कर सके तथा इसके साथ ही समाि के वलए ्री उत्पादक हो और समाि के द्वारा िो ििवछत ह,ै उन स्री का ं वनिभहन िह कर सके । वशक्षा में कायभ या श्रम को शावमल कायभ के पीछे ्री यही उद्दश्े य ह ै । पाठयचयाभ में काम और वशक्षा को सवममवलत करने का उद्देश्य उनके िा्री िीिन के वलए तैयारी ृ ह ै अतः यह नहीं होना चावहए वक काम से समबवधत वशक्षा दने े के पीछे बच्चों के कन्धों पर अत्यवधक ं बोझ डाल वदया िाए। यह प्रयास करना चावहए वक बच्चों से इस ्रावत काम वलया िाए वक उनमें यह ं सीखना लगे और इसे उनके वशक्षा-अवधगम में बाधक नहीं होना चावहए। श्रम को वशक्षा में शावमल करने का उद्दश्े य र्विष्य की तैयारी ह ै और यह इसी प्रकार देना चावहए। श्रम वशक्षा दने े में कछ बातों को ध्यान ु में रखना चावहए। प्रथम वशक्षकों को यह नहीं करना चावहए वक बच्चों को कायभ द ें और स्िय उसमें ्राग न ं लें। इसमें वशक्षक और विद्यावथभयों की परी सह्रावगता होनी चावहए। क्योंवक इस अिस्था में बच्चे बड़ों ू को कायभ करता देखकर उसे सीखते ह।ैं इसके साथ ही समय-समय पर माता-वपता एि अवर्िािकों को ं ्री विद्यालयों के द्वारा आमवत्रत करना चावहए और सवममवलत रूप से कायभ को वकया िाना चावहए ं विसमें विद्यावथभयों, अवर्िािालों, वशक्षकों उर प्रशासकों की पिभ ्रागीदारी हो । इस बात का परा ख्याल ू ू उत्तराखण्ड मक्त विश्वविद्यालय 44 ु CPS -2 रखना चावहए वक वदया गया कायभ बच्चों वक आय के अनसार हो । वशक्षकों को यह ्री सवनवश्चत करना ु ु ु चावहए वक स्री बच्चों की पिभ सह्रावगता ह ै। ू काम को वशक्षा म ें शावमल करना बच्चों को अनशावसत करन े में ्री योगदान करता ह।ै श्रम को ु शावमल करन े से विद्याथी न के िल करना सीखते ह ैं अवपत सामाविकता, सह्रावगता, आत्म-वनयत्रि, ु ं मेलिोल वक ि्राना, कायभ का बटिारा, आत्मवनर्रभ ता, रचनात्मकता इत्यावद सीखता ह।ै साथ ही यह ं आत्मानशासन के वलए ्री काम को वशक्षा में सवममवलत वकया िाना चावहए । ु अभ्यास प्रश्न 9. शावत वशक्षा विद्यावथभयों में वकन गिों का विकास करती ह?ै ु ं 10. कायभ को वशक्षा में शावमल करने का लक्ष्य क्या ह?ै 3.4 सारांश इसप्रकार कहा ि सकता ह ै वक विवर्न्न विषयों को पाठयचयाभ में शावमल करने के बहत ही दरगामी ृ ू लक्ष्य ह ैं । पाठयचयाभ में मात्र िैज्ञावनक और तकनीकी ज्ञान ही नहीं बवलक सामाविक और नैवतकता ृ समबन्धी ज्ञान को सवहत करने का प्रयास वकया िाता ह ै और इनके माध्यम से ज्ञानात्मक, िा्रात्मक और ं वियात्मक क्षेत्रों में उद्दश्े यों की प्रावप्त करते हए विद्यावथभयों का विकास करन े का प्रयास वकया िाता ह ै । 3.5 शब्द ािली 1. 3 R: 3 R में अथाभत पढ़ना, वलखना और गवितीय वियाओ को वलया िाता ह ै । ं 3.6 अभ्य ास प्रश्नों के उत्त र 1. पाठयचया भ का विकास करते समय इस बात का ध्यान रखना अत्यत आश्यक ह ै वक पाठयचयाभ इस ृ ृ ं प्रकार की हो िो बच्चों में सिन शवक्तयों का विकास करे साथ ही साथ इस विकास के वलए िह ृ बोवझल न हो िाए बवलक रोचकता वलए हए हो। 2. िड वडस्पैच-1854 में तीन ्राषाओ ों को पाठयिम में स्थान दने े का सझाि वदया गया था । ृ ु ु 3. उच्च प्राथवमक स्तर के विद्यावथभयों के वलए गवित वशक्षा का उद्दश्े य उनके कक्षा में सीखे गए ज्ञान का सामान्यीकरि, प्राप्त सचनाओ का विस्ताररत उपयोग, कलपना कौशलों का विस्तार तथा वद्वआयामी ू ं और वत्रआयामी समझ को बढ़ान े हते होना चावहए ु उत्तराखण्ड मक्त विश्वविद्यालय 45 ु CPS -2 4. प्राथवमक स्तर पर विज्ञान के माध्यम से बच्चे की विज्ञास प्रिवत और अन्िेषिनात्मक शवक्त का ृ ु विकास करना चावहए।

विद्यावथभयों को उत्सक रूप से अिलोकन करने, नयी चीिों को खोिने, नयी ु पररवस्थवतयों में सामिस्य करने की योनयता विकवसत करनी चावहए । ं 5. सामाविक विज्ञान के अतगभत विन विषयों को शावमल वकया िाता ह ै उनमें इवतहास, र्गोल ू ं रािनीवतशास्त्र, समािशास्त्र, अथभशास्त्र और मानि विज्ञान हैं 6. कला के माध्यम से विद्यावथभयों के अन्दर वशक्षकों को इस प्रकार की योनयता की विकास करना चावहए वक िह अपने स्थानीय िातािरि से समबवधत सकलपनाओ की पहचान सकें तथा उनका ं ं ं विकास कर सकें । वचत्रकला, मवतभकला, नत्य, गायन, िादन, नाटक, पेंवटग, कठपतली का खले और ृ ू ु ं इनके िैसी कला की अन्य अनेकों विधाए विद्यावथभयों की सिनात्मकता और सक्ष्म-गामक कौशलों ृ ू ं का विकास तथा विवर्न्न मलयों का विकास करती ह ैं । ू 7. कम्प्यटर वशक्षा के वलए हमारे दशे में सबसे बड़ी चनौवतयााँ बवनयादी सविधाओ का अर्ाि और ू ु ु ु ु ं ं कशल वशक्षकों की कमी ह ै । ु 8. कें द्र स्तर पर मध्याह्न र्ोिन योिना 15 अगस्त 1995 को शरू की गयी थी । ु 9. शावत वशक्षा विद्यावथभयों में अतराभष्रीय सद्भाि, विश्व-बधत्ि, राष्रीयता, विविधता की समझ, विवर्न्न ु ं ं ं सस्कवतयों के प्रवत आदर का र्ाि, समानता, न्याय एि सहनशीलता िैसे मलयों का विकास करती ृ ू ं ं ह।ै 10. काम को वशक्षा म ें शावमल करने का लक्ष्य विद्यावथभयों को अनशासन, सामाविकता, सहर्ावगता, ु आत्म-वनयत्रि, मेलिोल वक र्ािना, कायभ का बटिारा, आत्मवनर्भरता, रचनात्मकता इत्यावद गिों ु ं ं का बीिारोपि ह ै । 3.7 सदंर् भग्रंथ सची ू 1. NCERT (2005). National Curriculum Framework 2005. New Delhi: National Council of Educational Research and Training. 2. NCERT (2009). Position Paper National Focus Group on Arts, Music, Dance and Theatre. New Delhi: National Council of Educational Research and Training. 3. राष्रीय शैवक्षक अनसन्धान और प्रवशक्षि पररषद (2005). राष्रीय पाठयचयाभ की रुपरेखा ् ु ् 2005। नयी वदलली: राष्रीय शैवक्षक अनसन्धान और प्रवशक्षि पररषद। ु ् 4. राष्रीय शैवक्षक अनसन्धान और प्रवशक्षि पररषद (2009). कला, सगीत, नत्य और रगमच ृ ु ं ं ं ् राष्रीय फोकस समह का आधार पत्र। नयी वदलली: राष्रीय शैवक्षक अनसन्धान और प्रवशक्षि ू ु पररषद। ् उत्तराखण्ड मक्त विश्वविद्यालय 46 ु CPS -2 5. राष्रीय शैवक्षक अनसन्धान और प्रवशक्षि पररषद (2009). र्ारतीय र्ाषाओ ों का वशक्षि राष्ट्रीय ु ् फोकस समह का आधार पत्र । नयी वदलली: राष्रीय शैवक्षक अनसन्धान और प्रवशक्षि पररषद। ू ु ् 6. राष्रीय शैवक्षक अनसन्धान और प्रवशक्षि पररषद (2008). गवित वशक्षि । राष्ट्रीय फोकस समह ु ू ् का आधार पत्र । नयी वदलली: राष्रीय शैवक्षक अनसन्धान और प्रवशक्षि पररषद। ु ् 7. राष्रीय शैवक्षक अनसन्धान और प्रवशक्षि पररषद (2007). सामविक विज्ञान का वशक्षि राष्ट्रीय ु ् फोकस समह का आधार पत्र । नयी वदलली: राष्रीय शैवक्षक अनसन्धान और प्रवशक्षि पररषद। ू ु ् 8. राष्रीय शैवक्षक अनसन्धान और प्रवशक्षि पररषद (2010). शावत के वलए वशक्षा । राष्ट्रीय ु ं ् फोकस समह का आधार पत्र । नयी वदलली: राष्रीय शैवक्षक अनसन्धान और प्रवशक्षि पररषद। ू ु ् 9. राष्रीय शैवक्षक अनसन्धान और प्रवशक्षि पररषद (2008). विज्ञान वशक्षि । राष्ट्रीय फोकस ू ् समह का आधार पत्र । नयी वदलली: राष्रीय शैवक्षक अनसन्धान और प्रवशक्षि पररषद। ू ु ् 10. राष्रीय शैवक्षक अनसन्धान और प्रवशक्षि पररषद (2008). स्िास्थ्य और शारीररक वशक्षा ु ् राष्ट्रीय फोकस समह का आधार पत्र । नयी वदलली: राष्रीय शैवक्षक अनसन्धान और प्रवशक्षि ू ु पररषद। ् 3.8 वनबधात्म क प्रश्न ं 1. र्ाषा का पाठयिम में होना क्यों आिश्यक ह?ै प्रकाश डालें । ् 2. विवर्न्न विद्यालयी स्तरों पर गवित वशक्षा की र्वमका को स्पष्ट करें । ू 3. "विज्ञान और सामाविक विज्ञान वशक्षि दोनों ही विषय विद्यालयी स्तर पर समान रूप से आिश्यक ह"ैं इस कथन के पक्ष में अपन े विचार प्रस्तत करें । ु 4. शावत वशक्षा और कला की वशक्षा वकस प्रकार स्िस्थ और सिि समाि का वनमाभि कर सकते ृ ं ह?ैं आप अपनी कक्षा के विद्यावथभयों को स्िस्थ और सिि समाि के वनमाभि हते वकस प्रकार ृ ु प्रेररत कर सकते ह?ैं अपन े विचार प्रस्तत करें । ु उत्तराखण्ड मक्त विश्वविद्यालय 47 ु CPS -2 इकाई 4- विद्यालयीय पाठ्यक्रम में विषय-िस्त ु का चयन एि अनक्र ु मण 4.1 प्रस्तािना 4.2 उद्दश्े य 4.3 विषय-िस्त चयन का वसद्धात ु ं 4.3.1 िैधता का वसद्धात ं 4.3.2 साथभकता का वसद्धात ं 4.3.3 सतलन का वसद्धात ु ं ं 4.3.4 स्िवि-समपभता का वसद्धात ू ं ं 4.3.5 रोचकता का वसद्धात ं 4.3.6 उपयोवगता का वसद्धात ं 4.3.7 साध्यता का वसद्धात ं 4.4 विषय-िस्त सरचना एि घटकों का एकीकरि ु ं ं 4.4.1 सज्ञानात्मक

Plagiarism detected: **0.03%** https://mycoaching.in/hindi-varnamala + 4 resources! id: **65**

क्षेत्र की विषय-िस्त ु ं 4.4.2 र्ािात्मक क्षेत्र की विषय-िस्त ु 4.4.3 वियात्मक क्षेत्र

की विषय-िस्त ु 4.5 विषय-िस्त अनिम का वसद्धात ु ु ं 4.5.1 अनिम की आधारर्त पररसकलपना ु ू ं 4.5.2 अनिम की विवधया ु ं 4.6 साराश ं 4.7 शब्दािली 4.8 अभ्यास प्रश्नों के उत्तर 4.9 सन्दर्भ ग्रन्थ सची ू 4.10 वनबधात्मक प्रश्न ं 4.1 प्रस्तावना वपछली इकाइयों को अध्ययन करन े के पश्चात आप यह समझ गए होंगे की ज्ञान (knowledge) क्या होता ् ू ह ै एि वकसी समपभ ज्ञान के स्रोत क्या क्या होते ह ै । एक ही तरह के वमलते िलते ज्ञान, िो मानि ू ु ं उत्तराखण्ड मक्त विश्वविद्यालय 48 ु CPS -2 मवस्तष्क के वकसी विशेष र्ाग को प्रर्ावित करते हो, को आम र्ाषा में विधा (discipline) कहा िा सकता ह ै । वकसी र्ी विधा में पाय े िाने िाले ज्ञान को अगर ध्यानपिभक एि पिभ सािधानता के साथ ू ू ं विश्लेषि कर िगीकत वकया िाए, तो प्रत्येक िगभ को हम एक विषय

Plagiarism detected: **0.1%** https://mycoaching.in/r-ke-roop-prakar-matra-s… + 3 resources! id: **66**

के रूप में प्राप्त करेंगे । सरल शब्दों में ृ कहा िाय े तो विवशष्ट रूप से िगीकत ज्ञान को विषय के रूप में समझा िा सकता ह ै एि वमलते िलते ृ ु ं विषयों से ही एक विधा का िन्म होता ह ै । िब बात वकसी विद्यालयी पाठयिम की होती ह ै त

ो हम पाते ् ह ै की अलग अलग विधाओ से कछ विषयों का चयन कर आमतौर पर पाठयिम बना वदया िाता ह ै । ् ु ं हालावक इस दौरान बालकों की मनोिैज्ञावनक स्तर, उनकी अवर्रुवच एि समबवधत अन्य कारकों का ं ं ध्यान रखा िाता ह ै । इस

वलए एक वशक्षक या िरी वशक्षक होने के नाते यह हमारी िरुरत बन िाती ह ै की हमें यह पता रह े की वकसी विषय में समावहत होने िाले ज्ञान, विसे हम विषयिस्त ्री कहते ह,ै कौन ु कौन से ह ै या होने चावहए । विषयिस्त के चयन के समय हमें क्या क्या ध्यान में रखना चावहए । विषय- ु िस्त का अनिम क्या होना चावहए एि इस अनिम को कै से तैयार वकया िाय े । िितभमान इकाई में ु ु ु ं हमलोग इस बात पर अपना ध्यान के वन्िित करेंगे की वकसी विद्यालयी पाठयिम में विषयिस्त का चयन ्ु ु एि अनिम कै से वकया िाये एि इसके वलए कौन सी विवधया उपयक्त ह ै । ु ु ं ं ं 4.2 उद्दश्े य प्रस्तत इकाई को अध्ययन करन े के पश्चात आप- ु 1. विषयिस्त चयन से समबवधत महत्िपिभ वसान्तों को बता सकें गे । ु ू ं 2. विषयिस्त सरचना से समबवधत घटकों का िििभन कर सकें गे । ु ं ं 3. विषयिस्त के विवर्न्न घटकों के एकीकरि की प्रवि़या को समझा सकें गे । ु 4. विषयिस्त अनिम की विवधयो ंँ को समझा सकें गे । ु ु 5. विषयिस्त की अनिम की विवधयो ंँ को ध्यान में रखते हए वकसी ्री विषयिस्त का अनिमि ु ु ु ु कर सकें गे। 4.3 ववषय-वस्तु चयन का वसद्ातं क्या आप िानते ह ै की वकसी पाठयिम को आप सफल कै से बना सकते ह ै ? वकसी ्री पाठयिम को ् ् समपिभ एि सफल बनाने के वलए यह िरुरी ह ै की िह अपने शैक्षविक उद्देश्यों को प्राप्त कर सके और साथ ू ं ही साथ अपने सरचना में समिा को प्रवतवबवबत कर सके ; अथाभत पाठयिम अपन े स्री विषयों के ् ं ं माध्यम से एक समपिभ समिा को दशाभता हो । अब प्रश्न यह ्री उठ खड़ा होता ह ै की सफल पाठयिम के ् ू वलए उसमे ऐसा क्या होना चावहए ? इसका उत्तर ह ै सटीक विषयिस्त । यह विषयिस्त ही ह ै िो ु ु पाठयिम की सफलता या असफलता को वनधाभररत कराती ह,ै िैसे – कौनसा विषयिस्त ह?ै क्या िह ् ु इस पाठयिम के वलए सही ह ै ? क्या विषयिस्त बालकों के वलए रोचक ह ै ? आवद । ध्यान दने े योनय ् ु बात यह ह ै की इस प्रकार के स्री प्रश्न विषयिस्त के चयन से समबवधत ह ै । इसका मतलब ह ै की एक ु ं उत्तराखण्ड मक्त विश्वविद्यालय 49 ु CPS -2 अच्छा पाठयिम उसमे वनवहत होन े िाले विषयिस्त ि उसकी गिित्ता पर वनर्भर करता ह ै । इन्ही विषय- ् ् ु ु िस्त की गिित्ताओ को परखन े के वलए

Quotes detected: **0.01%** id: **67**

'विषयिस्त के चयन का वसात'

का प्रवतपादन वकया गया ह ै । ु ु ु ं ं विषयिस्त के चयन का वसात (Principle of content selection) मलत:सात अलग अलग ु ू ं वसातों का समच्चय ह,ै विनके बारे में हम िमश चचाभ करेंगे । ु 4.3.1 वैता का क्रसात (Principle of Validity) ं िैधता का वसात वकसी विषयिस्त की िैधता के आधार पर विषय में या पाठयिम में उसके चयन की ् ु ं बात करता ह ै । विषयिस्त की िैधता को दो अलग तरीके से वसि वकया िा सकता ह,ै यथा – ु प्रथमत: विस विषय के विषयिस्त का चयन होना ह,ै विषयिस्त उसी विषय के ज्ञान क्षेत्र से समबवधत ु ु ं होना चावहए । एक उदहारि के माध्यम से हम इसे समझने की कोवशश करते ह ै । मान लीविये आपके इवतहास से समबवधत वकसी विषयिस्त का चयन करना ह ै तो इस वसात के अनसार विषयिस्त का ु ु ु ं ं क्षेत्र इवतहास से ही समबवधत होना चावहए वकसी और विषय से नहीं । ं क्रितीयत: विषयिस्त उस विषय के वलए पहले से वनधाभररत वकय े गए उद्दश्े यों को प्राप्त करने में सहायक ु वसि होना चावहए । दसरे शब्दों में कह े तो विषयिस्त विषय या पाठयिम के उद्दश्े यों के द्दवष्टकोि से िैध ् ु ू होना आिश्यक ह ै । मान लीविय े आप र्गोल विषय पढ़ा रह े ह ै विसका एक उद्दश्े य बालकों को गगा नदी ू ं के गवतपथ के बारे में आिश्यक िानकारी देना ह ै । अत: इस उद्दश्े य की प्रावप्त के वलए आपका विषयिस्त ु गगा नदी एि उसके उद्गम से सागर तक के स्िर स े समबवधत होना चावहए । अगर ऐसा नहीं ह ै तो आप ं ं ं पाठ के उद्दश्े यों को प्राप्त नहीं कर पायेंगे और आपका विषयिस्त अैध माना िायगे ा । ु क्रचत्र 1. वै क्रवषय-वस्त का परिसीमन ु क्रवषय वस्त ु पाठयिम का ् क्र व ष य ज्ञ ा न क्ष े त्र उद्देश्य वै ज्ञान उत्तराखण्ड मक्त विश्वविद्यालय 50 ु CPS -2 4.3.2 साथतकता का क्रसात (Principle of Significance) ं साथभकता के वसात के अनसार वकसी विषयिस्त का चयन त्री साथभक हो सकता ह ै िब िह विषय- ु ु ं िस्त बालकों के अवर्रुची, प्रयोिन आवद को परा करता हो । कोई ्री विषयिस्त तब साथभक समझा िा ु ू ू सकता ह ै िब िह अवधगम वियाओ, कौशलों एि प्रवियाओ को पिभ रुपें प्रदवशभत होने का अिसर प्रदान ू ं ं ं करें एि ज्ञान के तीनो प्रमख क्षेत्रो के विकास में सहायक वसि हो । वकसी विषयिस्त की साथभकता उस ु ु ं समय और ्री महत्िपिभ हो िाती ह ै िब बालकों का समह अलग अलग सामाविक ि सास्कवतक ृ ् ू ू ं पष्ठर्वम से समबन्ध रखते ह ै । सरल शब्दों में कहा िाय े तो िह विषयिस्त साथभक ह ै िो पाठ या ृ ू ु पाठयिम के उद्दश्े यों की प्रावप्त को सवनवश्चत करता हो । ् ु क्रचत्र 2. साथतक अक्रिगम मलयाकन ू ं क्रव ब ा ल ष क य ए क्रवषय पाठयिम ् ि ं उद्देश्य लक्ष्य ि ा व त ा ि स्त ु शवै क्षक र ि वियाए ं 4.3.3 सतलन का क्रसात (Principle of Balance) ु ं ं ं विषयिस्त चयन के वलए सतलन का वसात सिरत: सबसे महत्िपिभ शतों में से एक ह.ै यह वसात ु ु ू ं ं ं ं विषयिस्त चयन से लेकर विषयिस्त की सरचना एि विस्तारि, प्रत्येक स्तर पर कायभ करता ह ै । इस ु ु ं ं वसात के अनसार- ु ं प्रथमत: विषयिस्त चयन के साथ यह ध्यान देना एि सवनवश्चत करना आिश्यक ह ै वक िह विषय िस्त ु ु ु ं ज्ञान के प्रत्यके

Plagiarism detected: **0.03%** https://mycoaching.in/hindi-varnamala + 4 resources! id: **68**

क्षेत्र(सज्ञानात्मक, िात्मक, वियात्मक) को प्रयाप्त रूप में प्रदवशभत करें , अथाभत ं विषयिस्त में तीनों ज्ञान क्षेत्र

ों का प्रयाप्त प्रवतवनवधत्ि रह े एि उनमें सतलन बना रह े । ु ु ं ं क्रितीयत: विषय िस्त चयन के समय विषयिस्त के िवटलता स्तर पर सतलन बने रहना चावहए । ु ु ु ं विषयिस्त इतना सरल नहीं होना चावहए की िह अच्छे एि कमिोर बालकों में विर्दे न कर सके और ु ं इतना िवटल ्री नहीं होना चावहए की िह पन: अच्छे एि कमिोर बालकों में विर्दे न कर सके । ु ं इसवलए विषयिस्त न बहत सरल और न ही िवटल होना चावहए । ऐसा करने से एक फायदा ्री वमलता ु उत्तराखण्ड मक्त

विश्वविद्यालय 51 ु CPS -2 ह।ै कमिोर बच्चे आसान अश हल कर लेंगे तो विषय में उनकी रोचकता बनी रहगे ी । दसरी तरफ ति ं ू बालकों को ॊी यह रोचक लगेगा क्योवक िविटल वहस्सों को हल करन े में उनकी वदलचस्पी बनी रहगे । ततीयत: विषयिस्त विस्तार के समय सतलन का वसित यह कहता ह ै वक वकसी विषयिस्त को इतना ृ ु ु ु ं ं विस्तार न करो विससे वकसी दसरे विषयिस्त के प्रवतनवधत्ि पर प्रश्नवचन्ह बन िाये । इसका मतलब यह ु ू हआ वक वकसी प्रकरि विशेष

Plagiarism detected: **0.04%** https://sanskartutorials.in/hindi-alphabet-hindi-a… id: **69**

को ज्यादा महत्ि दने े पर दसरे प्रकरिों के वलए पाठयिम में स्थान बनाना ृ ू बेहद कवठन हो िाता ह,ै इसवलए प्रत्येक प्रकरि (विषयिस्त) का विस्तार सतवलत मात्रा में होना चावहए । ु ु ं 4.3.4 स्वय-सम्पणतता का क्रसित (Principle of Self-Sufficiency) ू ं ं वकसी विषय िस्त को पढ़ान े के वलए अगर कम से कम ससाधन एि सरल शैवक्षक प्रयास प्रयाप्त हों और ु ं ं इसके फलस्िरूप बालकों का शैवक्षक वनष्पादन आशानरूप हो, तो इस

Plagiarism detected: **0.03%** https://hindialphabet.com/ id: **70**

प्रकार के विषय िस्त को हम ु ु स्िय-सम्पिभ विषय िस्त कह सकते ह.ैं इस प्रकार क े विषयिस्त चयन के समय एि विस्तार विया के ू ु ु ं ं दौरान उन सॊी िरुरी घटकों का इसमें समािेश वकया िाता ह ै िो अनकलतम अवधगम के वलए प्रयाप्त ु ू हो। दसरा यह की स्िय समपिभ विषयिस्त प्रत्येक प्रकरि के वलए प्रयाप्त समय प्रबधन करते हए उनको ू ु ं ं ू सतवलत गहराई तक विश्लेवषत करता ह ै । ु ं 4.3.5 िोचकता का क्रसित (Principle of Interest) ं विषयिस्त के चयन के दौरान रोचकता के वसित का प्रयोग दो स्तरों पर वकया िाता ह ै । पहले तो ु ं विषयिस्त चयन के समय बालकों के समह का ध्यान रखना अत्यन्त आिश्यक ह ै वक िह विषयिस्त ु ू ु वकस स्तर के (उम्र एि मानवसक) बालकों के वलए प्रयोग में लाया िायेगा । उसके अनसार उस विशेष ु ं स्तर के बालकों

Plagiarism detected: **0.05%** https://mycoaching.in/r-ke-roop-prakar-matra-s… id: **71**

की सामान्य अवधगम रीवत, उनकी अवरुवच, मानवसक स्तर का विश्लेषि कर विषयिस्त ु का चयन वकया िाना चावहए । दसरे स्तर पर इस वसित का प्रयोग

विषयिस्त के प्रस्ततीकरि के वलए ु ु ं ू होता ह ै । विषयिस्त का चयन ऐसा होना चावहए िो छात्र के वन्िक अवधगम को प्रोत्सावहत करें । इसके ु फलस्िरूप बालक अपने आप को विषयिस्त को िोड़ पायेंगे एि उनकी रोचकता विषयिस्त में बनी ु ु ं रहगे ी । 4.3.6 उपयोक्रगता का क्रसित (Principle of Utility) ं प्रत्यके छात्र को अपने छात्र िीिन में कछ खास प्रश्नों का सामना करना पड़ता ह,ै िसै - क्या यह विषय ु व्यिसाय/नौकरी में सहायक वसि होगा ? क्या यह विषय मेरे वलए िरुरी ह ै ? क्या यह विषय मेरे समस्याओ का समाधान करेगा ? क्या इसमें मै उत्तीिभ हो िाऊगा ? क्या यह विषय मेरे आतररक ं ं ं क्षमताओ के विकास में सहायक होगा ? यह कछ ऐसे प्रश्न ह ैं विसे आपने ॊी वनवश्चत ही अपने छात्र ु ं िीिन में ॊी सोंचा होगा, सामना वकया होगा । यह सॊी प्रश्न वसफभ एक ही तरफ वनदवे शत करतें ह ैं और िह ह ै उपयोवगता । साफ शब्दों में कह ें तो आप उसी विषय को ज्यादा महत्ि दते े ह ैं िो आपके वलए उपयोगी वसि हो । इसवलए उपयोवगता के वसित के अनसार, विषय िस्त चयन के समय ऐसे घटकों का समािेश ु ु ं उत्तराखण्ड मक्त विश्वविद्यालय 52 ु CPS -2 वकया िाना चावहए , िो बालकों के भिष्य के वलए उपयोगी वसि हो, न की वसफभ विद्यालयी वशक्षा में ृ अच्छे अक प्राप्त करने के उपयोग में आये । ं 4.3.7 साध्यता का क्रसित (Principle of feasibility) ं विषय िस्त चयन के सन्दर् भ में साध्यता का अथभ ह ै अवधगम प्रविया का समपिभ कायाभन्ियन। इसको एक ु ू उदाहरि से समझन े की कोवशश करतें हैं । मान लीविए आप सगिक विषय के अध्यापक ह,ैं कक्षा में ं आपन े वकसी प्रकरि को तीन वदन में समाप्त कर वदया और बालकों को गह कायभ द े वदया । परन्त िो गह ृ ृ ु कायभ आपने वदया उसे परा करन े के वलए बालकों के पास सगिक ह ै ही नहीं, तब ? ऐसा करन े से अवधगम ू ं प्रविया अधरा रह गया, इसका समपिभ कायाभन्ियन नहीं हो पाया । इस वस्थवत में कहा िा सकता ह ै वक ु ू विषयिस्त में साध्यता का आिाि ह ै । मान लेते ह ैं बालकों के पास सगिक ह,ै परन्त उस गहकायभ को परा ृ ु ु ू ं करने में उनको दो सप्ताह का समय लगेगा । अथाभत विस प्रकरि को आपन े तीन वदन में परा वकया, ू िास्तविक रूप से उसे परा होन े में 17 वदन लगेगा । इससे दसरे प्रकरिों के अवधगम पर प्रिाि पड़ना ू ू स्िािाविक ह ै । इस प्रकार के विषयिस्त का चयन नहीं वकया िाना चावहए िो एक वनयत समय के अन्दर ु समपिभ अवधगम प्रविया को कायाभवन्ित करने में असमथभ हों। ू अभ्यास प्रश्न 1. विषय िस्त चयन के वसित में वकन वकन बातों ध्यान रखा िाता ह ै ? ु ं 2. ज्ञान के विवर्न्न पक्षों का नाम वलवखए । 4.4 ववषयवस्तु की संरचना एवं घटकों का एकीकरण वकसी विषय िस्त के चयन के उपरान्त िो समस्या सामने आती ह ै िह ह ै उस विषय िस्त के वलए चयवनत ु ु तथ्य, समप्रत्यय, उदाहरि आवद का अनिम क्या होगा ? इन सब घटकों के प्रस्ततीकरि का िम क्या ु ु होगा और यह कै से तय वकया िायेगा ? कोई ॊी विषयिस्त वसफभ कछ तथ्यों का समच्चय नहीं होता ह ै ु ु ु विसे वकसी ॊी रूप में बालकों के समक्ष प्रस्तत वकया िा सके । प्रत्येक विषय िस्त में ऐसे बहत सारे ु ु घटकों का समािेश करना पड़ता ह ै विससे िह विषय िस्त चयन के वसिन्तों के अनरूप हो सके एि ु ु ं साथ ही साथ बाल के वन्िक वशक्षा या अवधगम को बढ़ािा द े सके । इसके वलए यह महत्िपिभ हो िाता ह ै ू की विषय िस्त के विस्तारि के समय एि प्रस्ततीकरि के समय

Plagiarism detected: **0.07%** https://hindiletter.org/k-se-gya-tak id: **72**

प्रत्येक घटक को उसके सही अनिम में ु ु ु ं स्थान वदया िाये । इसका दसरा फायदा यह होगा की विषयिस्त को अभ्यास के उपरान्त बालकों का ु ू समझ बढ़ेगा एि अवधगम प्रविया को व्य

ापक विस्तार वमलेगा। ं प्रस्तत अन्ुराग में हम लोग यह समझने की कोवशश करेंगे की वकसी ्री विषयिस्त को विस्तार ु ु ु देन े के वलए उसके सरचना म ें कौन-कौन से घटक होने चावहए एि उन घटकों की विवशष्टता क्या ह ै । ं ं उत्तराखण्ड मक्त विश्वविद्यालय 53 ु CPS -2 साधारित: प्रत्येक विषयिस्त तीन घटकों से बना होता ह ै या बनना चावहए, यथा- विषयिस्त का ु ु सज्ञात्मक घटक, विषयिस्त का ि्रात्मक घटक एि विषयिस्त का वियात्मक घटक । इन तीनों प्रकार ु ु ं ं के घटकों पर हम िमानसार चचाभ करेंगे । ु 4.4.1 क्रवषयवस्त का सज्ञानात्मक घटक ु ं विषयिस्त के सज्ञानात्मक घटक से अवर्प्राय उन तथ्यों, सप्रत्ययों, वनयमों आवद से ह ै िो मवस्तष्क के ु ं ं सज्ञान समबन्धी ज्ञान क्षेत्र को प्र्रावित करत ह े । व्यिहाररक अथों में सज्ञानात्मक घटक वकसी विषयिस्त ु ं ं के िह तत्ि ह ें विन्ह े हम अपने मवस्तष्क में अलपकाल या दीघभकाल के वलए सरवक्षत करके रख दते े ह ैं एि ं ं िरूरत पड़ने पर वकसी अन्य प्रकार के ज्ञान के सिन के वलए इसका उपयोग करते ह ें या स्मवतशवक्त को ृ ृ बढ़ाने के वलए इसका स्मरि करते ह।ै ं िैसे-

Quotes detected: **0.01%** id: **73**

'सज्ञा की परर्राषा'

। इसको सामान्यत: हम लोग याद कर लेते ं ह ैं । बाद में िरूरत पड़न े पर इस परर्राषा को स्मरि वकया िाता ह ै । इसके अलािा इस परर्राषा की कोई अन्य विवशष्टता नही ह ै । यह वकसी अन्

Plagiarism detected: **0.13%** https://mycoaching.in/hindi-varnamala + 3 resources! id: **74**

य प्रकार के ज्ञान सवित करने सहायक नही ह ै । ृ सज्ञानात्मक विषयिस्त अपने प्रकवत या विवशष्टता के अनसार मलत: छह प्रकार के होते ह ै । ृ ु ु ू ं इन्ही प्रकारों में कछेक प्रकार के विषयिस्त अवनिाय भ रूप से विषय सामाग्री में पाय े िाते ह ैं । सज्ञानात्मक ु ु ं विषयिस्त के प्रकार वनमनित ह ै - ु i. तथ्य (Facts):- यह एक प्रकार क

ी कलपना या सकलपना ह ै विसे िरूरत पड़न े पर िाँचा या ं सत्यावपत वकया िा सकता ह ै । यह मलत: वकसी सज्ञानात्मक विषयिस्त का आधार ह ै । ू ु ं उदाहरि स्िरूप वकसी घटना घवटत की वतवथ या वकसी देश की िनसख्या (िैसे ्रारत स्ितत्र ं ं हआ 15 अगस्त, 1947) । ii. सप्रत्यय (Concept):- वकसी घटना, समह,स्थान या सकलपनाओ को उनके सामान्य या ू ं ं ं विवशष्ट विशेषताओ के आधार पर िगीकत करके वकसी सप्रत्यय का गठन वकया िाता ह ै । ृ ं ं सप्रत्यय को समझने के वलए कछ उदाहरि सारिी-1 में दशाभया गया ह ै । ु ं सािणी-1 सप्रत्यय का नाम उनकी सामान्य क्रवक्रशष्ट क्रवशेषताए ँ ं फनीचर (उपकरिों का समह) चेयर (कसी), टेबल, खाट, मिै आवद ू ु ु पहाड़/पिभत पथरीला, िमीन से बहत ऊँचा, ब्रिला आवद अलमारी लकड़ी, लोह,े प्लावस्टक वनवमतभ , सामान रखने के वलए, लमबी, गहरी आकार की, दरिािा आवद iii. क्रसिान्त या प्रमख क्रनयम(Principle):- तथ्यों या सप्रत्ययों या इन दोनों के मध्य के समबन्ध ु ं विसे शोध प्रविया के माध्यम से सत्यावपत वकया िा सकता है, को वसिान्त या वनयम कहा िा उत्तराखण्ड मक्त विश्वविद्यालय 54 ु CPS -2 सकता ह ै । िैसे- पररिार में बच्चों को सख्या बच्चों के विकास को प्र्रावित करता ह ै और यह ं समबन्ध विविन्न शोध कायों से सत्यावपत वकया िा चका ह ै । यहाँ पररिार में बच्चों की सख्या ु ं तथ्य ह ै एि उनका विकास एक समप्रत्यय ह ै । ं iv. प्राककल्पना (Hypothesis):- यह वकसी तथ्य या समबन्ध को समझाने के वलए मानली िाने िाली विचार होती ह ै िो प्राय: अनमान पर आधाररत होती ह ै और इसकी कोई प्रमाविकता नहीं ु होती । इसको वसि या सही सावबत होने के वलए प्रमाि की िरूरत होती ह ै । िैसे- यह एक पररकलपना/प्राक्कलपना हो सकता ह ै वक

Quotes detected: **0.03%** id: **75**

'सरकारी विद्यालयों में पढ़न े िाले बच्चे हमेशा गरीब पररिार से समबन्ध रखते ह'

ै । यह िाक्य एक अनमानर्र ह ै । इसका कोई प्रमाि नहीं वदया गया ु ह ै । िब तक यह िाक्य सत्य या प्रमावित नही हो िाता, यह पररकलपना ही कहलाएगी। v. क्रसिान्त (Theories) :- यह प्रकार पिभ में िविभत वसिान्त के अथभ से वर्न्न ह ै और ज्यादा ू व्यापक ह े । िैसा की इन दोनों के English नाम से स्पष्ट ह ै - पहला Principle ह े िो वकसी विशेष वनयम को बनाता है, िब की दसरा Theory कछ ऐसे वसिन्तो (Principle), सप्रत्ययों ु ं ू तथा तथ्यों के समह को इवगत करता ह े िो परोक्षरूप से वकसी घटना, मानि व्यिहार, या ू ं अवधगम का आधार ह े । िैसे-

Quotes detected: **0.01%** id: **76**

'डारविन का वसिान्त'

। यह बहत सारे प्रमावित तथ्यों पर आधाररत कछ Principle का समह ह े । िो परोक्षरूप से मानि वनवमभत वितभन के रूप का ु ु आधार बनता ह े । vi. क्रनयम (Laws):- यह ऐसे तथ्यों का कथन ह ै िो सवनवश्चत पररवस्थवतयों या दशाओ में सदा ु ं घवटत होते ह े । अभ्यास प्रश्न 3. Principle एि theory में अतर स्पष्ट कीविए । ं ं 4. तथ्य एि वनयम में क्या अतर ह े ? ं ं 4.4.2 क्रवषयवस्त का भावात्मक घटक ु विषय िस्त का ि्रात्मक घटक सि्रत वकसी ्री विषय िस्त के तीनों ज्ञान पक्षों में सबसे

महत्िपिभ ह ै । ु ु ू ं वशक्षि के िक्ष उपागम में िर्ात्मक पक्ष को सबसे ऊपर स्थान वदया गया ह ै । इसका कारि सिर्त यह ृ ं ह ै वक सज्ञानात्मक पक्ष के तथ्य और सप्रत्यय िए वियात्मक पक्ष के कौशलों

Plagiarism detected: **0.04%** https://sabsastaa.com/english-barakhadi/ id: **77**

के ज्ञान से वकसी ्री बालक ं ं ं का िीिन सपिभ नहीं हो सकता । िर्ात्मक पक्ष के ज्ञान

से ही सज्ञानात्मक पक्ष और वियात्मक पक्ष के ू ं ं वशक्षि को अथभ पिभ बनाया िा सकता ह।ै मल रूप से िर्ात्मक पक्ष में वकसी ्री विषय से सबवधत ू ू ं ं मलयों और अविर्वत्त को स्थान वदया िाता ह ै । प्राय: यह एक विमशभ का विषय बन िाता ह ै की क्या ृ ू हम मलयों की वशक्षा द े सकते ह ैं ? या वकसी विषय िस्त में मलयों को िास्तविक रुप से स्थान द े सकते ह ैं ू ु ू ? ऐसा वकया िा सकता ह ै क्योंवक मलय मल रूप से एक मनोिैज्ञावनक सप्रत्यय है िो अपने आप में ज्ञान ू ू ं उत्तराखण्ड मक्त विश्वविद्यालय 55 ु CPS -2 के तीनों खडो को समावहत करता ह ै । एक उदाहरि से हम इस बात को बड़ी आसानी से समझ सकते हैं, ं िैसे -

Quotes detected: **0.01%** id: **78**

‘ सत्य वनष्ठा’

अपन े आप में एक मलय ह ै । इस मलय में सज्ञानात्मक पक्ष ्री ह,ै वियात्मक पक्ष ू ू ं ्री ह ै िए िर्ात्मक पक्ष ्री ह ै । ं प्रश्न 1) सत्यवनष्ठा क्या ह ै ? प्रश्न 2) हम सत्यवनष्ठ क्यों बन े ? - यह दोनों प्रश्न सत्य वनष्ठा के सज्ञानात्मक पक्ष को प्रवतवबवबत करते ह ैं । ं ं कथन 1) सत्य वनष्ठा के प्रवत आप की वकसी न वकसी प्रकार की िर्ाना होनी चावहए । कथन 2) आपको कपटी होने के बिाए सत्य वनष्ठा की और अपनी िीिन को सचावलत करना ं चावहए । यह दोनों का कथन सत्य वनष्ठा के िर्ानात्मक पक्ष को प्रवतवबवबत करते ह ैं । ं कथन 3) आप एक सत्यवनष्ठ िीिन व्यतीत कर रह े ह ैं । कथन 3 सत्य वनष्ठा से सबवधत वियात्मक/ व्यिहाररक पक्ष को प्रवतवबवबत करता ह ै । ं ं ं 4.4.3 क्रवषयवस्त का क्रियात्मक घटक ु विषयिस्त के सदर् भ में वियात्मक घटक वकसी प्रकार के शारीररक विया को सके त नहीं करता ह,ै अवपत ु ु ं ं यह मानवसक वियाओ को दशाभता ह ै । चवक विषयिस्त का पाठ वकया िाता ह ै इसवलए इसमें सयोवित ू ु ं ं ं होने िाले वियात्मक घटक विवर्न्न मानवसक वियाओ की ओर इवगत करते ह ै । यह स्री मानवसक ं ं वियाएँ सज्ञानात्मक विषयिस्त की आधारवशला पर उन्ही विषय िस्तओ को विवर्न्

Plagiarism detected: **0.07%** https://hindialphabet.com/ id: **79**

न प्रकार से विश्लेषि, ु ु ं ं सश्लेषि, सवनयोिन िए सगवठत कर नये ज्ञान की रचना करने में अपना योगदान देते ह ै । विषयिस्त की ु ु ं ं ं वियात्मक घटकों के अतगभत कछ विशेष प्रकार क

ी मानवसक वियाए ँ आती ह ै विन पर सवक्षप्त चचाभ हम ु ं ं नीचे करेंगे । अपसािी क्रचन्तन क्रिया (Divergent Thinking Skill) यह एक ऐसी मानवसक विया ह ै िो वकसी समस्या या तथ्यों का विश्लेषि कर अनके प्रकार के सर्ावित ं समाधान उपवस्थत करता ह ै । इस प्रकार के मानवसक विया की विशेषता यही ह ै वक इसके माध्यम से उत्पन्न हये स्री समाधान अपने आप में अवद्वतीय होते ह ै । और यह पिभ ज्ञान िए उपलब्ध सज्ञानात्मक ू ं ं विषयिस्त को आधार बनाकर वकया िाता ह ै । 1956 में पहली बार िे० पी० गीलफडभ (J.P. Gilford) ु ने

Quotes detected: **0%** id: **80**

‘अपसारी वचन्तन’

शब्द का प्रयोग वकया था । उत्तराखण्ड मक्त विश्वविद्यालय 56 ु CPS -2 सभाक्रवत समािान ं सभाक्रवत समािान ं उद्दीपक समस्या+सज्ञानात्मक तथ्य + ं मानक्रसक क्रिया सभाक्रवत समािान सभाक्रवत समािान ं ं क्रचत्र 3: अपसािी क्रचतन क्रिया ं अक्रभसािी क्रचन्तन क्रिया (Convergent Thinking skill) इस प्रकार की मानवसक विया अपसारी वचन्तन विया के विपरीत बहत सारे सर्ावित समाधान में से कोई ं एक सटीक समाधान चनने की कौशल को दशाभता ह ै । इस विया के दौरान विवर्न्न समाधानों का, ु सबवन्धत तथ्यों के आधार पर तावकभ क तथा चरिबि तरीके से विश्लेषि, सश्लेषि िए वनयोिन कर एक ं ं ं मात्र सटीक समाधान का चयन वकया िाता ह ै । अथ िा तथ्य तथ्य समाधान तथ्य समाधान तथ्य B A तथ्य तथ्य क्रचत्र 4: अक्रभसािी क्रचतन क्रिया ं समस्या समािान क्रिया (Problem Solving Skill) यह एक विशेष प्रकार की मानवसक विया ह ै विसमें समपिभ ध्यान वकसी समस्या कथन पर वदया िाता ह ै । ू इसमें समस्या के विवर्न्न आयामों को वचवन्हत वकया िाता ह ै तावक समस्या को पिभरूप से पररर्ावषत ू वकया िा सके । एक बार समस्या पररर्ावषत हो िान े के बाद उसके सर्ावित समाधानों को खोिा िाता ं ह ै । इस िम के द्वारा प्रत्येक समस्या के वलए कई समाधानों का चरिबि तरीके से विश्लेषि कर मलयाकन ू ं उत्तराखण्ड मक्त विश्वविद्यालय 57 ु CPS -2 वकया िाता ह ै । मलयाकन के उपरान्त सबसे उपयक्त समाधान को ही समस्या के समाधान हते प्रयोग ू ु ु ं वकया िाता ह ै । समालोचनात्मक या समीक्षात्मक क्रचन्तन क्रिया(Critical Thinking Skill) यह एक ऐसी मानवसक विया ह ै िो सज्ञानात्मक स्तर पर विषयिस्तओ का मलयाकन उनके सत्यता िए ु ू ं ं ं ं योनयता के आधार पर करता ह ै (Beyer,1985) । इस मानवसक विया के माध्यम से वकसी तथ्य, वसान्त, वनयम, प्राक्कथन या सप्रत्यय की सत्यता िए योनयता को िाँचने के वलए पाँच प्रकार के कायों ं ं का सहारा वलया िाता ह ै । वचत्र में एक आदशभ समीक्षात्मक वचन्तन विया को दशाभया गया ह ै । शाक्रददक तकत शक्रि

मल्याकन ू ं ताक्रकत क क्रवश्ले षण समालोचनात्मक या समीक्षात्मक क्रचतन ं प्राक्कथन क्रनणतय क्रनिातिण परिक्षण क्रचत्र 5: समीक्षात्मक क्रचतन क्रिया ं सजनात्मक क्रचन्तन क्रिया (Creative Thinking Skill) ृ इस प्रकार की वचन्तन विया से मौवलक ए नये ज्ञान का सिन होता ह।ै यह वचन्तन विया ्री सज्ञानात्मक ृ ं ं विषयिस्तओ पर ही प्रयोग वकया िाता ह ै और परिाम स्िरूप नया ज्ञान प्राप्त होता ह।ै एक सफल ए ु ं ं उद्दश्े यपिभ सिनात्मक वचन्तन के वलए प्रत्येक विषयिस्त में कछ विशेषताएँ समावहत होनी चावहए िो ृ ू ु ु इस प्रकार हैं- a. विषयिस्त बालकों में िागरूकता का सचार करें । ु ं b. विषयिस्त बालकों में कौतहल उत्पन्न करने िाला होना चावहए । ु ु c. विषय िस्त बालकों की कलपनाशीलता का विकास करें । ु उत्तराखण्ड मक्त विश्वविद्यालय 58 ु CPS -2 d. विषयिस्त में धाराप्रिाह बनी रहनी चावहए । ु e. विषयिस्त में लचीलापन होना चावहए । ु f. प्रत्यके विषयिस्त की अपनी मौवलकता होनी चावहए । ु g. प्रत्यके विषयिस्त का पयाभप्त विस्तार होना चावहए । ु h. विषयिस्त में वनरतरता होनी चावहए । ु ं ऊपर िविभत पाँचो मानवसक वियाएँ वकसी ्री पाठयविषय में सवममवलत होन े पर बालकों में उस विषय के ्र प्रवत समझ बढ़ती ह ै । बालक वसफभ वकताबी ज्ञान नही प्राप्त करते हैं, अवपत उन वकताबी ज्ञानों पर इस ु मानवसक वियाओ का प्रयोग कर अवधगम का स्तर स्मरि से बोध ए बोध से मलयाकन के स्तर तक ले ू ं ं ं िा सकते ह ैं । यहाँ ध्यान देन े िाली बात यह ह ै वक विषयिस्त का वियात्मक घटक अपन े आप में कोई ु पाठय ज्ञान नही ह ै । यह स्ी वियात्मक घटक उन सिंानाओ को दशाभता ह ै िो सज्ञानात्मक विषयिस्त ् ु ं ं ं के चयन ए उसके विस्तारि के समय विषय-विशेषज्ञ द्वारा तैयार वकया िाता ह ै । उदाहरि के रूप में-पाठ ं के मध्य

Quotes detected: **0.01%** id: **81**

'सिय करके ',

Quotes detected: **0%** id: **82**

'व्यिहाररक परीक्षि',

Quotes detected: **0.01%** id: **83**

'सामवहक काय भ योिना'

या

Quotes detected: **0%** id: **84**

'प्रोिेक्ट कायभ'

ऐसे अिसर ू ं होते ह ै िहाँ बालक के पास इन वियात्मक घटकों को प्रयोग करने का विकलप विषयिस्त के विस्तारि के ु समय वदया िाता ह।ै अभ्यास प्रश्न 5. अपसारी ए अवर्सारी वचतन विया में क्या अतर ह ै ? ं ं ं 6. ज्ञान के िंात्मक पक्ष में मख्यतः कौन से सप्रत्ययों का समािेश होता ह ै ? ु ं 4.5 ववषयवस्तु अनुक्रम का वसद्ान्त वपछले अन्राग में हम लोगों ने विषय के विषयिस्त के चयन के वलए वकन-वकन वबन्दओ का ध्यान रखा ु ु ं ु िाए इस बात पर चचाभ वकया ह ै । उसके बाद हमन े देखा की वकसी चयवनत विषयिस्त में वकस प्रकार के ु ज्ञान का समािेश होना चावहए । इसके वलए हमन े पाया वक वकसी अवधगम प्रविया को समपिभ सफल होने ू के वलए यह वनतात िरूरी ह ै वक विषयिस्त में हर उस घटक का समािेश होना चावहए िो मवस्तष्क के ु ं तीनों ज्ञान क्षेत्रों को समावहत कर सके । परन्त वसफभ विषयिस्त के चयन और उसके अतगभत आने िाले ु ु ं ज्ञान के चयन से कम नहीं चलेगा । वकसी अवधगम प्रविया में विषयिस्त एक उवद्दपक के समान कायभ करता ह ै और इसके फलस्िरूप कोई ु अनविया होगा की नहीं, यह वनर्भर करता ह ै उस उवद्दपक को कै से प्रस्तत वकया िा रहा ह ै । अथाभत ु ु विषयिस्त के सदर् भ में अगर दखे ा िाए तो हम कह सकते ह ैं वक ज्ञान के प्रत्यके खण्ड को विषयिस्त म ें ु ु ं उत्तराखण्ड मक्त विश्वविद्यालय 59 ु CPS -2 कहाँ और कै से स्थान वदया गया ह ै यह महत्िपिभ ह ै । वकस ज्ञान खण्ड को कब बालकों के सामने प्रस्तत ू ु वकया िाए और अन्य ज्ञान खण्डों के साथ कै से उसका समबध िोड़ा गया ह ै यह अत्यत महत्िपिभ ह ै । इस ू ं ं प्रविया को अनिमि कहा िाता ह ै । ु वकसी विषय िस्त के अनिमि के दौरान तीन मख्य प्रश्नों पर ध्यान अत्यत िरूरी हैं- ु ु ु ं (a) क्या अनिमि बालकों के िरूरतों को परा कर पाने में सक्षम ह ै ? ु ू (b) क्या अनिमि विषयिस्त की वनरतरता को बनाये रखन े में सक्षम ह ै ? ु ु ं (c) क्या अनिमि के माध्यम से पाठयिम/विषय के वलए वस्थर वकए गय े उद्दश्े यों की िमिार प्रावप्त ् ु समर्ि ह ै ? अनिमि के वसिातो को विस्तार पिभक िानने से पहले हम लोगों को पाठयिम और अनिमि के ् ु ू ु ं सबधों को समझ लेना चावहए । वकसी पाठयिम की िब सरचना की िाती हो तो िह एक रैवखक प्रविया ् ं ं ं के तहत वकया िाता ह,ै विसके अलग अलग स्तर पर अलग अलग उद्दश्े यपिभ काय भ वकया िाता ह,ै िैसे- ू सबसे पहले यह विश्लेषि वकया िाता ह ै वक पाठयिम की आिश्यकता क्यों ह ै । इसके बाद उन ् आिश्यकताओ को ध्यान में रखते हुए पाठयिम के उद्दश्े यों का वनधाभरि वकया िाता ह ै । एक बार उद्दश्े य ् ं वनधाभररत हो िान े के बाद उद्दश्े य प्रावप्त के वलए सबवन्धत विषय ि विषयिस्त का चयन ि विस्तारि वकया ु ं िाता ह ै । इसके बाद पाठयिम का मलयाकन वकया िाता ह,ै िो समान्यत: एक लमबी ि दीघाभवमयादी ् ू ं प्रविया ह ै । एक बार मलयाकन होन े के बाद वफर से यही प्रविया अपनायी िाती ह ै नये पाठयिम के ् ू ं विकास के वलए । इस प्रविया को वलखना, कहना वितना सरल ह,ै व्यिहाररक धरातल पर यह प्रविया उतनी ही िवटल ह।ै असल में अपन े सवबधा के वलए हम लोग परे प्रविया को कछ चरिों में बाट दते े ह,ै परन्त ु ू ु ु ं िास्तविक रूप में इन चरिों को

समपिभ रूप से अलग करना समिर् नही ह,ै यह स◌ॊ री एक दसरे से ऐसे िड़े ◌ू ◌ु ◌ू होते ह ैं की व्यािहाररक रूप से इन्ह े अलग करना समिर् नही ह ै और उवचत ◌ॊ री नही ह।ै ऐसे वस्थवत मे िब पाठयिम की पररकलपना की िाती ह ै तो इसको प्रत्येक चरि में समीक्षा वकया िाता और िरूरी पररितभन ◌ृ वकया िाता ह।ै इसको आप ऐसे समवझए - प्रथम चरण-: पराने पाठयक्रम, नई सामाजिक रीजतया, चनौजतया, बदलाव एव उपलब्द ससाधन का ◌ृ ◌ु ◌ु ◌ं ◌ं जवश्लेषण यह पता करने के जलए की नई िरूरते क्या ह,ै जिसे पाठयक्रम म े स्थान जदया िाना आवश्यक ह।ै ◌ृ जितीय चरण-: प्रथम चरण

Plagiarism detected: **0.06%** https://mycoaching.in/hindi-varnamala + 4 resources! id: **85**

के आधार पर उद्दश्े यों का जनमााण [भाग-एक] - उद्दश्े यों को जवजिष्टता एव ◌ं स्पष्टता प्रदान करने के जलए पनः प्रथम चरण की समीक्षा । ◌ु ततीय चरण : जितीय चरण [भाग-एक] के आधार पर

जवषय वस्त चयन एव जवस्तारण, जिक्षण जवजध, ◌ृ ◌ु ◌ं किौल एव मलयाकन जवजध का चयन - उद्दश्े य एव जवषय वस्त म ें सतलन न हो पाने की जस्थजत म ें जितीय ◌ू ◌ु ◌ु ◌ं ◌ं ◌ं ◌ं चरण की समीक्षा। उत्तराखण्ड मक्त विश्वविद्यालय 60 ◌ु CPS -2 चतथा चरण: जितीय चरण एव ततीय चरण का मलयाकन - वधै ता, रोचकता, उपयोजगता, साथाकता आजद ◌ृ ◌ु ◌ू ◌ं ◌ं म ें कोई कमी होने पर पन: चरण एक से चरण चार तक दोहराना। ◌ु इससे यह पता चलता ह ै वक अनिमि के दौरान ◌ॊ री विषयिस्त के उद्देश्यों में िरूरत के अनसार ◌ु ◌ु ◌ु पररितभन, पररमािभन या पररिधभन वकया िा सकता ह ै । अथाभत पाठयिम विस्तार की प्रविया में कोई चरि ◌ृ अवतम नहीं होता और िरूरत के अनसार वकसी ◌ॊ री चरि में समीक्षा कर बदलाि वकया िा सकता ह ै । ◌ु ◌ं वकसी ◌ॊ री विषयिस्त के अनिमि के पीछे कछ मान्यताए, पररसकलपना या पािभनमान काम करती ह ै । ◌ु ◌ु ◌ु ◌ू ◌ु ◌ं ◌ं हम लोगों को इन मान्यताओ / पािभनमानों के बारे में समवचत िानकारी होनी चावहए, इससे अनिमि की ◌ू ◌ु ◌ु ◌ु ◌ं प्रविया को व्यािहाररक रूप से प्रयोग करना आसान हो िाता ह ै । 4.5.1 अनिमण की आिाभत पररसकल्पनाए ँ ◌ु ◌ू ◌ं विषय िस्त के अनिमि को अवधक उपयोगी बनाने के वलए मलरूप से तीन पररकलपनाओ की ◌ु ◌ु ◌ू ◌ं अिधाररा की गई ह ै । िह इस प्रकार ह ै - i. प्रथम पररकल्पना: विषयिस्त अनिमि के दौरान प्राथवमक (प्रारवमर्क) स्तर पर स्थावपत ◌ु ◌ु वकए गए सामान्य उद्दश्े य उसके बाद के स्तर के उद्दश्े यों िए विषय सामग्री को प्र◌ॊ ावित करेंगे । ◌ं िसै े वकसी पाठयिम के वलए बनाए गए सामान्य उद्देश्य बाद म ें उस पाठयिम के अतगभत आने ◌ृ ◌ृ ◌ं िाले विषयों के सामान्य उद्दश्े यों को प्र◌ॊ ावित करता है । अगले चरि पर विषय का सामान्य उद्दश्े य उस विषय के अतगभत आने िाले प्रकरिों, इकाईयों के विवशष्ट उद्दश्े यों िए विषयिस्त को ◌ु ◌ं ◌ं प्र◌ॊ ावित करेंगे । ii. क्रितीय पररकल्पना: अवधगम प्रविया के िम में तय वकए गए विषयिस्त िए कौशल बालक ◌ु ◌ं सिोकृष्ट अवधगम िािािरि में अविभत करते ह ैं । परन्त इस परे िम में बालक कछ ऐसे ◌ॊ री ◌ृ ◌ु ◌ू ◌ु कौशल प्राप्त करते ह ैं या विकवसत कर लेते ह ै विसकी पहले से कोई कलपना नहीं की गई थी, इसवलए यह िरूरी ह ै की सामान्य उद्दश्े यों या लक्ष्यों का िब वनमाभि वकया िाता है, उस समय विषयिस्त के तीनों ज्ञान क्षेत्रों को विषयसामाग्री में अगीर्त वकया िाये तावक बालकों का ◌ु ◌ू ◌ं सिािंगीि विकास हो सके । इसवलए विषयिस्त के अनिमि के समय प्रत्यके ज्ञान खण्ड में ◌ु ◌ु सज्ञानात्मक िए वियात्मक घटकों का समािेश होना चावहए विससे बालकों का व्यवक्तगत, ◌ं ◌ं सामाविक आयामों का विकास हो सके । iii. ततीय पररकल्पना: अवधगम प्रविया के वनधाभरि के समय अवधगम सीमा का ◌ॊ री ध्यान रखना ◌ृ अत्यन्त आिश्यक ह ै । अवधगम के समय कछ विषयिस्त ऐसे

Plagiarism detected: **0.08%** https://mycoaching.in/hindi-varnamala + 5 resources! id: **86**

होते ह ैं िो विषय का आधार होते ◌ु ◌ु ह ैं और इनका अवधगम होना आिश्यक ह ै । इसके विपरीत कछ ऐसे विषयिस्त ◌ॊ री होते ह ैं ◌ु ◌ु विनका प्रयोिन विषय के विस्ताररत समझ के वलए आिश्यक है । इन दोनों प्रकार क

े विषयिस्त ◌ु में पयाभप्त वि◌ॊ ेद होना चावहए तावक आधारर्त विषय सामग्री को स◌ॊ री बालकों के अवधगम के ◌ू उत्तराखण्ड मक्त विश्वविद्यालय 61 ◌ु CPS -2 वलए उपलब्ध कराया िा सके िए अन्य

Plagiarism detected: **0.05%** https://hindialphabet.com/ id: **87**

प्रकार के विषय सामग्री का अवधगम बालकों के ◌ं मानवसक स्तर के अनसार हो सकें । ◌ु 4.5.2 अनिमण क्रवक्रियाँ (Sequencing Technique) ◌ु वकसी ◌ॊ री प्रकार क

े अनिमि विवध का एकमात्र उद्दश्े य होता ह ै वक अनिमि प्रविया के माध्यम से िह ◌ु ◌ु शैक्षविक उद्देश्यों िए बालकों के अवधगम वियाओ के मध्य एक समबन्ध स्थावपत कर सके । सामान्यत: ◌ं ◌ं तीन प्रकार के अनिमि विवध का प्रचलन ह ै । अत: इस अन◌ॊ ाग में हम लोग िमानसार इन विवधयों पर ◌ु ◌ु ◌ु चचाभ करेंगे- क्रवषयवस्त क्रवश्ले षण क्रवक्रि (Content Analysis Technique)- ◌ु वकसी ◌ॊ री विषय िस्त के अनिमि प्रविया दौरान यह विवध विषयिस्त की आतररक सरचना िए ◌ु ◌ु ◌ु ◌ं ◌ं ◌ं सज्ञानात्मक प्रविया, दोनों को समान महत्ि प्रदान करती ह ै विससे एक अथभपिभ अवधगम प्रविया घवटत ◌ू ◌ं हो सके । वकसी विषय िस्त की आतररक सरचना विषय िस्त को स्मरि करन े की िए उसमे समझ बनाने में ◌ु ◌ु ◌ं ◌ं ◌ं सहायक होती ह ै विससे अवधगम में वनरतरता बनी रह े । परन्त विषय िस्त की तावकभ क सरचना के साथ ◌ु ◌ु ◌ं ◌ं ऐसा नहीं होता । इसवलए तावकभ क सरचना के माध्यम से अथभपिभ अवधगम सवनवश्चत करने के वलए अनिम ◌ू ◌ु ◌ु ◌ं प्रविया का पालन करना आिश्यक हो िाता ह ै । विषय िस्त विश्लेषि विवध से अनिम के दौरान परे ◌ु ◌ु ◌ू प्रविया को तीन चरिों से होकर िाना पड़ता ह ै । a. बालकों के अवधगम के वलए विषय िस्त के अवत महत्िपिभ धरी की पहचान करना िए उसको ◌ु ◌ू ◌ु ◌ं वचन्हावकत करना । ◌ं b. विषय िस्त से समबवन्धत स◌ॊ री ज्ञान खडों की पहचान ि वचन्हाकि िए उनका सबधात्मक ◌ु ◌ं ◌ं ◌ं ◌ं ◌ं पदानिम के सव्यिस्थापन । ◌ु ◌ु c. स◌ॊ री ज्ञानखण्डों का ज्ञान व्यिस्थापन

वसिान्तों के आधार पर अनिमि । ु उपयभक्त तीनों चरिों में प्रथम चरि को हम लोग प्रायः पाठयिम के उद्दश्े यों को वनमाभि करते समय एि ् ु ं विषय िस्ति के चयन के समय ही परा कर लेते ह ैं । वद्वतीय एि ततीय चरिों को प्रायः अलग इकाई के रूप ृ ु ू ं में समझ पाना बहत ही कवठन होता ह,ै क्योंवक दोनों चरि आपस में अवतव्याप्त रहते ह ैं । इन दोनो चरिों को अलग से वदखाने से अवर्प्राय वसफभ इतना ह ै की यह समझा िा सके वक इस प्रविया में अनिमि कै से ु हो रहा ह ै । J.D. Novak (1988-1990) ने वबन्दिार इन दोनो चरि के कायों को समझाने की कोवशश की ह,ै िो ु इस प्रकार ह ै - उत्तराखण्ड मक्त विश्वविद्यालय 62 ु CPS -2 1. कोई ्री बालक एक अथभपिभ अवधगम प्रविया में उसी शतभ पर सह्रावगता करता ह ै िब नया ज्ञान ू खण्ड (सप्रत्यय ्री कहा िा सकता ह)ै उसके बौविक सरचना में पहले से मौिद समप्रत्ययों के साथ ू ं ं समबवन्धत हो एि िह उनको समायोवित कर सके । ं 2. प्रथम वबन्द को सही प्रमावित करन े के वलए विषय िस्ति का अनिमि इस प्रकार होना चावहए विससे ु ु ु सामान्य एि समायोवित योनय सप्रत्यय सबसे पहले बालकों के सामने आय े । यह बालकों के ं ं बौविक सरचना में होने िाले समायोिन क्षमता को बढ़ाता ह ै िो आगे आन े िाले सप्रत्ययों के ं ं अवधगम में सहायक वसि होता ह।ै 3. बालकों के बौविक सरचना में पाय े िाने िाले सप्रत्ययों एि नए अवधगवमत होने िाले सप्रत्ययों में ं ं ं ं सामिस्य बनाये रखने के वलए यह िरूरी ह ै वक विषय िस्ति का अनिमि समान्य से विवशष्ट की ु ु ं ओर हो । इससे दो फायद े होते ह ैं । प्रथमतः नय े सप्रत्ययों को पहले से मौिद सप्रत्ययों के साथ समबध ू ं ं ं स्थावपत करने में आसानी होती ह ै एि वद्वतीयः बाद में सप्रत्ययों के िवमक वि्रेदन में सहायता ं ं वमलती ह ै । 4. वद्वतीय वबन्द को अगर सही तरीके से प्रयोग वकया िाए तो इसके बाद वसफभ बौविक सरचना में ं ु स्थावपत सप्रत्ययों के साथ नये सप्रत्ययों का समबन्ध दशाभने से ही बालक अथभपिभ अवधगम प्रविया ू ं ं की ओर चल पड़ेगा । 5. प्रत्यके समान्य, समायोिनयोनय एि महत्िपिभ सप्रत्ययों को प्रस्तत करते समय पयाभप्त सबवन्धत ू ु ं ं ं उदाहरिों का प्रायोग आिश्यक ह,ै यही उदाहरि मल रूप से नये सप्रत्ययों को पराने सप्रत्ययों के ू ु ं ं साथ िोड़ता ह ै । वचत्र 6 से हमे विषय िस्ति विश्लेषि विवध में ज्ञान खण्डों में आपसी समबन्धों को समझने में सहायता ु वमलेगी । अक्रिक सामान्यीकत ज्ञान खड ृ ं प्रथम चिण सम्बन्ि क्रितीय चिण (िक्रमक क्रवबेन) सम्बन्ि ततीय चिण (िक्रमक ृ क्रवभेन) क्रचत्र 6: सप्रत्यय पिानिम क्रनमातण ु ं उत्तराखण्ड मक्त विश्वविद्यालय 63 ु CPS -2 कायत-क्रवश्ले षण क्रवक्रि (Task Analysis Technique) इस विवध में विषयिस्त विश्लेषि के अनरूप विषयिस्त मख्य नहीं होता ह,ै अवपत इसके अनसार िह ु ु ु ु ु ु स्री काय भ आिश्यक ह ै िो स्रावित वनष्कषभ (वनष्कष)भ को प्र्रावित करते हो । ं इस विवध के अनसार, कोई ्री विषयिस्त एि ज्ञानखण्ड सरल एि िवटल मानवसक कौशलों का ु ु ं ं समच्चय ह,ै विसके सहारे एक अथभपिभ अवधगम समि्र् ह।ै इन मानवसक कौशलों मे िो सरल कौशल ह ै ु ू िे आधारर्त कौशल होते ह ै एि िवटल कौशल इन्ही सरल कौशलों से बनते ह।ैं इसवलय े यह विवध ू ं कहता ह ै वक अवधगम के वलए प्राथवमक रूप से सरल मानवसक कौशलों का चयन अवधक प्रि्री

Plagiarism detected: **0.08%** https://mycoaching.in/r-ke-roop-prakar-matra-s… + 3 resources! id: **88**

होता ह।ै िहीं िवटल कौशलों के अवधगम के वलए उनको सरल कौशलों के रूप में विश्लेवषत करना और वफर उनका अवधगम करना प्रि्री होता ह।ै अत: हम कह सकते ह,ैं यह विवध विषयिस्त में प्रत्येक ज्ञानखण्ड को कौशलों के रूप म

ें दशाभती ह।ै ु अथाभत बालकों को क्या सीखना है, यह विषयिस्त नही, मानवसक कौशलों के अनसार तय वकया िाता ु ु ह।ै अत: प्रत्यके ज्ञानखण्ड के वलए कछ मानवसक कौशलों का चयन वकया िाता ह ै एि इन्ही मानवसक ु ं कौशलों को अिभन सबवन्धत विषयिस्त के अवधगम को दशाभता ह ै । ु ं यह विवध विषयिस्त अनिमि के वलए तीन स्तरों की बात करता ह,ै यथा- ु ु a. उन स्री मानवसक कौशलों का वचहाकन िो बालकों के अवधगम के वलए िरूरी हो एि प्रत्येक ं ं ं बालक के वलए अिभन करना आिश्यक हो । b. स्री मानवसक कौशलों को यथासि्र् वनमन स्तरीय मानवसक कौशलों में वि्रावित करना । ं c. प्राप्त मानवसक कौशलों का सरल से िवटल (वनमन स्तरीय से उच्चस्तरीय) की ओर अनिमि । ु कायभ विश्लेषि विवध का आिि यह ह ै वक यह विवध अ्री ्री इतनी विकवसत नही हो पायी ह ै विससे ु प्रत्यके विषयिस्त , प्रकरिों एि तत्सबधी मानवसक कौशलों का सही एि पयाभप्त अनिमि वकया िा ु ु ं ं ं ं सके , इसके िबािद यह विवध कछ विशेष प्रकार के कौशलों (मानवसक, व्याहाररक) के विकास के वलए ू ु उपोयोगी वसि हो सकती ह।ै दरअसल कछ अवधगम प्रवियाओ को मानवसक कौशलों के रूप में पररिवतभत कर अनिवमत करना सरल ु ु ं होता ह,ै परन्त यह स्री अवधगम प्रवियाओ के वलए सही प्रतीत नही होता ह ै । इसवलए समपिभ ु ू ं विषयिस्त, विशेषत: सप्रत्ययों, मलयों के वलए इस विवध का उपयोग गलत वसि हो सकता ह ै । ु ू ं अनिमण का क्रवस्तािण क्रसिान्त (Elaboration Technique) ु विस्तारि वसिान्त मख्यत: विषयिस्त विश्लेषि विवध एि कायभ विश्लेषि विवध को एक सामिस्यपिभ ु ु ू ं ं रूपरेखा के तहत एकीकरि करन े की प्रविया ह ै विसके द्वारा इन दोनों विवधयो की कवमयों को दर वकया ु िाता ह ै इस एकीकरि प्रविया के माध्यम से यह विवध विषयिस्त के अनिमि की एक विशेष विस्ताररत ु ु िम को प्रवतपावदत करती ह।ै

Quotes detected: **0.01%** id: **89**

‘विस्तारन िम का वसिान्त’

इस प्रकार ह:ै उत्तराखण्ड मक्त विश्वविद्यालय 64 ु CPS -2

Quotes detected: **0.06%** id: **90**

‘अजधगम वस्तओ का क्रम इस इस प्रकार से होना चाजहए जक सरल एव सावभा ौजमक इकाईयों ु ं ं को पहला स्थान प्राप्त हो

एव धीरे -धीरे ज्यादा िजिल एव जवस्तारत इकाईयों की ओर अनक्रमण हो'

। ु ं ं इस वसिान्त के अनसार वकसी विषयिस्त के मख्य वबन्दओ से सबवन्धत सिाभ ्रौवमक द्दवष्टकिो को सबसे ु ु ु ं ं ु पहले बालकों के सामन े प्रस्तत करना चावहए । इसके पश्चात इस द्दवष्टकिो के प्रत्येक पहल का ु ू विस्तरीकरि वकया िाना चाहोए, इस दौरान बीच-बीच म ें सिाभ ्रौवमक द्दवष्टकिो की ्री चचाभ कर लेनी चावहए, ऐसा करने से विस्तरीकरि की प्रविया समि होती ह ै । एक बार प्रथम स्तर का विस्तारीकरि हो ृ िाने के बाद इस स्तर को पन: वद्वतीय चरि के वलए प्रारमर् वबन्द मान वलया िाता ह ै । इस प्रविया को ु ु तब तक दोहराया िाता ह ै िब तक प्रत्यके वबन्दओ का विस्तरीकरि समपिभ न हो िाए एि िावछत ू ं ं ं ु िविटलतास्तर प्राप्त न हो िाए । विस्तारीकरि के प्रत्येक चरि में विस्तारि अनिमि का साराश एि दो चरिों के वलए उपयक्त ु ु ं ं समन्ियक का िििभन होना आिश्यक ह ै । साराश िाले वहस्से में सबवन्धत चरि में वदये गए ज्ञान खण्डों का ं ं पन: अिलोकन वकया िाता ह ै । समन्ियक यह दशाभता ह ै वक उक्त चरि में प्रयक्त ज्ञानखण्ड आपस में एि ु ु ं अन्य चरि के साथ वकस प्रकार का समबन्ध रखते ह।ै वचत्र 7 से अनिमि के विस्तारि वसिान्त को इस प्रकार दशाभया िा सकता ह।ै ु प्रथम चिण क्रवस्तिाण क्रितीय चिण क्रवस्तिाण एडवास आगेनाइजि ं क्रववक्रितत एडवास्ड ं आगेनाइजि (सामान्य एव ं (सिााश एव सावतभौक्रमक सप्रत्यय) ं ं ं समन्वयक) क्रचत्र 7: क्रवस्तिाण िम का प्रारूप विषयिस्त के विस्तारि के वलए मख्य वबन्दओ एि सबवन्धत सिाभ ्रौवमक द्दवष्टकिो के चयन के वलए ु ु ं ं ं ु वनमनवलवखत वबन्दओ को ध्यान में रखना आिश्यक ह-ै ं ु i. इसमें स ्री मख्य वबदओ को समावहत नहीं करना चावहए, अवपत सबसे प्रासवगक वबदओ को ु ु ं ं ं ं ं ु ु सवममवलत वकया िाना चावहए । उत्तराखण्ड मक्त विश्वविद्यालय 65 ु CPS -2 ii. प्रत्यके चरि में ज्ञान खण्डों का चयन ि विस्तारि ऐसा होना चावहए, तावक अगले चरि में उन ज्ञान खण्डों के िविटलतास्तर एि विस्तारि में बढ़ोत्तरी हो । ं iii. प्रत्यके चरि के वलए प्रयक्त होने िाले सिाभ ्रौवमक सप्रत्यय ऐसे होने चावहए की उन्ह ें उदाहरि, ु ं अभ्यास एि अनििर्न्य द्दष्टातों के माध्यम से परर ्रावषत एि िविभत वकया िा सके , त ्री यह ु ं ं बालकों के अथभपिभ होगें । ू अभ्यास प्रश्न 7. विषय िस्त विश्लेषि विवध में विषयिस्त के अनिमि की वदशा क्या होनी चावहए ? ु ु ु 8. कायभ विश्लेषि विवध में अनिमि की इकाई क्या होती ह ै ? ु 4.6 सारांश वकसी पाठयिम में विषयिस्त का चयन उसकी ििधता, साथभकता, सतलन, स्िय समपिभता, रोचकता, ृ ु ु ू ं ं उपयोवगता एि साध्यता के ऊपर वनर्रभ करता ह ै । विषय िस्त के चयन के दौरान विषय िस्तओ में ज्ञान के ु ु ं ं तीनों पक्षों से समबवधत घटकों का यथासिर् समायिोन वकया िाता ह ै । इन स ्री घटकों को मख्यत: तीन ु ं ं विवधयों के माध्यम से अनिवमत वकया िाता ह ै , यथा – विषय िस्त विश्लेषि विवध, कायभ-विश्लेषि ु ु विवध एि विस्तारि विवध । इस परे प्रविया के दौरान प्रत्येक ज्ञान खड एि मानवसक वियाओ को सरल से ु ं ं ं ं िविटल एि सामान्य से विवशष्ट की ओर अनिवमत वकया िाता ह ै । ु ं 4.7 शब्दावली 1. सज्ञानात्मक घटक- मनोिैज्ञावनक समप्रत्यय के अनसार वकसी ्री बौविक वियायों को वनयवत्रत ु ं ं एि वनदवे शत करने िाला घटक ं 2. िर्ात्मक घटक -मनोिैज्ञावनक समप्रत्यय के अनसार वकसी ्री व्यवक्त के मलयाबोध, ु ु कलात्मकता, इच्छा आवद को वनयवत्रत एि वनदवे शत करने िाला घटक ं ं 3. वियात्मक घटक -मनोिैज्ञावनक समप्रत्यय के अनसार वकसी ्री शारीररक वियायों को वनयवत्रत ु ं एि वनदवे शत करने िाला घटक ं 4. अनिम - विषयिस्त के िविटलता एि स्तर को ध्यान म ें रखती हए उनको वकसी एक पदानिम ू ु ु ं के अनसार सवज्ित करना ु 5. िवमक वि ्रेदन - स्तर बड़ने के साथ साथ विषयिस्त के िविटलता स्तर को बढ़ाते हए उन्ह ें ु पिभिती ज्ञान खडो के साथ िोड़े रखना ू ं उत्तराखण्ड मक्त विश्वविद्यालय 66 ु CPS -2 4.8 अभ्यास प्रश्नों के उत्तर 1. ििधता, साथभकता, सतलन, स्िय समपिभता, रोचकता, उपयोवगता, साध्यता । ु ू ं ं 2. सज्ञानात्मक पक्ष, िर्ात्मक पक्ष एि वियात्मक पक्ष । ं ं 3. principle एक विशेष वनयम होता ह,ै िबवक theory बनता ह ै principle, सप्रत्यय एि तथ्यों ं ं के समच्चय से िो वकसी अवधगम का आधार होता ह ै । ु 4. तथ्य एक कलपना ह ै विसका सत्यापन वकया िा सकता ह ै । िबवक ऐसे तथ्यों का कथन ह ै िो सवनवश्चत पररवस्थवत में सदा घवटत होते ह ै । ु 5. अपसारी वचतन में तथ्यों के विश्लेषि से अनके प्रकार के समाधान प्राप्त होते िो प्राय: सही होते ं ह ै । िबवक अवर्सारी वचतन में तथ्यों को विश्लेवषत कर उपलब्ध अनेक समाधानों में से सही ं समाधान का चयन वकया िाता ह ै । 6. मलय एि अवि्रवत्त ृ ू ं 7. सामान्य से विवशष्ट की ओर 8. मानवसक विया 4.9 सन्दर् भ ग्रन्थ सची ू 1. Content theory of motivation. Retrieved from www.speechmastery.com 2. Corpuz, B.B. & Salandanan, G. (2008). Principles of Teaching I. retrieved from www.slideshare.com 3. Miguel Zapata Ros. (2006). Sequencing of contents and learning objects – parts II as translation by Nora Lizenberg. RED. Revista de Educación a Distancia, V(14),1-15 4. O.Venugopalan (2007). Maslow's theory of motivation its relevance and application among non-managerial employees of selected public and private sector undertakings in Kerala. Thesis of Department of Commerce & Management Studies, University of Calicut. 5. Rodger Stotz & Bruce Bolger (n.d.). Content and process theories of motivation. Underlying Principles Series. 6. Behan, Z. (2016). Selection of content and organization of learning experiences. Retrieved from www.slideshare.com उत्तराखण्ड मक्त विश्वविद्यालय 67 ु CPS -2 4.10 वनबधात्मक प्रश्न ं 1. विषय िस्त विश्लेषि विवध एि विस्तारि वसिात विवध का विस्तत िििभन करते हए इन दोनों ृ ु ं ं के पारस्पररक समबन्ध को स्थावपत कीविए । 2. वकसी विषय के वकसी ्री प्रकरि का अवि्रमि विषय िस्त विश्लेषि विवध के माध्यम से ू कीविए । उत्तराखण्ड मक्त विश्वविद्यालय 68 ु CPS -2 खण्ड - 2 Block- 2 उत्तराखण्ड मक्त विश्वविद्यालय 69 ु CPS -2 इकाई 1- मानविकी ज्ञान की एक शाखा के रूप में, उनका विद्यालयी पाठ्यचया में स्थान, शांवत वशक्षा एि विविधता के वलए सम्मान के बीजारोपण के सन्दि में मानविकी में त सम्मवलत विषयों से सम्बंवधत मुद्द और चुनौवतया ाँ े Humanities as a Branch of Knowledge, their Place in the School Curriculum.,Issues and Challenges of the Subjects included in Humanities with respect to their role in Peace Education and Inculcation of REspect for Diversities 1.1 प्रस् तािना 1.2 उद्दश्े य 1.3 मानविकी ज्ञान की एक शाखा के रूप में 1.4 मानविकी विषयों का विद्यालयी

पाठयचयाभ में स्थान ु 1.5 मानविकी से िड़े मद्द े और चनौवतयाँ ु ु ु 1.6 शावत वशक्षा ए विविधता के वलए सममान के बीिारोपि के सन्दर्भ में मानविकी में ं ं सवममवलत विषयों से समबवधत मद्द े और चनौवतयाँ ु ु ं 1.7 साराश ं 1.8 शब्दािली 1.9 अभ्यास प्रश्नों के उत्तर 1.10 सदर्भ ग्रथ सची ू ं ं 1.11 वनबधात्मक प्रश्न ं 1.1 प्रस्त ािना मानविकी को परर्ावषत करते हुए कहा िा सकता ह ै वक यह मानि सस्कवत का अध्ययन ह ै िसे ृ ं सावहत्य, दशभन, इवतहास, कला, सगीत इत्यावद। यह िह शैवक्षक शाखा ह ै िो मानि सस्कवत का अध्ययन ृ ं ं करती ह।ै मानविकी में उन विषयों को सवममवलत वकया िाता ह ै िो मानि सस्कवत का अध्ययन करते ह।ैं ृ ं उत्तराखण्ड मक्त विश्वविद्यालय 70 ु CPS -2 मध्य यग

Plagiarism detected: **0.08%** https://mycoaching.in/r-ke-roop-prakar-matra-s… + 3 resources! id: **91**

के दौरान मानविकी शब्द को दि त्ि के विपरीत में वलया िाता था और विसे अब क्लावसक्स के ु रूप में दखे ा िाता ह।ै आि के समय में मानविकी को प्राकवतक, र्ौवतक और क्री–क्री सामाविक ृ विज्ञान के विपरीताथभ के रूप म

ें वलया िाता ह।ै मानविकी और प्राकवतक विज्ञान को िो चीज़ अलग ृ करती ह ै िह मानविकी के अथभ को स्पष्ट करती ह।ै इसकी विषय सामग्री प्राकवतक विज्ञानों से मानविकी ृ को अलग ही नहीं करती बवलक इसमें प्रश्नों को पछने और दखे ने का तरीका ्री इसे प्राकवतक विज्ञान से ृ ू अलग करता ह।ै िहाँ मानविकी वकसी ्री चीज़ के अथभ, उद्दश्े य और लक्ष्यों को समझने पर बल देती ह ै िहीं इसके आगे वकसी ्री ऐवतहावसक या सामाविक घटना के वलए समालोचना का ि्रा, सत्य प्रावप्त हते ु या सत्य की खोि के वलये व्याख्यात्मक तरीका इसे प्राकवतक विज्ञान से अलग करता ह ै। मानविकी कछ ृ ु विषयों को समावहत करते हुए मात्र परीक्षाओ को उत्तीभ करन े से ही नहीं समबवन्धत बवलक मलयों के ू ं विकास के वलए ्री महत्िपिभ ह ै। शावत वशक्षा और विविधता को स्िीकार करने के वलए दवष्ट को ू ं व्यापक करने में इसकी महत्िपिभ र्वमका ह ै। प्रस्तत पाठ में मानविकी के इन्हीं पहलओ के ििभन का ू ू ु ू ं प्रयास वकया गया ह ै। 1.2 उद्दश्े य इस इकाई के अध्ययन के पश्चात आप- 1. मानविकी को ज्ञान की एक शाखा के रूप में परर्ावषत कर सकें गे। 2. मानविकी के अतगभत शावमल वकए िाने िाले विषयों का ििभन कर सकें गे। ं 3. मानविकी विषयों के पाठयचयाभ में स्थान की वििेचना कर सकें गे। ् 4. शावत वशक्षा ए विविधता हते मानविकी विषयों से िड़े मद्दों और चनौवतयों को स्पष्ट कर सकें गे। ु ु ु ु ं ं 1.3 मानववकी ज्ञान की एक शा

Plagiarism detected: **0.04%** https://mycoaching.in/hindi-varnamala + 3 resources! id: **92**

खा के रूप म ें मानविकी को मानि के अनि्रों और प्रयोगों से वकस प्रकार वचवत्रत करते ह;ैं के अध्ययन के रुप म

ें ्री ु परर्ावषत वकया िा सकता ह।ै इस पथ्िी पर िब से मनष्य का विकास हआ ह ै तब से हम इस ससार को ृ ु ं समझने ए इस समझ को वलपीबि करने के वलए ्राषा, सावहत्य, इवतहास, दशभन, धमभ, कला, सगीत ं ं इत्यावद का उपयोग वकया ह।ै अवर्व्यवक्त के विन माध्यमों का उपयोग मनष्यों न े खद को अवर्व्यक्त ु ु करने के वलए वकया ि माध्यम कछ विषयों का रूप ले वलए और परपरागत रूप में ये सारे विषय ु ं मानविकी के अतगभत आते ह।ैं मानिीय अनि्रों के इन दस्तािों का ज्ञान उन लोगों से िड़े होने के ि्रा ु ु ं को महसस करने का अिसर प्रदान करता ह ै िो हमसे पहले आय े थे अथाभत िो हमारे पिभि थे' साथ ही ू ू साथ उन लोगों से ्री िो हमारे समकालीन ह।ैं मानविकी शब्द की उत्पवत्त पनिाभगरि लैवटन अवर्व्यवक्त Studia humanities या "study ु आॅ humanities" से हई ह,ै इसका शावब्दक अथभ "सस्कवत, विनय और वशक्षा" से ह।ै 15 िीं सदी में ृ ं उत्तराखण्ड मक्त विश्वविद्यालय 71 ु CPS -2 इसका प्रयोग व्याकरि, कविता, बयानबािी, इवतहास, दशभन और नैवतकशास्त्र के वलए वकया िाता था। अतः मानविकी के अतगभत ि स्री विषय आते ह ैं िो विज्ञानेत्तर हों या िो मनष्य िावत से समबवधत हों। ु ं ं मानविकी को विवर्न्न विद्वानों ने अपने-अपन े तरीके से परर्ावषत वकया ह।ै एडम्स (1976) के अनसार,

Quotes detected: **0.05%** id: **93**

"मानविकी इवतहास सिर्तः गोल, शास्त्रीय अध्ययन के बचे ्राग, अग्रेिी ु ू ं ं के कछ पहलओ और आधवनक ्राषाओ, धावमभक वशक्षा और ऐसे विषयों को सवममवलत करता ह।ै "

ु ु ु ं ं Wallace (2008) मानविकी को परर्ावषत करते हुए वलखते ह ैं वक "यह एक सामवहक शब्द ह ै िो ू शैक्षविक विषयों या क्षेत्रों की एक श्रेिी के वलए प्रयक्त वकया िाता ह ै तथा, िो मनष्यों के विकास, ु ु उपलवब्धयों, व्यिहार, सगठन या वितरि के ज्ञान पर विकवसत होता ह।ै ं Blyth (1990) ने मानविकी को परर्ावषत करते हुए कहा ह ै वक "प्राथवमक पाठयचयाभ का िह ्राग िो ् िीवित और स्थान विशेष पर कायभशील और समहों और सवमवतयों, तथ और िनभमान से आपस में िड़े हुए ू ू ु व्यवक्तयों से समबवधत ह,ै " मानविकी ह।ै ं स्कलस काउक्रन्सल (1965) ने मानविकी को इस प्रकार परर्ावषत वकया ह ै "विवर्न्न विषयों का समह ू ू िो मख्यतः परुषों और वस्त्रयों से उनके िातािरि, उनके समदाय और उनके स्िय के ज्ञान से समबवधत ु ु ु ं ं रहता ह,ै मानविकी के अतगभत आता ह।ै " ं अभ्यास प्रश्न 1. मानविकी शब्द की उत्पवत्त वकस शब्द से हई ह?ै 2. Blyth ने मानविकी को वकस प्रकार परर्ावषत वकया ह?ै 1.4 मानववकी ववषयों का ववद्यालयी पाठ्यचया म स्थान ें मानविकी के अतगभत विवर्न्न विषय आते ह,ैं नेशनल एडोमेंट आॅ ह्यमवनटी के अनसार विन विषयों को ु ं ं ू मानविकी के अतगभत वलया िाता ह ै िे वनमनवलवखत ह;ैं ं □ आधवनक ्राषायें ु □ शास्त्रीय ्राषायें □ ्राषा शास्त्र □ सावहत्य □ इवतहास □ विवधशास्त्र/ न्यायशास्त्र □ दशभनशास्त्र उत्तराखण्ड मक्त विश्वविद्यालय 72 ु CPS -2 □ परातत्िविज्ञान ु परन्त िास्ति में मानविकी मात्र इन विषयों तक ही सीवमत नहीं बवलक कई अन्य विषय ्री मानविकी के ु अतगभत सवममवलत वकये िाते ह।ैं मानविकी का पाठयिम में 1960 के पश्चात बहत पररितभन आया ह।ै ् ् ं मानविकी में कछ अन्य विषयों को शावमल वकया गया ह ै िो अपक्षे

ाकत नए ह ैं विनमें, मवहला वशक्षा, ृ ु पयाभिरि वशक्षा, बहसास्कवतक वशक्षा, सास्कवतक वशक्षा, वफलम और मीवडया वशक्षा, कोलोवनयल और ृ ृ ं ं पोस्ट-कोलोवनयल वशक्षा, वचवकत्सकीय मानविकी इत्यावद सवममवलत ह।ैं विद्यालयी स्तर पर विन विषयों को मानविकी में सवममवलत वकया िाता ह ै ि उपयभक्त विषयों से थोड़े ु अलग ह।ैं उपयभक्त विषय मख्य रूप से उच्च कक्षाओ म ें पढ़ाय े िाते ह।ैं विद्यालयी स्तर पर सवममवलत ु ु ं मानविकी के अतगभत आने िाले विषयों का िििभन वनमनित ह ै । ं भाषा औि भाषा क्रवज्ञान ्राषा के ैज्ञावनक अध्ययन को ्राषा विज्ञान के रूप में िाना िाता ह।ै आम तौर पर ्राषा विज्ञान को एक सज्ञानात्मक विज्ञान से िड़ा माना िाता ह ै िहीं ्राषा मानविकी से अवधक िड़ा ह।ै विद्यालयी स्तर पर ु ु ं ्राषा विज्ञान हमारे पाठयिम का वहस्सा नहीं होता ह।ै ्राषा विज्ञान को उच्च स्तर पर पाठयचयाभ में ् ् सवममवलत कर वलया िाता ह ै िहीं ्राषा प्रारवर्क कक्षाओ में हमारे पाठयचयाभ का ्राग होती ह ै और यह ् ं ं मात्र एक विषय के रूप में ही नहीं होती बवलक अन्य विषयों के अध्ययन के वलए आधार ्री प्रदान करती ह ै । ्राषा के अि्रा में व्यवक्त वकसी ्री विषय का अध्ययन नहीं कर सकता ह ै तो यवद ्राषा को पाठयचयाभ की रीढ़ की हडडी कहा िाए तो यह अवतश्योवक्त नहीं होगी । यह मानविकी का के न्िीय विषय ् ् ह ै । साक्रहत्य सामान्य तौर पर सावहत्य का अथभ कविताओ, कहावनयों, उपन्यासों इत्यावद से लगाते ह।ैं सावहत्य एक ऐसा ं शब्द ह ै विसकी कोई सिभमान्य परर्राषा नहीं ह ै परन्त इसे विस रूप में परर्रावषत वकया िाता ह ै उनमे ु स्री वलवखत सामवग्रयों, रचनाओ, शास्त्र समहों इत्यावद को शावमल वकया िाता ह।ै सावहत्य ्राषा से ू ं अलग ह,ै यह और बात ह ै वक ्राषा की वशक्षा देन े के वलए सावहवत्यक सामवग्रयों का प्रयोग वकया िाता ह।ै इन सावहवत्यक सामवग्रयों में मात्र वलवखत सामवग्रया ही नहीं ली िाती ह ैं बवलक गेय, और मौवखक ग्रथों ं ं को ्री शावमल वकया िाता ह।ै मानविकी विषयों में सावहत्य का एक महत्िपिभ स्थान ह।ै यह विद्यावथभयों ू में सावहवत्यक रसास्िादन की योनयता बढ़ाने के साथ ही अन्य मलयों िैसे वर्न्न-वर्न्न ्राषा्रावषयों के ू मध्य वमत्रता का ि्रा पैदा करना, नागररक गिों और सस्कवत का विकास करना, विद्यावथभयों में वलखने ृ ु ं और पढन े के प्रवत रूवच उत्पन्न करना, विवर्न्न ्राषाओ ंँ को सरवक्षत करना एि उनका प्रसार करने से ं ं िड़ा हआ ह।ै ु उत्तराखण्ड मक्त विश्वविद्यालय 73 ु CPS -2 इक्रतहास इवतहास अतीत की सचनाओ का िमबि एि व्यिवस्थत सकलन ह।ै अध्ययन के विषय

Plagiarism detected: **0.19%** https://mycoaching.in/hindi-varnamala + 3 resources! id: **94**

के रूप में ू ं ं ं इवतहास को व्यवक्त, सिमि, सस्था या कोई अन्य चीज़ िो समय के साथ पररिवतभत हई हो के अध्ययन ं एि व्याख्या के रूप में वलया िाता ह।ै इवतहास मानविकी का ही एक ्राग ह ै परन्त इसे क्री-क्री ु ं सामाविक विज्ञान के एक ्राग के रूप में वलया िाता ह।ै विद्यालयी स्तर पर इवतहास एक स्ितत्र विषय के ं रूप में विद्यावथभयों को पढ़ाया िाता ह ै । भगोल ू मानविकी में गोंल को ्री सवममवलत वकया िाता ह।ै गोंल मानि और पथ्िी के परस्पर सबधों के ृ ू ू ं ं अध्ययन के रूप म

ें वलया िाता ह।ै विद्यालय के विवर्न्न स्तरों पर गोंल का स्िरुप पाठयिम के अतगभत ् ू ं पररिवतभत होता रहता ह ै । विद्यालयों में प्राथवमक स्तर पर यह विज्ञान के साथ रख पयाभिरि विज्ञान

Plagiarism detected: **0.05%** https://mycoaching.in/hindi-varnamala + 3 resources! id: **95**

के रूप में पढ़ाया िाता ह ै । गोंल को मानविकी, विज्ञान और सामाविक विज्ञान के विषयों के बीच एक कड़ी के ू रूप में द

ेखा िा सकता ह ै क्योंवक गोंल ही एक ऐसा विषय ह ै िो इन तीनों में सवममवलत वकया िाता ह ै । ू नागरिक शास्त्र नागररक शास्त्र में नागररकता, नागररक

Plagiarism detected: **0.05%** https://mycoaching.in/r-ke-roop-prakar-matra-s… + 3 resources! id: **96**

के रूप में अपने अवधकारों और कतभव्यों के सैावतक एि ं ं व्यािहाररक पहलओ का अध्ययन वकया िाता ह ै । एक रािवनवतक वनकाय के सदस्य के रूप में न

ागररक ु ं का अन्य नागररकों और सरकार के परस्पर सबधों का अध्ययन इस विषय के अतगभत वकया िाता ह ै । यह ं ं ं वसविल लॉ और वसविल कोड को सवममवलत करती ह ै । नागररक शास्त्र प्रारवर्क कक्षाओ से ही ं ं पाठयचयाभ का एक महत्िपिभ विषय ह ै । ् ू क्रचत्रकिी वचत्रकारी या ड्राइग, हमारी पिभ-प्राथवमक कक्षाओ से एक विषय

Plagiarism detected: **0.04%** https://mycoaching.in/hindi-varnamala + 3 resources! id: **97**

के रूप में पढ़ाया िाता ह।ै विद्यावथभयों ू ं ं को वशक्षा से िोड़ने के वलए इसे एक माध्यम के रूप म

ें दखे ा िाता ह ै क्योंवक विद्याथी वचत्रकारी में आनद ं का अनि्र् करते ह।ैं वचत्रकारी एक तस्िीर बनान े की तकनीक ह ै िो विवर्न्न उपकरिों और तकनीवकयों ु को प्रयोग में लाती ह।ै आम उपकरिों में ग्रेफाइट पेंवसल, कलम और स्याही, ब्रश, मोम रग, पेंवसल, ं ि योंस, तैल रग, चारकोल, पेस्टल और माकभ र को सवममवलत वकया िाता ह।ै प्राचीन समय में चारकोल, ं पत्तों, खवड़या, कोयले इत्यावद का प्रयोग, वचत्रकारी के वलए वकया िाता था। वचत्रकारी का ्री प्रयोग ्री आध्यावत्मक रूपाकनों और विचारों को व्यक्त करने के वलए वकया िाता ह।ै वचत्रकारी के कई तरीके होते ं ह ैं िैसे स्के वचग,आयल पेंवटग, लाइन वचत्रकारी, वस्िवब्लग इत्यावद। अलोरा की गफाय,ें मोनावलसा, द ु ं ं ं लास्ट सपर, इत्यावद वचत्रकला के नायाब नमने ह।ैं ू उत्तराखण्ड मक्त विश्वविद्यालय 74 ु CPS -2 अन्य कलायें विवर्न्न प्रकार की कलाए ्री मानविकी का वहस्सा ह ैं चाह े िह दृश्य

कला हो, मच कला हो, मवतभ कला ृ ं ं या स्थापत्य कला। सगीत और वचत्रकारी ॓री इसी के अतगभत आते ह,ैं पर सगीत और वचत्रकारी की चचा भ ं ं ं इस पाठ में दसरे शीषभक के अतगभत की िाएगी क्योंवक विद्यालयों में सगीत और कला की वशक्षा अलग ं ं ृ विषय के रूप में दी िाती ह।ै मनष्य प्रारर् से ही इन विवर्न्न प्रकार की कलाओ का शौक़ीन रहा ह।ै मनष्य ु ु ं ं ने अपने विकास के साथ ही इन कलाओ में अपनी रुवच प्रकट की ह।ै िह चाह े परा पाषाि काल या ु ं पाषाि काल के वर्वत्तवचत्र हों या विवर्न्न नदी घाटी सभ्यताओ में वमलन े िाली मवतभयाँ या वचत्रकारी। ृ ं वसन्ध, माया, रोमन, मेसोपोटावमया, इनका स॓री प्राचीन नदी घाटी सभ्यताओ में इन कलाओ के नमन े ु ृ ं ं

Plagiarism detected: **0.08%** https://www.amojeet.com/2021/05/ka-se-gy-tak… + 3 resources! id: **98**

प्राप्त हए ह।ैं बाद के िषों में ॓री विवर्न्न रि िशों और शासकों के समय के विवर्न्न प्रकार की कला के ं नमने प्राप्त हए ह ैं िो उनके कला-प्रेम के साथ साथ िैज्ञावनकता का ॓री प्रमाि दते े ह।ैं ॓रारत विवर्न्न प्रकार ृ क

ी कलाओ का साक्षी रहा ह।ै दशे के विवर्न्न मवदर, मकबरे , स्तप, स्मारक इत्यावद इसका उदहारि ह।ैं ृ ं ं चीन की दीिार, पीसा की मीनार, वमस्र के वपरावमड इत्यावद समपिभ विश्व में पाए िाने िाले इन कलाओ के ृ ं कछ नमन े ह।ैं ु ृ इन कलाओ में धम भ का ॓री स्पष्ट प्रर्ाि दखे ा िा सकता ह।ै हर एक धमभ की मान्यताओ के अनसार उसके ु ं ं अननाइयों ने कला की रचना की ह।ै िैसे वहन्द धमभ के अननाइयों ने वचत्रकारी और मवतभ कला के ु ु ृ ृ साथ-साथ स्थापत्यकला पर बल वदया, इस्लाम में विसमें कला शास्त्र की मनाही ह ै ऐसे में ज्यावमवत के माध्यम से धावमभक विचारों को अवर्व्यक्त वकया है, और ऐसे म ें मकबरों, मीनारों िैसे स्मारकों का वनमाभि वकया। ईसाई धमभ में कछ मनाही न होने के कारि कला के विवर्न्न माध्यमों से धावमभक विचारों को ु अवर्व्यक्त वकया ह।ै स॓री धमों न े अपने वहसाब से ईश्वर के रूप को दशाभन े की कोवशश की ह।ै यह सत्य ह ै वक कला का रूप अलग रहा ह ै परन्त य े स॓री हमें कला का रसास्िादन कराती ह ै और हमारे अन्दर कोमल ु र्ािों को उद्ववे लत करती ह ैं और विद्यावथभयों में अपने दशे के साथ-साथ अन्य समदायों और दशे ों के वलए ु ं आदर का र्ाि पैदा करती ह ै । नत्य ृ नत्य कला की एक अत्यन्त प्राचीन विधा ह ै िो उस समय से इस समय तक चली आ रही ह ै । ृ उदाहरितः- र्रतनाटयम नत्य का उद्भि र्गिान वशि के रौद्र रूप में आकर वकए गए ताण्डि से माना ृ ृ ं िाता ह ै । कहा िाता ह ै वक िब सती ने वपतगह में अिहले ना पाकर यज्ञकड में कदकर अपनी िान द े दी ृ ृ ु ृ ं थीं तो उनके झलसे हए शरीर को वशि ने अपने कधे पर उठाकर रौद्र रूप धारि कर महाताण्डि वकया था ं ं ु और त॓री र्रतनाटयम की शरुआत हई थी । यही कारि ह ै की र्रतनाटयम नत्य में नटराि की मवतभ ृ ृ ृ ु ृ रखकर नत्य वकया िाता ह।ै इसी प्रकार अन्य नत्यों के पीछे ॓री कछ दतकथाएँ ह ैं िो एक कला रूप की ृ ृ ु ं प्राचीनता को वसद्ध करती ह ैं । उत्तराखण्ड मक्त विश्वविद्यालय 75 ु CPS -2 ॓रारतीय नत्य को मख्य रूप से दो ॓रागों में बाँटा िा सकता ह;ै शास्त्रीय नत्य एिं लोक नत्य। शास्त्रीय नत्य ृ ृ ृ ृ ु ं में र्रतनाटयम, कथकली, कत्थक, मवणपरी, ओवडसी, कवचपड़ी, सवत्रया नत्य आते ह ैं । लोक नत्य के ृ ृ ृ ु ु ु मख्य प्रकारों में यक्षगान, वबह, गरबा, पवणहारी, र्ांगड़ा इत्यावद। ॓रारत में हर एक क्षेत्र की एक अलग ृ ु ं नत्य शैली पाई िाती ह ै । इसके अलािा पाश्चात्य नत्य के ॓री कई प्रकार ह ैं विसमें सालसा, ब्रेक डास, रॉक ृ ृ ं एड रोल इत्यावद आते ह ैं । बच्चों को इन स॓री नत्य शैवलयों को बताया िा सकता ह,ै उनकी प्रारवर्क ृ ं ं पहचान नत्य शैली में करायी िा सकती ह ै और तत्पश्चात उनकी रुवच िाली विधा में उनको आगे सीखने को ृ प्रोत्सावहत वकया िा सकता ह ै । नत्य ॓री विद्यावथभयों में वक्रयात्मक पक्ष से िड़ुे स॓री मलयों का विकास ृ ु ृ करने में मदद करती ह ै । सगीत ं ॓रारतीय सगीत का प्रादर्ाभि िद के मन्त्रोच्चार से माना िाता ह ै । इस प्रकार कहा िा सकता ह ै वक ॓रारत म ें ं ं ु सगीत का प्रारर् लगर्ग 5000 साल से पहले हआ था । इसके और प्राचीन होने का प्रमाि इस कारि ं ं नहीं वमल सकता क्योंवक अन्य कलाओ की तरह सगीत गफा की दीिारों या वर्वत्त वचत्

Plagiarism detected: **0.06%** https://mycoaching.in/hindi-varnamala + 3 resources! id: **99**

रों के रूप में उके रा ु ं ं नहीं िा सकता । और न ही मवतभकला के रूप में आ सकता ह ै । यह श्रव्य माध्यम ह ै अतः राग के रूप म

ें ृ मात्र एक पीढ़ी से दसरी पीढ़ी में िा सकता ह ै । यही कारि ह ै वक अत्यन प्राचीनकाल में इसके होन े की ृ प्रमाविकता को वसद्ध नहीं वकया िा सकता ह ै पर यह कहा िा सकता ह ै वक सगीत का प्रारर् मानि ं ं िीिन के प्रारर् के साथ ही हो गया होगा । ं सगीत को मख्य रूप से दो ॓रा

Plagiarism detected: **0.13%** https://hindireadduniya.com/chart-of-hindi-alpha… id: **100**

गों में बाँटा िा सकता ह;ै विसमें पहला ह ै गायन और दसरा ह ै ु ं ृ िादन । यवद इनको आगे ॓री वि॓रावित वकया िाए तो गायन को अन्य ॓रागों में बाँटा िा सकता ह ै िैसे लोकगीत, शास्त्रीय सगीत और पाश्चात्य सगीत । ॓रारतीय सगीत को तीन मख्य ॓रागों में बाँटा िा सकता ु ं ं ं ह-ै वहन्दस्तानी शास्त्रीय सगीत, कनाभटक शास्त्रीय सगीत और क्षेत्र

ीय सगीत। ितभमान समय में शास्त्रीय ं ं ं ु सगीत में दो प्रकार के सगीत को वलया िाता ह;ै वहन्दस्तानी और कनाभवटक । कनाभवटक सगीत में कनाभटक, ं ं ं ु आंध्र प्रदशे , तवमलनाड और के रल के शास्त्रीय सगीत को वलया िाता ह ै । वहन्दस्तानी शास्त्रीय सगीत में ु ं ं ं ु गाने की शैली के अनसार कई घराने होते ह ै िैसे बनारस घराना, ग्िावलयर घराना, आगरा घराना, ु पवटयाला घराना, वदलली घराना इत्यावद । शास्त्रीय सगीत में ध्रपद, धमर, ख्याल, तराना आती को ु ं सवममवलत वकया िाता ह ै िहीं अधभशास्त्रीय सगीत में ठमरी, दादरा, कव्िाली, ग़ज़ल, चैती, किरी को ु ं वलया िाता ह ै । सगीत वशक्षा शावत को बढ़ािा

देना और विविधता की सराहना करना वसखाती ह ै । ं ं िशतन दशभनशास्त्र िह ज्ञान ह ै िो परम सत्य और प्रकवत के वसिातों और इनके पीछे के कारिों की विवेचना ृ ं करता ह।ै दशभन यथाथभ को परख सकने का दृवष्टकोि ह।ै दाशभवनक वचतन मलत: विन्तन के अथभ को खोि ू ं करने के रूप में डीक्य गया प्रयास ह।ै िस्ततः दशभनशास्त्र स्ितंत्र अथाभत प्रकवत तथा समाि और मानि ृ ु उत्तराखण्ड मक्त विश्वविद्यालय 76 ु CPS -2 वचतन तथा सज्ञान की प्रविया के सामान्य वनयमों का विज्ञान ह।ै दशभनशास्त्र सामाविक चेतना का एक रूप ं ं ह ै । सामान्यतः Philosophy शब्द को दशभन के अंग्रेिी शब्द के रूप में दखे ा िाता ह ै परन्त दोनों में अतर ु ं ं ह।ै दशभन िहााँ यथाथभता का तत्ि ज्ञान ह ै और वफलोसोफी विवभन्न विषयों का विश्लेष । वफलोसोफी का शावब्दक अथभ ज्ञान के प्रवत प्रेम से ह।ै वफलोसोफी के अथों में दशभनशास्त्र शब्द का प्रयोग सिभप्रथम पाइथागोरस ने वकया था और एक विवशष्ट अनशासन के रूप में दशभन को प्लेटो ने विकवसत वकया। दशभन ु शास्त्र वक तीन मख्य शाखाय ें ह;ैं पहला तत्ि मीमासा, दसरा ज्ञान मीमासा और तीसरा मलय मीमासा। ु ू ं ं ं ू हालावक दशभन प्रारवभ्

Plagiarism detected: **0.04%** https://hindimatra.org/ id: **101**

क कक्षाओ में एक स्ितंत्र अनशासन के रूप में पाठयचयाभ में सवममवलत नहीं होता ह ै ् ु ं ं ं ं पर

विवभन्न विषयों के माध्यम से दशभन पढ़ने का प्रयास विद्यालयों में वकया िाता ह।ै उच्च माध्यवमक कक्षाओ से दशभन शास्त्र के स्ितंत्र अनशासन के रूप में पाठयचयाभ में सवममवलत हो िाता ह।ै ् ु ं ं नक्रवज्ञान ृ नविज्ञान या Anthropology शब्द की उत्पवत्त ग्रीक ्राषा के शब्द anthropos से हई ह ै विसका अथभ ृ मनष्य या व्यवक्त ह।ै नविज्ञान मानि विज्ञान का समग्र विषय ह ै िो मानि के अवस्तत्ि की समग्रता का ृ ु विज्ञान ह।ै यह विषय सामाविक विज्ञान, मानविकी और मानि शरीरशास्त्र के विवभन्न पहलओ के ु ं एकीकरि से समबवधत ह।ै यवद इन विषयों को अलग-अलग विषयों में दखे ा िाए तो उसका सही रूप ं क्री नहीं बन सकता बवलक िह इसकी कछ शाखाओ का ही रूप ले सकता ह।ै नविज्ञान विषय का लक्ष्य ृ ु ं मानि और मानि स्िि्रा के वलए एक समग्र लेखा िोखा प्रदान करना ह ै । विद्यालयों में नविज्ञान एक ृ अलग विषय के रूप में नहीं पढ़ाया िाता बवलक यह विज्ञान और र्गोल का ्राग होता ह ै । विवभन्न ू कालों में मनष्य में वकस-वकस प्रकार के पररितभन आय े ह,ैं ितभमान स्िरुप में आन े के वलए मनष्य वकन ु ू बदलािों का साक्षी रहा ह ै और उसने वकस प्रकार प्रगवत की ह ै का समपिभ अध्ययन नविज्ञान के अतगभत ृ ू ं वकया िाता ह।ै िमत धमभ ्री विद्यालयी स्तर पर वकसी अलग विषय के रूप में ना पढ़ाय े िाकर स्री विषयों में आधार के रूप में शावमल वकया िाता ह।ै ्रारत िो स्िय में एक धमभवनरपेक्ष देश ह;ै के पाठयचयाभ और पस्काओ का ् ु ं ं विकास करते हए यह ध्यान रखा िाता ह ै वक पैसे कोई ्री पाठ शावमल ना वकए िायें विससे यह प्रतीत हो वक वकसी धमभ का प्रसार वकया िा रहा ह ै या वकसी धमभ के अननाइयों की िि्राना को आहत वकया िा ु रहा ह ै । यह प्रयास वकया िाता ह ै वक इसी प्रकार के पाठ शावमल वकए िाय ें विससे धमभवनरपेक्षता को बढ़ािा वमले और स्री धमों के प्रवत आदर का विकास हो िो शावत एि विविधता को सममान देन े के ं ं वलए आिश्यक ह ै । िैसे यवद धमभ को एक विषय के रूप में दखे ा िाए तो छठे ईसा पिभ के दौरान धमभ तथा ू नया दशभन पिी तथा पवश्चमी देशों में उत्पन्न हए। समय के साथ परी दवनया में कई धमों का प्राद्राभि हआ ू ू ु ु हआ िैसे, सनातन धमभ, इस्लाम, ईसाईयत, पारसी, िैन, बौि, वसख, इत्यादी। समय आने पर इन धमों की उत्तराखण्ड मक्त विश्वविद्यालय 77 ु CPS -2 कई शाखाय ें इनके अननैयों के वहसाब से बनीं। िैसे सनातन धमभ में शैि, िैष्णि और शक्त, इस्लाम में ु वशाया और सन्नी और उसके बाद अन्य कई शाखायें, ईसाईयत में कै थोवलक और प्रोटेस्टेंट (ओलड ु टेस्टामेंट और न्य टेस्टामेंट), बौि धमभ में हीनयान और महायान, िैन धमभ में श्वेतामबर और वदगबर ू ं इत्यावद। इन स्री धमों और उनकी विचारधाराओ ने ईश्वर का रूप अपन े अनसार से परर्रावषत वकया। ु ं विचारधाराओ के अलग होन े के बाद ्री, और ईश्वर का अलग-अलग स्िरुप मानने के बाद ्री इन स्री ं धमों का सार एक ही ह।ै ये स्री सत्य, दया, प्रेम, आस्था, विश्वास, बधत्ि के पक्षधर ह।ैं ु ं अभ्यास प्रश्न 3. मानविकी के अतगभत वकन-वकन विषयों को सवममवलत वकया िाता ह?ै ं 4. सावहत्य विद्यावथभयों में वकन मलयों का विकास करती ह ै ? ू 5. इवतहास को परर्रावषत कीविए । 1.5 मानववकी से जुड़े मुद्द े और चुनौवतया ाँ □ दशे में मानविकी म ें हए शोध इतन े सफल नहीं रह े ह ैं विनके द्वारा मानविकी को एक एकीकत ृ अनशासन

Plagiarism detected: **0.05%** https://mycoaching.in/r-ke-roop-prakar-matra-s… + 3 resources! id: **102**

के रूप में व्याख्या की िा सके या सचावलत वकया िा सके । यद्यवप सैिवतक रूप से ु ं ं से हम मानविकी को एक एकीकत अनशासन के रूप म

ें विकवसत करने के पक्षधर रहते ह ैं परन्त ृ ु ु पाठयपस्तकों, वशक्षि और सचालन के मामले में खवडत व्यिहार और दृवष्टकोि अपनाते ह।ैं ् ु ं ं □ मानविकी के प्रवत विद्यमान दृवष्टकोि एक और मसला ह।ै एक लोक-सममत दृवष्टकोि मानविकी विषयों के गैर उपयोवगता से समबवधत ह।ै लोग इसे गैर उपयोगी विषय समझते ह ैं और ं पररिामस्िरूप कक्षा वशक्षि के दौरान ्री इस विषय को लेकर कम सममान रहता ह ै और ि विद्याथी ्री िो इस विषय को पढ़ते ह ैं उन्

Plagiarism detected: **0.06%** https://mycoaching.in/r-ke-roop-prakar-matra-s… + 2 resources! id: **103**

ह ें स्िय को लेकर उस स्तर का स्ि-सममान नहीं वदखा ं पाते ह ैं वितना विज्ञान विषयों के विद्यावथभयों में होता ह।ै विज्ञान को मानविकी के तलना में श्रेष्ठतर ु विषय के रूप म

ें दखे ा िाता ह।ै यह प्रचवलत धारिा ह ै वक मानविकी विषय मात्र सचना देन े िाले ू ही विषय ह ैं िो के िल वलवखत पाठों और उनके स्मरि से ही समबवधत ह।ै उच्च स्तर की ं मानवसक वियाओ को यह सवममवलत नहीं करता ह।ै ं □ यह ्री माना

ि ाता ह ै वक मानविकी विषयों के अध्ययन और विशेषज्ञता प्राप्त करने के पश्चात ् रोिगार के अिसर उतने अवधक नहीं ह ैं वितने की विज्ञान के अध्ययन के पश्चात वमलते ह।ैं साथ ् ही यह व्यािहाररक ि गत हते ि ि न-कौशल नहीं प्रदान कर पाता ह।ै वशक्षा की राष्ट्रीय ु पाठयचयाभ-2005 ने मानविकी से समबवधत विवर्न्न विषयों में अनप्रयोग के स्थान पर धारि को ् ु ं अवधक महत्ि वदया ह।ै उत्तराखण्ड मक्त विश्वविद्यालय 78 ु CPS -2 □ र्ारत विविधता से पररपिभ देश ह।ै अतः यह आिश्यक हो िाता ह ै वक पाठयपस्तकों में हर एक ् ू ु प्रदशे और सामाविक समह को स्थान वमले पर दशे की सास्कवतक िहदता और के न्द्रीय स्तर पर ृ ् ू ं पाठयपस्तकों के वनमाभि के कारि हर एक प्रदशे को उन पस्तकों में स्थान देना मवश्कल हो िाता ् ु ु ु ह।ै □ यह धारिा ह ै वक मानविकी के विषयों में ि ज्ञावनक कठोरता का अर्ाि ह ै और एक हद तक यह बात सही र्ी ह।ै □ विवर्न्न अनशासनों के मध्य अन्तसभमबन्ध स्थावपत करना। इस विषय की विविध प्रविवधयाँ ह।ैं ु तो कई बार अन्तसभमबन्ध स्थावपत करना कवठन हो िाता ह।ै साथ ही यह र्ी वक सर्ी प्रकरि अन्तसभमबवधत करते हए पढ़ाए र्ी नहीं िा सकते ह।ैं ं □ मानविकी विषयों के साथ कछ मानकीय समस्याए र्ी ह।ैं मानविकी विषयों पर एक प्रामाविक ु विममेदारी ह ै िो मानिीय मलयों िैसे स्ितत्रता, विश्वास, परस्पर आदर का र्ाि, और विविधता ू ं के प्रवत आदर के र्ाि के लोकवप्रय आधार का वनमाभि और विस्तार कर सकें । □ कई लोग यह मानते और महसस करते ह ैं वक समवन्ित उपागम वकसी र्ी अनशासन के बनािट ू ु और अनठेपन के वलए एक खतरा ह।ै ू □ मानविकी में सवममवलत विवर्न्न विषयों की पाठयपस्तकों के लेखकों का दृवष्टकोि विस्तत करने ृ ् ु की आिश्यकता ह।ै हमारी पाठयपस्तकों में समन्िायन का अर्ाि ह।ै ् ु □ सामाविक और रािनीवतक मद्दों को को विचारोत्तेिक रूप से प्रस्तत करके मानविकी के वस्थवत ु ु में सधार लाने की आिश्यकता ह ै । ु □ लोगों में िागरूकता लाना तथा लोगों की मानवसकता पररिवतभत करना। रोिगार के अिसर `बढ़ाकर मानविकी के वस्थवत में सधार करना आिश्यक ह ै । ु □ लोगों को मानविकी के महत्ि की वशक्षा देना। □ मानविकी की बेहतर पस्तकों का वनमाभि करना। वकसी र्ी प्रकरि पर आगे के अध्ययन के वलए ु रास्ता खोलना चावहए। लैंवगक समानता को और प्रोत्सावहत करना चावहए। विषय को और एकीकत दृवष्टकोि से समझना और समझाना चावहए। प्रश्नों और मलयाकन का स्तर बेहतर होना ृ ू ं चावहए। अथाभत ये मात्र स्मरि पर आधाररत नहीं होने चावहए बवलक उच्च स्तर की मानवसक वियायें इसमें सवममवलत होनी चावहए। □ बेहतर तरीके से मानविकी विषयों को पढ़ाने के वलए वशक्षक प्रवशक्षि दने ा चावहए । अभ्यास प्रश्न 6. मानविकी विषयों की क्या विममेदारी होती ह ै ? उत्तराखण्ड मक्त विश्वविद्यालय 79 ु CPS -2 7. विद्यालयों में वशक्षकों और छात्रों के द्वारा विज्ञान विषयों को मानविकी विषयों की तलना में ु अवधक महत्ि वदया िाने का क्या कारि ह ै ? 1.6 शांवत वशक्षा एवं वववववधता के वलए सम्मान के बीजारोपण के सन्दर् भ म ें मानववकी म सम्मवलत ववषयों से सम्बवधत मुद्द े और चुनौवतया ाँ ें ं विज्ञान के ज्ञान न े व्यवक्त का उत्थान तो वकया ह ै और व्यवक्त के उत्थान के साथ ही समाि में र्ी प्रगवत की दृवष्ट से गत्यात्मक पररितभन हआ ह ै पर इस प्रगवत के साथ ही सामाविक, मानिीय तथा नैवतक मलयों में ु ू वगरािट आयी ह।ै समाि की प्रगवत तो दी ह।ै विज्ञान हमें कशल और विकवसत तो बना सकता ह ै पर ु मानविकी विषयों के अर्ाि में हम एक व्यवक्त की मनष्य के रूप में कलपना र्ी नहीं कर सकते। मलयहीन ु ू समाि में कर्ी र्ी एक व्यवक्त मनष्य नहीं बन सकता। मानविकी में शावमल वकए िान े िाले विषय ु सावहत्य, कला, वशलपकला, नत्य, वचत्राकन इत्यावद व्यवक्त के र्ािात्मक पक्ष का र्ी विकास करते ह ैं िो ृ ं मनष्य को इस योनय बनता ह ै वक िह वकसी र्ी विषय पर संिेदना के साथ सोच और समझ सके । िहीं ु ं दशभनशास्त्र हमें तावककभ क ढग से सोचने और समझन े की क्षमता प्रदान करता ह।ै ितभमान समय में मानविकी ं का ज्ञान मानि अनर्िों को खोिन े और समझने के वलए एक आदशभ आधार प्रदान करता ह।ै िैसे वक ु यवद हम दशभन को पढ़ रह े ह ैं तो दशभन की कोई शाखा उससे िड़े हए वकसी नवैतक प्रश्न का उत्तर िानने के ु वलए हमें उद्बवे लत कर सकती ह।ै वकसी अन्य र्ाषा के अध्ययन के द्वारा हम अन्य या विवर्न्न सस्कवतयों ृ ं में समानतायें ढूँढ सकते ह ैं साथ ही उनकी सराहना कर सकते ह।ैं वकसी मवतभ को दखे ते हए हम यह विचार ू ू कर सकते ह ैं वक कै से कलाकार के ि ि न के अनर्िों ने उसकी रचनात्मकता को प्रर्ावित वकया ह।ै विश्व ु के वकसी और प्रदशे या र्ाग से समबवधत वकताब पढ़कर हम िहाँ के लोकतत्र को िान और समझ सकते ं ं ह।ैं वकसी र्ी इवतहास को पढ़कर या सनकर हम अतीत वक घटनाओ को बेहतर तरीके से समझ सकते ह ैं ु ं और उसी समय में र्विष्य का एक स्पष्ट वचत्र र्ी प्रस्तत कर सकते ह।ैं ु यवद कहा िाए वक विद्याथी में मलयों का बीिारोपि करने में सबसे महत्िपिभ र्वमका मानविकी से ू ू ू समबवधत विषय वनर्ाते ह ैं तो यह कहीं से र्ी अवतशयोवक्त नहीं होगी। मानविकी के अतगभत विन विषयों ं ं को पढ़ाया िाता ह ै िे सर्ी विषय शावत वशक्षा और विविधता की समझ में महत्िपिभ र्वमका वनर्ाते ह।ैं ू ू ं शावत वशक्षा की पाठयचयाभ सामान्यतया द्वद्व, सहकाररता, परस्पर वनर्रभ ता, िैवश्वक िागरूकता, सामाविक ् ं ं तथा पाररस्थवतक उत्तरदावयत्ि से समबवधत अनदशे ों को सवममवलत करती ह ै । शावत और विविधता के ु ं ं वलए सराहना समाि में लान े के वलए दो मख्य मागभ ह।ैं पहला प्रसग आधाररत एकीकरि और दसरा विषय ु ं ू आधाररत एकीकरि। प्रसग आधाररत वशक्षि एकीकरि पाठ में िब र्ी आिश्यकता हो विविधता और ं शावत के मलयों वक वशक्षा को सवममममवलत करता ह।ै िहीं पर विषय के वन्ित वशक्षि एकीकरि उन मद्दों ू ु ं को उठाने से समबवधत ह ै िो ज्िलत हों और वफर उस मद्द े को इवतहास और रािनीती विज्ञान से समबवधत ु ं ं ं करके कारि, उपाय और उपादेयता को िानने से ह ै । उत्तराखण्ड मक्त विश्वविद्यालय 80 ु CPS -2 □ मानविकी विषयों का अध्ययन विद्याथी को एक अच्छा नागररक बनाने में मदद करता ह।ै एक अच्छा नागररक अपनी समस्त कतभव्यों का वनिभहन करता ह।ै कोई र्ी सफल अपन े मलयों पर वनर्रभ ू करता ह।ै इन मलयों में प्रेम, त्याग, क्षमा, परोपकार, दया, करुिा, र्ाईचारा, उदारता, विश्व-बधत्ि और ृ ू ु ं विश्व-शावत इत्यावद को सवममवलत वकया िाता ह।ै मानविकी इन गिों और विशेषताओ को ु ं ं विद्यावथभयों में बीिारोवपत करती ह ै और उनका मलयाकन करती ह।ै ू ं □ दसरों के वलए उनकी िावत, ि िभ, प्रािवत, रूप रग, नागररकता, उम्र, िेंडर, वलग, रािनीवतक तथा ं ं ू धावमभक विश्वास, शारीररक तथा मानवसक योनयता के इतर आदर करन े की र्ािना पोवषत करती ह।ै □ मानविकी का

अध्ययन विद्यावथभयों को रचनात्मक बनता ह।ै मानविकी विषय विद्यावथभयों को इस योनय बनता ह ै वक उनके मवस्तष्क में रचनात्मक विचार उत्पन्न हो सकें । विवर्न्न लोगों की िीिनी, सावहत्य, इवतहास, ्राषा विद्यावथभयों के समक्ष नए आयामों को लेकर आते ह ैं विससे ि अन्य मनष्यों ु और उनसे िड़े समाि की प्रकवत को समझ सकें िो शावत वशक्षा के वलए मददगार ह।ै ृ ु ं कला छात्रों को सौन्दय भ बोध कराती ह ै और उसका रसास्िादन करने में मदद करती ह।ै साथ ही एक समपिभ और अथभपिभ िीिन िीने में मदद करती ह ै िो शावत और विवर्न्नता की समझ के वलए ू ू ं आिश्यक ह ै । मानविकी का अध्ययन विद्यावथभयों में सिादशीलता और दसरे के साथ काम करने की योनयता को ं ू बढ़ाता ह।ै यह अन्य विद्यावथभयों के साथ छात्रों के व्यवक्तगत सबधों को मिबत बनान े में मदद करता ू ं ं ह।ै िैसे नागररकशास्त्र के अतगभत हम अपने अवधकारों के साथ साथ कतभव्यों के बारे में िान पाते ह।ैं ं िो हमारे अन्दर अच्छे नागररक के गिों को बढ़ाता ह।ै हम समझ पाते ह ैं वक हमारे अवधकार ही नहीं ु बवलक कछ कत्तभव्य ्री ह ैं विन्ह ें परा करना चावहए। इसके साथ ही हम यह ्री समझ पाते ह ैं वक विस ु ू प्रकार से हमें अवधकार वमले ह ैं अगले व्यवक्त को ्री िही अवधकार प्राप्त ह ैं ऐसे में हमें उनके अवधकारों का ्री सममान करना चावहए । व्यवक्त अपने नागररक और सास्कवतक विममेदाररयों को ृ ं परा करने के वलए तैयार करते ह।ै ू मानविकी के अध्ययन द्वरा विज्ञान, तकनीकी तथा वचवकत्सा के प्रिा्ि को समझा िा सकता ह ै अतः मानविकी का ज्ञान मात्र मानविकी को ही नहीं बवलक विज्ञान, तकनीकी तथा वचवकत्सा को ्री समझने में मदद करती ह।ै विज्ञान ने समाि को आकार देन े में और लोगों के िीिन की गिित्ता पर ु वकस प्रकार से सकारात्मक या नकारात्मक प्रिा्ि डाला ह;ै सावहत्य इवतहास और दशभन इसको समझने में मदद करती ह।ै इसके साथ ही मानविकी के य े विषय समाि की आिश्यकता को ्री बताते ह ैं और विज्ञान को वदशा देने में मदद करते ह ैं वक िह आिश्यकता के अनसार कायभ कर सके । ु विद्याथी मात्र अपनी मात्राषा का ज्ञान ही नहीं

Plagiarism detected: **0.04%** https://www.amojeet.com/2021/05/ka-se-gy-tak… id: **104**

प्राप्त करते बवलक आप अन्य स्थानीय ्राषाओ के ृ ं साथ-साथ विदशे ी ्राषाओ और विदशे ी सस्कवतयों के विषय में ज्ञान प्राप्त

कर पाते ह।ैं िो न के िल ृ ं ं उनके ज्ञान के क्षेत्र को विस्तत करता ह ै बवलक राष्रीयता और अतराभष्रीय समझ िैसे गिों को ्री ृ ु ं उत्तराखण्ड मक्त विश्वविद्यालय 81 ु CPS -2 विकवसत करता ह।ै विद्याथी में अपने देश वक सस्कवत के प्रवत गिभ का िा्ि िागत होता ह ै और और ृ ृ ं िह अपने देश की विविधता को समझ पाते ह।ैं सावहत्य के द्वारा उनमें विवर्न्न नैवतक, सामाविक और सास्कवतक मलयों का विकास सिं्र् हो पाता ह।ै ृ ू ं ं िैश्वीकरि के दौर में आधवनक और अतराभष्रीय ्राषाओ का ज्ञान और अन्य दशे ों वक सस्कवत की ृ ु ं ं ं िानकारी आिश्यक ह ै ऐसे में विदेशी ्राषा और सावहत्य का अध्ययन उनकी इस समझ को बढ़ान े में मदद करता ह ै । ्राषा और कला के द्वारा की गयी िा्िावर्व्यवक्त शावत में योगदान देती ह ै । ं शावत से समबवधत बातों का दृष्टान्त दने ा शावत वशक्षा में मदद करता ह।ै िैसे कोई दशे वकसी ्री ं ं ं यिह पररवस्थवत से गिर रहा हो और िहाँ शावत स्थावपत करन े हते कोई कायभ का उदाहरि दके र ु ु ं छात्रों को इस तरफ उत्प्रेररत कर सकता ह ै । शावत से समबवधत मद्दों पर नाटक का आयोिन वकया िा सकता ह ै । ु ं ं सगीत को सवममवलत करना क्योंवक इससे यह सामिस्य, मधरता का वनमाभि करता ह ै और विश्व ु ं ं शावत का सन्दशे देते ह ैं तथा विश्व एकता की बात करते ह।ैं सगीत एक ऐसा माध्यम ह ै िो परे विश्व को ू ं ं एक सत्र में बाँध सकता ह।ै कहा िाता ह ै वक सगीत की कोई ्राषा नहीं होती ह ै और यह सीमातीत ू ं होता ह ै ऐसे में विश्व शावत में सगीत महत्िपिभ र्वमका अदा कर सकता ह।ै ू ू ं ं शावत से समबवधत विषयों पर कविता, गद्य एि कहानी वलखना तथा इसके वलए विवर्न्न ं ं ं प्रवतयोवगताओ का आयोिन करना विससे विद्यावथभयों के अन्दर विश्व शावत की िा्िना का विकास ं ं हो सकता ह ै । अितरिं, पाठय पस्तकों की समीक्षात्मक विश्लेषि करना, साथ ही शावत और विवर्न्न स्थानों की ् ु ं विविधता के महत्ि को समझने के वलए अितरिं को पढ़ना और वनवहताथभ को समझना मानविकी के द्वारा वकया िाता ह ै । कला और वशलप की िानकारी देनी चावहए तथा दसरे स्थानों की कला और वशलप को पाठयचयाभ में ् ू शावमल करना चावहए। इसके साथ ही कला से समबवधत अनर्िों और वनमाभि का कक्षा में ं सामवहक रूप से प्रयास वकया िा सकता ह ै क्योंवक विवर्न्न समाि वक वर्न्न कला तथा वशलप ू विविधता को समझन े का आधार प्रदान करती ह ै और विश्व को नए दृवष्टकोि से समझने की क्षमता प्रदान करती ह।ै इसके द्वारा विद्याथी शावत हते र्विष्य की अतदृभवष्ट प्राप्त कर सकते ह ैं ु ं ं सगीत , दृश्य कला की रचना और मचन सहयोग िैसे कौशलों को बढ़ा सकता ह।ै सगीत को सनना ु ं ं ं और इसकी सराहना अन्य स्थानों के सास्कवतक मलयों के वलए ्री सराहना के िा्ि को विकवसत ृ ू ं करता ह।ै शावत वशक्षा से समबवधत नाटकों का सपादन विससे विद्यावथभयों के अन्दर समानर्वत की िा्िना ु ू ं ं ं विकवसत हो सके । उत्तराखण्ड मक्त विश्वविद्यालय 82 ु CPS -2 मानविकी से िड़े विषयों का अध्ययन व्यवक्त को पिभ और साथभक िीिन प्रदान करता ह ै । ु ू मानविकी के अध्ययन के फलस्िरूप विद्यावथभयों में िीिन मलयों का विकास सिं्र् हो पता

Plagiarism detected: **0.05%** https://mycoaching.in/hindi-varnamala + 3 resources! id: **105**

ह ै िो ू ं िीिन के प्रत्येक स्तर पर उनकी मदद करते ह।ैं मानविकी के ध्यान के फलस्िरूप हम प्रत्येक वस्थवत में अपनी अतदृभवष्ट का प्रयोग

करना सीख िाते ं ह।ैं मानविकी मानिीय मलयों को समझन े में हमारी मदद करता ह।ै विविधता के प्रवत सममान और ू शावत हते मानिीय मलयों को िानना अवतआिश्यक ह ै । हम िब तक मलयों को िानेंगे ही नहीं ु ू ू ं वक एक मानि के रूप में वकन गिों की अपेक्षा हमसे की िाती ह ै तब तक हम उन गिों को ु ु विकवसत नहीं कर सकते ह ैं । मानविकी में और मानविकी के

द्वारा हए अन्िषिों के माध्यम से हम रचनात्मक एि ं आलोचनात्मक तरीके से सोचना, तकभ करना और प्रश्न करना सीखते ह।ैं अभ्यास प्रश्न 8. ाराषा शावत वशक्षा और विविधता के प्रवत आदर का िरा वकस प्रकार विकवसत करती ह ै ? ं 9. सगीत शावत वशक्षा और विविधता के प्रवत आदर का िरा विकवसत करने में वकस प्रकार मदद ं ं करती ह ै ? 1.7 सारांश मानविकी के विषयों को उदारिादी कलाओ के ाराग के रूप में दखे ा िाता ह।ै Webster's Dictionary ं के अनसार मानविकी

Quotes detected: **0.04%** id: **106**

"सीखन े और वशक्षि की शाखाओ का मख्य रूप से एक सास्कवतक चररत्र होता ृ ु ु ं ं ह।ै "

यह ाराषा, सावहत्य, कला, सगीत, दशभन और धमभ पर बल दते ा ह।ै िसा वक पिभ में िविभत वकया गया ू ं ह ै वक मानविकी में इवतहास, शास्त्रीय अध्ययन, उदारिादी कलाओ, अंग्रेी, कला-इवतहास, आधवनक ु ं ं ाराषाओ, दशभन, धावमभक अध्ययन एि लेखन इत्यावद को सवममवलत करता ह ै । मानविकी में हए खिोों के ं ं द्वारा हम सीखते ह ैं वक वकस प्रकार रचनात्मक और आलोचनात्मक तरीके से हम सोचते ह,ैं वकस प्रकार तकभ करते ह ैं और प्रश्न पछते ह ैं । क्योंवक य े कौशल वकसी ारी चीज़ के वलए सझ या अतदृवभ ष्ट दते े ह ैं । िसे ू ू ं कविता हमें नयी अतदृवभ ष्ट प्रदान करती ह।ै यही बात पेंवटग के साथ ारी ह ै । मानविकी को कला, विज्ञान ं ं सामविक विज्ञान एि वचवकत्सकीय विषयों से समबि करके पढ़ाना चावहए। इससे मानविकी विषयों के ं साथ-साथ इन विषयों वक समझ ारी बढ़ती ह।ै साथ ही व्यािहाररक िगत में हमारी समझ बढ़ती ह ै वक कक्षा के इतर िास्तविक िीिन में हम प्राप्त ज्ञान का प्रयोग वकन पररवस्थवतयों में और वकस प्रकार कर उत्तराखण्ड मक्त विश्वविद्यालय 83 ु CPS -2 सकते ह ैं । मानविकी पर यह दारोमदार रहा ह ै वक वक यह मानिीय मलयों िसे-स्ितत्रता, विश्वास, परस्पर ू ं आदर, समानता इत्यावद को वनवमभत और विस्तत कर सके िो शावत और विविधता के वलए आिश्यक ह।ै ृ ं 1.8 शब्द ािली 1. ाराषाविज्ञान: ाराषा का िज्ञावनक अध्ययन को ाराषा विज्ञान के रूप में िाना िाता ह।ै 2. सावहत्य: सामान्य तौर पर सावहत्य का अथभ कविताओ, कहावनयों, उपन्यास इत्यावद से लगाते ह।ैं ं सावहत्य एक ऐसा शब्द ह ै विसकी कोई सिभमान्य पररारावषा नहीं ह ै परन्त इसे विस रूप में ु पररारावषत वकया िाता ह ै उनमें सारी वलवखत सामवग्रयों, रचनाओ, शास्त्र समहों इत्यावद को ू ं शावमल वकया िाता ह।ै 3. नविज्ञान: नविज्ञान मानि विज्ञान का समग्र विषय ह ै िो मानि के अवस्तत्ि की समग्रता का ृ ृ विज्ञान ह।ै यह विषय सामाविक विज्ञान, मानविकी और मानि शरीरशास्त्र के विवर्न्न पहलओ ु ं के एकीकरि से समबवधत ह।ै विवर्न्न कालों में मनष्य में वकस-वकस प्रकार के पररितभन आय े ह,ैं ु ं ितभमान स्िरूप में आने के वलए मनष्य वकन बदलािों का साक्षी रहा ह ै और उसन े वकस प्रकार ु प्रगवत की ह ै का समपिभ अध्ययन नविज्ञान के अतगभत वकया िाता ह।ै ृ ृ ं 1.9 अभ्य ास प्रश्नों के उत्त र 1. मानविकी शब्द की उत्पवत्त पनिाभगरि लैवटन अवर्व्यवक्त Studia humanitatis या "study ु ऑफ़ humanitas" से हई ह ै । 2. Blyth (1990) ने मानविकी को पररारावषत करते हए कहा ह ै वक

Quotes detected: **0.06%** id: **107**

"प्राथवमक पाठयचयाभ का िह ृ ाराग िो िीवित और स्थान विशेष पर कायभशील और समहों और सवमिों, र्त और ितभमान से ू ू आपस में िड़े हए व्यवक्तयों से समबवधत ह,ै "

मानविकी ह।ै ु ं 3. मानविकी के अतगभत सवममवलत होने िाले विषयों में आधवनक ाराषाय,ें शास्त्रीय ाराषायें, ाराषा ु ं शास्त्र, सावहत्य, इवतहास, विवधशास्त्र/ न्यायशास्त्र, दशभनशास्त्र, परातत्िविज्ञान, मवहला वशक्षा, ु पयाभिरि वशक्षा, बहसास्कवतक वशक्षा, सास्कवतक वशक्षा, वफलम और मीवडया वशक्षा, ृ ृ ं ं कोलोवनयल और पोस्ट-कोलोवनयल वशक्षा, वचवकत्सकीय मानविकी इत्यावद ह ैं । 4. सावहत्य विद्यावथभयों में सावहवत्यक रसास्िादन की योनयता बढ़ान े के साथ ही अन्य मलयों िसे ू वर्न्न-वर्न्न ाराषााराविषयों के मध्य वमत्रता का िरा पैदा करना, नागररक गिों और सस्कवत का ृ ु ं विकास करना, विद्यावथभयों में वलखने और पढ़ने के प्रवत रुवच उत्पन्न करना, विवर्न्न ाराषाओ को ं सरवक्षत करना एि उनका प्रसार करने िसे मलयों को विकवसत करती ह ै । ू ं ं उत्तराखण्ड मक्त विश्वविद्यालय 84 ु CPS -2 5. इवतहास अतीत की सचनाओ का िमबि एि व्यिवस्थत सकलन ह।ै अध्ययन के विषय

Plagiarism detected: **0.06%** https://mycoaching.in/r-ke-roop-prakar-matra-s… + 3 resources! id: **108**

के रूप ू ं ं ं में इवतहास को व्यवक्त, समिा, सस्था या कोई अन्य चीज़ िो समय के साथ पररिवतभत हई हो के ं अध्ययन एि व्याख्या के रूप म

ें वलया िाता ह ै । ं 6. मानिीय मलयों िसे स्ितत्रता, विश्वास, परस्पर आदर का िरा और विविधता के प्रवत आदर के ू ं िरा के लोकवप्रय आधार का वनमाभि और विस्तार करना मानविकी की विममेदारी ह ै । 7. मानविकी विषयों को गैर उपयोगी विषय समझा िाता ह ै और पररिामस्िरूप कक्षा वशक्षि के दौरान ारी इस विषय को लेकर कम सममान रहता ह ै और ि विद्याथी ारी िो इस विषय को पढ़ते ह ैं उन्

Plagiarism detected: **0.06%** https://mycoaching.in/r-ke-roop-prakar-matra-s… + 2 resources! id: **109**

ह ें स्िय को लेकर उस स्तर का स्ि-सममान नहीं वदखा पाते ह ैं वितना विज्ञान विषयों के ं विद्यावथभयों में होता ह।ै विज्ञान को मानविकी के तलना में श्रेष्ठतर विषय के रूप म

ें दखे ा िाता ह।ै ु यह प्रचवलत धारिा ह ै वक मानविकी विषय मात्र सचना देने िाले ही विषय ह ैं िो के िल वलवखत ू पाठों और उनके स्मरि से ही समबवधत ह।ै उच्च स्तर की मानवसक वियाओ को यह सवममवलत ं ं नहीं करता ह।ै 8. विद्याथी अपनी मातॄभाषा के साथ-साथ अन्य स्थानीय ॄभाषाओ तथा विदशे ी ॄभाषाओ और ृ ं ं विदशे ी सस्कवतयों के विषय में ज्ञान प्राप्त कर पाते ह।ैं िो न के िल उनके ज्ञान के क्षेत्र को विस्तत ृ ृ ं करता ह ै बवलक राष्ट्रीयता और अतराभष्ट्रीय समझ िैसे गिों को ॄरी विकवसत करता ह।ै विद्याथी ु ं में अपने दशे वक सस्कवत के प्रवत गिभ का िॄा िागत होता ह ै और और िह अपने देश की ृ ृ ं विविधता को समझ पाते ह।ैं सावहत्य के द्वारा उनमें विवर्न्न नैवतक, सामाविक और सास्कवतक ृ ं मलयों का विकास सिॄ हो पाता ह।ै ू ं 9. सगीत सामिस्य, मधरता का वनमाभि करता ह ै और विश्व शावत का सन्दशे दते ा ह ै । यह विश्व ु ं ं ं एकता की बात करता ह ै । सगीत िह माध्यम ह ै िो परे विश्व को एक सत्र में बाँधता ह।ै ू ू ं 1.10 सदं र् भ ग्रंथ सची ू 1. NCERT (2005). National Curriculum Framework 2005. New Delhi: National Council of Educational Research and Training. 2. NCERT (2009). Position Paper National Focus Group on Arts, Music, Dance and Theatre. New Delhi: National Council of Educational Research and Training. 3. राष्ट्रीय शैवक्षक अनसन्धान और प्रवशक्षि पररषद (2005)। राष्ट्रीय पाठयचयाभ की रुपरेखा ृ ु 2005. नयी वदलली: राष्ट्रीय शैवक्षक अनसन्धान और प्रवशक्षि पररषद ु 4. राष्ट्रीय शैवक्षक अनसन्धान और प्रवशक्षि पररषद (2009). कला, सगीत, नत्य और रगमच ृ ु ं ं ं ृ राष्ट्रीय फोकस समह का आधार पत्र। नयी वदलली: राष्ट्रीय शैवक्षक अनसन्धान और प्रवशक्षि ू ु पररषद। उत्तराखण्ड मक्त विश्वविद्यालय 85 ु CPS -2 5. Wikipedia, (n|d|). Humanities Retrieved from https://en.wikipedia.org/wiki/Humanities 1.11 वनबधात्म क प्रश्न ं 1. मानविकी के अतगभत सवममवलत वकए िाने िाले विषयों का सवक्षप्त िििभन कीविए । इन विषयों ं ं को पाठयचयाभ में रखना क्यों आिश्यक ह ै ? ृ 2. मानविकी विषयों से िॄड़े मद्द े और चनौवतयों का िििभन कीविए । ु ु ु 3. शावत वशक्षा एि विविधता के वलए सममान के बीिारोपि के वलए मानविकी में सवममवलत ं ं विषयों का क्या महत्ि ह?ै उत्तराखण्ड मक्त विश्वविद्यालय 86 ु CPS -2 इकाई 2 - गवणत ज्ञान की एक शा

Plagiarism detected: **0.04%** https://mycoaching.in/hindi-varnamala + 3 resources! id: **110**

खाके रूप में , विद्यालयी पाठ्यचया में इसका स्थान, गवणत वशक्षण के मुद्द तथा े चुनौवतया,ॉँ राष्ट्रीय विकास के एक माध्यम के रूप म

ें इसकी िूवमका के संबंध में Mathematics as a Branch of Knowledge, its Place in the School Curriculum, Issues and Challenges of mathematics Teaching with respect to its Role as a Vehicle of National Development 2.1 प्रस्तािना 2.2 उद्दश्े य 2.3 गवित: ज्ञान की एक शाखा 2.4 विद्यालय की पाठयचयाभ में गवित स्थान ृ 2.5 गवित वशक्षि के मद्द े तथा चनौवतयाँ, राष्ट्रीय विकास के एक माध्यम के रूप में ु ु इसकी र्वमका के सबध में ू ं ं 2.6 साराश ं 2.7 अभ्यास प्रश्नों के उत्तर 2.8 सदर्भ ग्रथ सची ू ं ं 2.9 वनबधात्मक प्रश्न ं 2.1 प्रस्तावना गवित मानि ज्ञान की प्राथवमक विधाओ में शावमल ह ै मानि सभ्यता वितना ही प्राचीन ह।ै िैसे िैसे ं मानि िििन का विस्तार हआ िैसे गवित का ॄरी विस्तार हआ ह ै तथा यह मानि ज्ञान-

Plagiarism detected: **0.04%** https://sanskartutorials.in/hindi-alphabet-hindi-a… id: **111**

विज्ञान की एक व्यापक एि समि शाखा के रूप में विकवसत हआ। प्रत्येक क्षेत्र चाह े िो िैज्ञावनक, गवितज्ञ, ृ ं प्रौद्योवगकीविद, अथभशास्त्री या क

ोई और विषय विशेषज्ञ के साथ आम आदमी ॄरी रोिमराभ के िििन में ृ गवित

Plagiarism detected: **0.03%** https://mycoaching.in/r-ke-roop-prakar-matra-s… id: **112**

की सामान्य िानकारी से लेकर समन्नत प्रिावलयों तक वकसी न वकसी रूप में गवित का प्रयोग

ु करता ह।ैं गवित दवै नक िििन के साथ सिभव्यापी रूप में समाया हआ ह।ै उत्तराखण्ड मक्त विश्वविद्यालय 87 ु CPS -2 इस इकाई म ें हम ये िानगें े की गवित का, ज्ञान की एक शाखा के रूप म ें क्या महत्ि ह ै तथा विद्यालय की पाठयचयाभ में इसका क्या स्थान ह?ै साथ ही साथ हम गवित वशक्षि के मद्द े तथा चनौवतयों, राष्ट्रीय ृ ु ु विकास के एक माध्यम

Plagiarism detected: **0.07%** https://mycoaching.in/r-ke-roop-prakar-matra-s… + 3 resources! id: **113**

के रूप म ें इसकी र्वमका के सबध में चचाभ कीविए गे। ू ं ं 2.2 उद्दश्े य इस इकाई का अध्ययन करने के पश्चात आप- 1. गवित का, ज्ञान की एक शाखा के रूप म

ें क्या महत्ि ह ै यह बता सकें गे। 2. विद्यालय की पाठयचयाभ में गवित के स्थान की व्याख्या कर सकें गे । ृ 3. गवित वशक्षि के मद्द े तथा चनौवतयों का विश्लेषि कर सकें गे। ु ु 4. राष्ट्रीय विकास के एक माध्यम

Plagiarism detected: **0.07%** https://mycoaching.in/r-ke-roop-prakar-matra-s… + 3 resources! id: **114**

के रूप में इसकी र्वमका के सबध में चचाभ कर सकें गे। ू ं ं 2.3 गवणत: ज्ञान की एक शाखा ज्ञान लोगों के ॄरौवतक तथा बौविक सामाविक वियाकलाप की उपि ; सके तों के रूप म

ें िगत के ं िस्तवनष्ठ गिों और सबधों, प्राकवतक और मानिीय तत्िों के बारे म ें विचारों की अवर्व्यवक्त ह।ै ृ ु ु ं ं िागरूकता या विशेष रूप से अवधवनयम, तथ्य , या सच्चाई की समझ को ज्ञान कहते ह ैं ।विवर्न्न लोगों ने गवित के महत्ि को अपनी

अपनी तरह से पररभाषित किया है। बीसवीं शताब्दी के प्रख्यात ब्रिटिश गणितज्ञ और दार्शनिक बर्टेंड रसेल के अनुसार

Quotes detected: **0.09%** id: **115**

"गणित को एक ऐसे विषय के रूप में परिभाषित किया जा सकता है जिसमें हम जानते ही नहीं कि हम क्या कह रहे हैं, न ही हमें यह पता होता है कि जो हम कह रहे हैं वह सत्य भी है या नहीं"

। पुरातन काल से ही सभी प्रकार के ज्ञान-विज्ञान में गणित का स्थान सर्वोपरि रहा है- यथा शिखा मयूराणां नागानां मणयो यथा। तथा वेदाङ्गशास्त्राणां गणितं मूर्धनि स्थितम॥ (वेदांग ज्योतिष) अर्थात जिस प्रकार मोरों में शिखा और नागों में मणि

Plagiarism detected: **0.03%** https://mycoaching.in/hindi-varnamala id: **116**

का स्थान सबसे उपर है, उसी प्रकार सभी वेदांग और शास्त्रों मे गणित का स्थान

सबसे ऊपर है। महान गणितज्ञ गाउस ने कहा था कि "गणित सभी विज्ञानों की रानी है।" गणित, विज्ञान और प्रौद्योगिकी का एक महत्वपूर्ण उपकरण (टूल) है। भौतिकी, रसायन विज्ञान, खगोल विज्ञान आदि गणित के बिना नहीं समझे जा सकते। ऐतिहासिक रूप से देखे जाए तो जिस्ति में गणित की अनेक शाखाओ का विकास ही इसलिए किया गया कि प्राकृतिक विज्ञान में इसकी आवश्यकता आ पड़ी थी। "गणित एक ऐसा उपकरण है जिसकी शक्ति अतुल्य है और जिसका उपयोग सर्वत्र है ; एक ऐसी भाषा जिसको प्रकृति अवश्य सुनेगी और जिसका सदा वह उत्तर देगी " प्रो. हाल । उत्तराखण्ड मुक्त विश्वविद्यालय 88 CPS -2 प्रसिद्ध जैन गणितज्ञ महावीराचार्य के अनुसार बहुभिर्विप्रलापैः किम्, त्रयलोके सचराचरे। यद् किंचिद् वस्तु तत्सर्वम्,गणितेन बिना न हि ॥ अर्थात बहुत प्रलाप करने से क्या लाभ है ? इस चराचर जगत में जो कोई भी वस्तु है वह गणित के बिना नहीं है । उसको गणित के बिना नहीं समझा जा सकता । गैलिलियो के अनुसार "ज्यामिति की रेखाओ और चित्रों में हम वे अक्षर सीखते हैं जिनसे यह संसार रूपी महान पुस्तक लिखी गयी है ।" हमें अपने जीवन में हर कदम पैर गणित का इस्तेमाल करना पड़ता हैं - उस वक्त जब समय जानने के लिए हम घड़ी देखते हैं, अपने खरीदे गए सामान या खरीदारी के बाद बचने वाली रेगारी का हिसाब जोड़ते हैं या फिर फुटबाल टेनिस या क्रिकेट खेलते समय बनने वाले स्कोर का लेखा-जोखा रखते हैं। व्यवसाय और उद्योगों से जुड़ी लेखा संबंधी क्रियाएं गणित पर ही आधारित हैं। बीमा (इंश्योरेंस) संबंधी गणनाएं तो अधिकांशतया ब्याज की चक्रवृद्धि दर पर ही निर्भर है। वायुयान या विमान का चालक मार्ग के दिशा-निर्धारण के लिए ज्यामिति का प्रयोग करता है। भौगोलिक सर्वेक्षण का तो अधिकांश कार्य ही त्रिकोणमिति पर आधारित होता है। यहां तक कि किसी चित्रकार के आरेखण कार्य में भी गणित मददगार होता है, जैसे कि संदर्भ (पर्सपेक्टिव) में जिसमें कि चित्रकार को त्रिविमीय दुनिया में जिस तरह से इंसान और वस्तुएं असल में दिखाई पड़ते हैं, उन्हीं का तदनुरूप चित्रण वह समतल धरातल पर करता है। संगीत में स्वरग्राम तथा संनादी (हार्मोनी) और प्रतिबिंदु (काउंटरपाइंट) के सिद्धांत गणित पर ही आश्रित होते हैं। गणित का विज्ञान में इतना महत्व है तथा विज्ञान की इतनी शाखाओ में इसकी उपयोगिता है कि गणितज्ञ एरिक टेम्पल बेल ने इसे

Quotes detected: **0.01%** id: **117**

'विज्ञान की साम्राज्ञी और सेविका'

की संज्ञा दी है। किसी भौतिकविज्ञानी के लिए अनुमापन तथा गणित का विवर्त्र तरीकों का बड़ा महत्व होता है। रसायनविज्ञानी किसी वस्तु की अम्लीयता को सूचित करने वाले पी एच (pH) मान के आकलन के लिए लघुगणक का इस्तेमाल करते हैं। कोणों और क्षेत्रफलों के अनुमापन द्वारा ही खगोलविज्ञानी सूर्य, तारों, चंद्र और ग्रहों आदि की गति की गणना करते हैं। प्राणी-विज्ञान में कुछ जीव-जन्तुओ के व्यवहार-पैटर्नों के विश्लेषण के लिए विमीय विश्लेषण की मदद ली जाती है। उच्च गतिवाले संगणकों द्वारा गणनाओ को दूसरी विधियों द्वारा की गई गणनाओ की अपेक्षा एक अंश मात्र समय के अंदर ही संपन्न किया जा सकता है। इस तरह कम्प्यूटरों के आविष्कार ने उन सभी प्रकार की गणनाओ में क्रांति ला दी है जहां गणित उपयोगी हो सकता है। जैसे-जैसे खगोलीय तथा काल मापन संबंधी गणनाओ की प्रामाणिकता में वृद्धि होती गई, वैसे-वैसे नौसंचालन भी आसान होता गया तथा क्रिस्टोफर कोलम्बस और उसके परवर्ती काल से मानव सुदूरगामी नए प्रदेशों की खोज में घर से निकल पड़ा। साथ ही, आगे के मार्ग का नक्शा भी वह बनाता गया। गणित का उपयोग बेहतर किस्म के समुद्री जहाज, रेल के इंजन, मोटर कारों से लेकर हवाई जहाजों के निर्माण तक में हुआ है। राडार प्रणालियों की अभिकल्पना तथा चांद और ग्रहों आदि तक राकेट यान भेजने में भी गणित से काम लिया गया है। उत्तराखण्ड मुक्त विश्वविद्यालय 89 CPS -2 अभ्यास प्रश्न 1. संगीत में स्वरग्राम तथा संनादी (हार्मोनी) और प्रतिबिंदु (काउंटरपाइंट) के सिद्धांत गणित पर आश्रित होते हैं। । (सत्य/असत्य) 2. गैलिलियो ने गणित को

Quotes detected: **0.01%** id: **118**

'विज्ञान की साम्राज्ञी और सेविका'

की संज्ञा दी है। (सत्य /असत्य) 3. चित्रकार के आरेखण कार्य में भी गणित मददगार होता है । (सत्य/असत्य) 4. गणित को ज्ञान की उपयोगी शाखा के रूप में देखना ज़रूरी नहीं है । (सत्य/ असत्य) 2.4 विद्यालय की पाठ्यचर्या में गणित स्थान प्रारम्भ से ही

गवित का विद्यालय पाठयिम में महत्िपिभ स्थान रहा ह।ै गवित सर्ी विज्ञानो की िननी ह।ै ृ ू ं दवनया गवित के वबना गवत नही कर सकती ।प्रकवत म ें कई गवितीय अिधारिाओ, पैटनभ, कानन, आवद ृ ू ं ु को दखे ा िा सकता ह।ै गवित मानि रािमराभ की विदगी के विवर्न्न पहलओ से सबवधत िरूरतों से ु ं ं ं ं समबवधत ह ै । प्लेटो का मानना था की िो व्यवक्त गवित से अनवर्ज्ञ ह ै उन्ह ें विद्यालय में प्रिेश नहीं ं वमलना चवहये। उन्होंने तो अपन े दरिाज़े पर वलख रखा था "िो गवित से अनवर्ज्ञ ह ै उसे मेरे दरिािे में प्रिेश नहीं करना चावहए

Quotes detected: **0.01%** id: **119**

"। बरनाडभ शॉ के अनसार "

तावकभ क वचतन के वलए गवित से शवक्तशाली माध्यम ु ं ह"ै ।इनके अलािा र्ी कई वशक्षाविद ने विद्यालय के पाठयिम में गवित के महत्ि को स्िीकारा ह।ै इनका ु र्ी य े मानना ह ै की गवित वशक्षा के वबना व्यवक्त का बौविक और सास्कवतक विकास असम्र्ि ह।ै कोठारी ृ ं ं आयोग न े र्ी ितभमान वशक्षा में गवित के महत्ि को स्िीकारा ह।ै इस आयोग में उललेवखत ह ै की " "िैज्ञावनक दवष्ट अपनाने का मख्य लक्षि िस्तओ को मात्रात्मक रूप से अवर्व्यक्त करना ह।ै इसवलए ु ु ं आधवनक वशक्षा में गवित का स्थान अवधक महत्िपिभ हो िाता ह।ै र्ौवतक विज्ञान की प्रगवत में इसका ु ू महत्िपिभ योगदान ह ै , साथ ही िैविक विज्ञान के विकास में र्ी अवधकावधक रूप से इसका प्रयोग वकया ू िा रहा ह ै । इस शताब्दी में स्िचालन विज्ञान और साइबरनेवटक्स के आगमन से नई िैज्ञावनक औद्योवगक िावत िा िन्म हआ ह ै और इसवलए गवित के अध्ययन पैर ध्यान देना और अवनिायभ हो गया ह।ै इस ं विषय का उवचत आधार स्कलों में रखना चवहये।" इसी कारिेश गवित कक्षा १० तक की अवनिायभ ू वशक्षा में एक महत्िपिभ स्थान रखता ह ै । नयी वशक्षा नीवत में र्ी गवित का महत्िपिभ स्थान ह।ै ू ू र्ारत के ज्यादातर राज्यों में गवित माध्यवमक या उच्च प्राथवमक स्तर तक एक अवनिायभ विषय ह ै । िहाँ छात्र वमवडल या िवनयर हाई स्कल के बाद तकवनकी वशक्षा के क्षेत्र में िाते ह ैं िहा र्ी गवित ू ू ं एक अवनिाय भ विषय ह।ै राष्ट्रीय स्तर के विद्यालयों िैसे कें िीय विद्यालय तथा सेन्रल बोडभ ऑि सेकण्डरी एिके शन का पाठयिम विद्यालयों में र्ी गवित हाई स्कल तक पाठयचयाभ का एक अवनिाय भ विषय ह।ै ृ ृ ु ू उच्च वशक्षा में गवित एक िैकवलपक विषय बन िाता ह ै । अथाभत वसफभ िही छात्र गवित अध्ययन करते ह ैं विसे इसमें रूवच हो या वफर उच्च वशक्षा या तकवनकी वशक्षा में इसकी ज़रुरत हो। उत्तराखण्ड मक्त विश्वविद्यालय 90 ु CPS -2 यहाँ य े चचाभ करना र्ी ज़रूरी ह ै की आवखर गवित को विद्यालय पाठयिम में विशेष स्थान क्यों ृ वदया । िैसे वमवडल स्कल तक गवित को एक अवनिाय भ विषय बनाना। इसका उत्तर ह ै िीिन में गवित की ू उपयोवगता। नेपोवलयन ने सही कहा था की गवित के ज्ञान के वबना वकसी राष्ट्र का विकास सम्र्ि नहीं ह।ै ं वशक्षा का लक्ष्

Plagiarism detected: **0.07%** https://basicfoundation.in/ya-words-in-hindi/ id: **120**

य छात्रों को रचनात्मक िीिन के वलए तैयार करना ह ै और इसके वलए ज़रूरी ह ै i. ज्ञान और उन कशलताओ का विकास करना िो छात्रों को व्यिकाररक िीिन में योगदान द।े ु ं ii. छात्रों क

े बौविक और तावकभ क विकास के वलए गवित की वशक्षा ज़रूरी ह।ै इसकी उनका िीिन तकभ पिभ और अनशावसत होगा िो सफलता के वलए काफी िरूरी ह।ै ू ु iii. साथ ही साथ वशक्षा का उद्दश्े य छात्रों में ऐसी िावछत अवर्िवत्तयों और आदशों का विकास ृ ं करना र्ी ह ै िो उसे अच्छा नागररक और सामाविक उपयोगी बनाए । गवित इन सर्ी गिों को विकवसत करने में महत्िपिभ र्वमका वनर्ाता ह ै । िीिन को व्यिवस्थत बनाने के ु ू ू वलए व्यवक्त को समय, धन और सामाविक वियाओ को वनयवत्रत आिश्यक ह ै और इसमें गवित का ं ं ज्ञान उपयोगी ह।ै साथ ही साथ गवित मवस्तष्क के अनशासन के वलए र्ी ज़रूरी ह ै क्योंवक गवित से ु तावकभ क बवि का वि

Plagiarism detected: **0.03%** https://www.hindihelpzone.com/2022/09/hindi-v… id: **121**

कास होता ह।ै गवित की विशेषताएँ वनमनवलवखत ह ै : ु सरलता - गवित अपनी विचार

ों या तथ्यों को सरलता से प्रस्तत मदद करती ह ै विससे लोग हमारी ु बात सकें । पररशिता - गवित तकभ , वचतन और वनिभय पैर आधाररत ह ै और य े वसात िीिन के वलए बहत ु ं ं आिश्यक ह।ै पररिामों की वनवश्चतता - गवित में व्यवक्तक त्रवट और व्यवक्तवनष्ठा की कोई िगह नहीं ह।ै इसमें उत्तर ु या तो सही होता या गलत। छात्र अपनी महित और लगन से अन्य प्रवकया द्वारा खद ही पररिामों ु का सत्यापन कर सकता ह ै िो की उनके आत्मविश्वास को बढ़ता ह।ै आत्मविश्वास िीिन में सफलता के वलए अवत आिश्यक ह।ै मौवलकता - गवित मौवलत वचतन पैर आधाररत ह ै और इसमें रटन्त विद्या की िगह नहीं ह।ै गवित के ं प्रश्न का हल छात्रों में तावकभ क क्षमता को विकवसत ह।ै इससे छात्र आगे चलकर िीिन में आन े िाली समस्याओ को हल करन े के वलए तैयार होता ह।ै गवित विषय गया ज्ञान अन्य विषयों के वलए र्ी ं ज़रूरी ह ै िो की इस वचत्र से स्पष्ट होता ह ै उत्तराखण्ड मक्त विश्वविद्यालय 91 ु CPS -2 उपरोक्त वबदओ से स्पष्ट ह ै की गवित का विद्यालय पाठयिम में विशेष स्थान ह।ै ृ ं ं ु अभ्यास प्रश्न 5. गवित उच्च वशक्षा का एक अवनिायभ विषय ह ै । (सत्य/ असत्य) 6. छात्रों के बौविक और तावकभ क विकास के वलए गवित की वशक्षा ज़रूरी ह।ै (सत्य /असत्य) 7. वचत्रकार के आरेखि कायभ में र्ी गवित मददगार होता ह ै । (सत्य/असत्य) 8. गवित को ज्ञान की उपयोगी शा

Plagiarism detected: **0.05%** https://mycoaching.in/hindi-varnamala + 3 resources! id: **122**

खा के रूप में देखना ज़रूरी नहीं ह ै । (सत्य/ असत्य) 2.5 गवणत वशक्षण के मुद्द े तथा चुनौवतया,ाँ राष्ट्रीय ववकास के एक माध्यम के रूप म

इसकी ूवमका के संबध म ें ं ें नेपोवलयन ने कहा था

Quotes detected: **0.02%** id: **123**

"गवित के साथ राज्य की समवि िडी हई ह"

े । वकसी री राष्ट्र के विकास को ृ ु गवित से अलग करके नहीं सोचा िा सकता ह।ै मानि अवस्तत्ि के वलए गवित के महत्ि को कोई नकार नहीं सकता। गवित इसान के रिमराभ की विदगी की गवतविवधयों से िडी हई ह ै । गवित रिमराभ की की ु ं ं समस्याओ को सलझाने का एक आिस्यक यत्र ह।ै गवित एक महत्िपिभ विषय ह ै क्योंवक यह व्यवक्त के ु ू ं ं तकभ , समस्या को सलखन का कौशल या यौं कह ें की सोचने की शवक्त को बढ़ता ह।ै राष्ट्र का विकास ु ू उसके हर नागररक के विकास से िड़ा ह ै और इसवलए गवित एक महत्िपिभ योगदान दते ा ह।ै गवित विषय ु ू उत्तराखण्ड मक्त विश्वविद्यालय 92 ु CPS -2 की दवै नक िीिन में उपयोवगता िाले पहल को देखा िाए तो ऐसा कोई कायभ निर ही नहीं आता, िहीं ू वबना गवित के कछ समिर् हो पा रहा हो। मिदर, वकसान, दकानदार, नौकरी करने िाला और चाह े कोई ु ू ु री मवहला-परूष, बच्चे विसने वशक्षा प्राप्त की हो या नहीं की हो, सरी अपनी विन्दगी म ें गवित का ु बखबी से उपयोग करते वदखलाई पड़ते ह।ैं एक वकसान को अपने खेत म ें हई फसल

Plagiarism detected: **0.04%** https://mycoaching.in/r-ke-roop-prakar-matra-s… + 8 resources! id: **124**

की मात्रा का पिभ ू ू वनधाभरि करना हो, खेत म ें बीिरोपि के समय लगने िाले बीि की मात्रा क

ा पता लगाना हो, फसल काटने के दौरान समय मिदरी का वनधाभरि करना हो या उतनी फसल के वलए आिशयक बोररयों की ृ ू सख्या का पता लगाना हो िह सटीकता के साथ लगा लेता ह।ै घर पर वकसी री दवै नक वियाकलाप को ं ले लें, चाह े िह नहाने धोने का कायभ हो, बच्चों का खेलना हो, रसोई का कायभ करना हो या बािार में खरीददारी हो सरी कायो म ें गवितीय कौशलों (अन्दािा, अनमान, समस्या समाधान के विवर्न्न मॉडल ु सोचना, साद्दष्यीकरि, गवितीय समप्रेषि, वनरूपि, सामान्यीकरि आवद) का उपयोग वकया िाता ह।ै विसने गवित की औपचाररक वशक्षा नहीं ली हो िो मौवखक और विसने औपचाररक वशक्षा ली ह ै िो मौवखक और वलवखत दोनों ही रूपों म ें इस्तेमाल कर पाते ह।ैं िाष्ट्रीय क्रवकास के आवश्यक सभी

Plagiarism detected: **0.11%** https://sanskartutorials.in/hindi-alphabet-hindi-a… id: **125**

क्षेत्रों में गक्रणत के योगिान विज्ञान और तकनीक - विज्ञान और प्रौद्योवगकी वकसी री राष्ट्र के विकास की नींि ह ै और गवित को विज्ञान और प्रौद्योवगकी की राषा कहा िाता ह।ै इसवलए गवित की वशक्षा राष्ट्रीय विकाश के वलए बहत ही आिश्यक ह।ै गवित की ज़रुरत एकीकत विज्ञान िैसे की रौवतक ृ विज्ञान, रसायन विज्ञान, िीि विज्ञान

और इंिीवनयररग पाठयिमों के वलए ज़रूरी ह ै को की हमें ृ ं ं प्रौद्योवगकी की तरफ ले िाता ह।ै शेयर बािार - गवित शेयर बािार का एक अवर्न्न अग ह।ै सरी गिना िैसे प्रबधन शलक, ु ं ं वनिेश की ररनीवत , डीपीएस, डीिाई, ईपीएस, बी.िी िगैरह में गवित का इस्तेमाल होता ह ै । बैंवकग क्षेत्र - बैंवकग प्रिाली वकसी री राष्ट्र के आवथभक विकास को बढ़ािा देने के वलए ं ं महत्िपिभ र्वमका वनराता ह।ै बैंक उत्पादक वनिेश के वलए सड़ाधन िटा कर हर अथभव्यिस्था में ू ू ु ं विकास में कें िीय र्वमका वनराते ह।ैं बैंवकग व्यिस्था में गवित का योगदान वकसी से छपा नहीं ू ु ं ह।ै वचवकत्सा - गवित वचवकत्सा के क्षेत्र का एक महत्िपिभ अग ह।ै गवित का ज्ञान दिा की खराक, ू ु ं सिाता िाँच इत्यावद के आिश्यक ह ै । ं मौसम पिभनमान - मौसम का पिभनमान सामान्य और विवशष्ट मौसम घटना के बारे म ें ू ु ू ु र्विष्यिािी करने का विज्ञान ह ै िो की एक वदए गए क्षेत्र के वलए मौसम सबधी कारकों के ं ं आकलन पर आधाररत होता ह ै । य े पिभनमान वकसी राष्ट्र को वकसी री हालात, प्राकवतक ृ ू ु ं आपदा िैसे कपन, र्कप , बाढ़ आवद की िानकारी दके र उन वस्थवत से वनपटने के वलए तैयार ू ं ं उत्तराखण्ड मक्त विश्वविद्यालय 93 ु CPS -2 करता ह।ै QG-ओमेगा समीकरि, गिना , अतर समीकरि, आवशक विरेदक समीकरि इत्यावद ं ं का इस्तेमाल करके मौसम पिभनमान वकया िाता ह।ै ू ु छोटे और मध्यम स्तर के उद्यम- लघ और मध्यम स्तर के उद्योग वकसी राष्ट्र के विकास म ें ु महत्िपिभ योगदान देते ह।ैं बढ़ई मेसन, प्लबर , टेलर इत्यावद सरी अपने काम को परा करने म ें ू ू ं गवित का सहारा लेते ह।ैं गवित का ज्ञान छोटे और मध्यम स्तर के उद्योंगों के वलए बहत ज़रूरी है ज़रूरी ह।ै विश्व की आबादी का अनमान लगाया ह ै और िनसख्या के प्रिृा को िानने के वलए ु ं गवितीय उपकरि गवितीय उपकरि िलिाय पररितभन / ग्लोबल िावमिंग के प्रिृा को वदखाने के वलए ु गवितीय मॉडल पेड़, मौसम और िमीन की सतह की प्रकवत के प्रकार के आधार पर िगल की ृ ं आग के प्रसार को वदखान े के वलए आवथभक विकास, िन साक्षरता, गरीबी और कपोषि के उन्मलन के वलए गवित का योगदान ु ू गक्रणत क्रशक्षण के मद्दे तथा चनौक्रतयाँ, िाष्ट्रीय क्रवकास के एक माध्यम के रूप में इसकी ु ु भक्रमका के सबि में ू ं ं राष्ट्रीय विकास के प्रत्येक पहल में गवित सहायक हो सकता ह ै । समयक तरीके से इस विषय को ू उपयोग करके इससे तावकभ क क्षमता िाले मानि ससाधन री तैयार वकये िा सकते ह।ैं समाि के ं सास्कवतक , रौवतक तथा मनोिैज्ञावनक सरी विकास के माध्यम के रूप में गवित अपनी र्वमका वनरा ृ ू ं सकता ह।ै परन्त इस विषय का र्पर प्रयोग नहीं क्या िा पा रहा ह ैं । इसका कारि दोषपिभ वशक्षा ु ू ू प्रिाली ह ैं । स्कलों में गवित वशक्षा का विश्लेषि वकया िाए तो बहत सारे मद्द े सामने आते ह ैं विनमें से ू ु कछ वनमित ह ैं : ु 1. गक्रणत क्रवषय से भय: इसे गवित की वचता और

Quotes detected: **0%** id: **126**

'मैथ पफोवबया'

पदों से ◌ी िाना िाता ह ै◌ं विद्यालय में पढ़ाया िाने िाले विषयों में गवित का स्थान सिोपरी ह ै विससे की विद्याथी र्य तथा असफलता महसस करते ह ै◌ं । इस र्य का विश्लेषि वकया िाए तो वमलता ह ै की गवित की ◌ू अमतभ प्रकवत , प्रतीकात्मक ◌ाषा का प्रर्ि। गवितीय प्रतीकों को वबना समझे प्रयक्त वकया ◌ृ ◌ू ◌ु ◌ु िाता ह ै विससे बच्चों पर नीरसता और घबराहट हािी होने लगती ह ै और ि गवित से ◌ागन े लगते ह ै◌ं । सचयी पिवत का अथभ ह ै की गवित का एक सप्रत्यय दसरे सप्रत्यय पर वनर्भर करता ह ै ◌ृ ◌ं ◌ं ◌ं ◌ू िैसे यवद विद्याथी को दशमलि में कवठनाइ होती ह ै तो प्रवतशत ◌ी कवठन लगेगा । यवद वप्रतशत कवठन लगता ह ै तो बीिगवित में ◌ी कवठनाइ होगी। और इसी प्रकार गवित के अन्य प्रकरि ◌ी कवठन लगेंगे। 2. गक्रणत के सवालों के प्रक्रत िािणा : गवित के बारे में एक आम ए वमथक धारिा ह ै वक ◌ं इसके सिालों का करने का एक ही तरीका होता ह ै और वसफभ और वसफभ िही तरीका सही होता उत्तराखण्ड मक्त विश्वविद्यालय 94 ◌ु CPS -2 ह।ै उस तरीके में महारत हावसल करने का ◌ी एक ही तरीका होता ह ै वक उस तरीके का अभ्यास तब तक करते रहना चावहए िब तक एक वनवश्चत प्रविया को परा करते हए अपने-आप न होने ◌ू लगे। इसमें बच्चों को उस तरीके के पदों को एक खास िम में याद रखना पड़ता और इस्तेमाल करते िक्त उसी िम में उसे लाग करना होता ह।ै उस िम में थोडा ◌ी इधर उधर होने पर उस ◌ू तरीके से वमलन े िाले िाब में गड़बवड़या हो िाती ह ै।उसी प्रविया को बारबार करते और ◌ं दोहराते रहन े से स्िाविक तौर पर बच्चे उबन महसस करता ह ै क्योंवक उसमें समझन े की ◌ू गिाइश नहीं के बराबर होती ह।ै ◌ु 3. अध्यापक िाा क्रशक्षण सहायक सामग्री उपयोग न किना – वशक्षि सहायक सामग्री विषय िस्त को रोचक ढग से प्रस्तत करने में सहायता प्रदान करती ह ै◌ं । कछ अध्यापक वशक्षि ◌ु ◌ु ◌ु ◌ं सामग्री की उपयोग गवित की कक्षा म े◌ं नहीं या नाममात्र करते ह ै◌ं । िो की छात्रों की वशक्षा में बढ़ी बाधक बन िाती िा ती ह।ै गवित का ज्ञान तकभ पर वनर्भर करता ह ै की रटने पर। इसवलए वबना वशक्षि सामग्री उपयोग वकये गवित की वशक्षा मवश्कल होती ह ै । ◌ु 4. कक्षा का मनोवैज्ञाक्रनक वाताविण: गवित की अवधगम अध्यापक बच्चों के साथ कै से काम करते ह ै◌ं इस बात पर ◌ी वनर्भर करेगा। कक्षा का िातािरि ऐसा होना चावहए वक बच्चे उसमें सह◌ागी हों, अपन े विचार व्यक्त कर सकें , गलवतयााँ कर सकें और उनके बारे में वबना वकसी सकोच के बात कर सकें । ऐसे िातािरि में ही बच्चों के गवित के साथ स्िस्थ ए गहन ररश्ते ◌ं ◌ं कायम हो सकते ह ै◌ं । अध्यापक को बच्चों की सह◌ावगता में सहायक होने की प्रवियाएाँ रचनी चावहए विससे की उनसे सिाद स्थावपत हो सके । गवित की कक्षा के प्रमख पक्ष की तरह इस ◌ु ◌ं बात को गहराई से स्िीकारना िरूरी ह ै वक बच्चे गवित की धारिाओ तथा अिधारिाओ को ◌ं ◌ं अपनी पिभधारिाओ और अनिों के साथ समावहत करके और सविय ◌ागीदारी की प्रविया में ◌ू ◌ु ◌ं उन्ह े◌ं सशोवधत करके विकवसत करते ह।ै◌ं ◌ं 5. कठिो पाठयचयात : गवित पाठयचयाभ गवितीय सप्रत्ययों को समझने और आत्मसात करने से ◌ृ ◌ृ ◌ं ज्यादा िोर विवधयों ओर सत्रों के ज्ञान को दते ◌ी ह ै विससे की विद्यावथभयों में वचता तथा वनराशा ◌ू ◌ं बढ़ती ह।ै पाठयचयाभ लचीली नही ह ै और ना ही कक्षा के स◌ी विद्यावथभयों की आिश्कता की ◌ृ पवतभ करने िाली ह ै बच्चों के वलए यह पाठयचयाभ परीक्षा पास करने के वलए तथ्यों के डर की ◌ृ ◌ू ◌ं तरह ह ै 6. गक्रणत क्रवषय पि एकाक्रिकिा की कमी - अध्यापक के वलए बहत ज़रूरी ह ै की िो खद ◌ु विषय रख े त◌ी

Plagiarism detected: **0.05%** https://basicfoundation.in/ya-words-in-hindi/ + 2 resources! id: **127**

छात्रों के सिालों का उत्तर देना सिर् होगा। विषय पर अध्यापक की पकड़ न ◌ं होना बड़ी बाधक का काम करता ह ै और छात्रों क ◌ी उस विषय म े◌ं रूवच कम हो िाती ह।ै 7. अध्यापक का गक्रणत क्रशक्षण में िक्ष न होना - अध्यापक को हमेसा वशक्षि की नयी नयी विवधयों से अिगत रहना चावहए क्योंवक उसके वबना कक्षा नीरसता आ िाती ह ै । इसवलए अध्यापक के वलए ज़रूरी ह ै की हमेशा गवित के सेवमनार, कायभगोष्ठी िगैरह म े◌ं ◌ागीदारी रखनी चावहए। उत्तराखण्ड मक्त विश्वविद्यालय 95 ◌ु CPS -2 8. गक्रणत के प्रक्रत माहौल - समाि और वशक्षक प्रायः उसी बच्चे को होनहार मानते ह ै◌ं िो सख्याओ, सवियाओ और सत्र याद कर उसमें मान रखकर सिाल को तीव्र गवत से हल करने म े◌ं ◌ू ◌ं ◌ं ◌ं ◌ं महारत हावसल करना र् सीख िात े ह।ै◌ं िो बचच े इन दक्षताओ को हावसल नही कर पाते ह ै◌ं उन ◌ृ ◌ं पर मन्द बवि, कछ नहीं कर पाने के लेबल लगाना ◌ी शरू वकया िाता। इसका पररिाम ये ◌ु ◌ु ◌ु होता ह ै की छात्रों के प्रवत रूवच घटती िाती ह।ै 9. गक्रणत के प्रक्रत सामाक्रजक नजरिये - छात्राओ से कहा िान े लगता ह ै वक यह विषय लड़वकयों ◌ं के बस का नहीं ह।ै गवित पर लड़कों का ही हक होता ह ै ऐसा नहीं ह ै लड़वकयााँ ◌ी उतना ही गवित सीख सकती ह ै◌ं वितना लड़के सीख सकते ह।ै◌ं गवित विषय के इस सामाविक पहल पर ◌ू बात की िानी चावहए। मवहलाओ द्वारा गवित में वकए गए योगदान, बािार, घर पर मवहलाओ ◌ं ◌ं द्वारा की िान े िाली गवित की गवतविवधयों पर बातचीत होनी ही चावहए। अभ्यास प्रश्न 9. गवित पर लड़कों का ही हक होता ह ै ।(सत्य/असत्य) 10. अध्यापक द्वारा वशक्षि सामग्री उपयोग न करना गवित वशक्षि की एक बड़ी बाधा ह ै । (सत्य/असत्य) 11. गवित वचवकत्सा के क्षेत्र का एक महत्िपिभ अग ह ै (सत्य/असत्य) ◌ू ◌ं 12. गवित वशक्षा एक वकसान के वलए आिश्यक नहीं ह ै (सत्य/असत्य) 13. डीपीएस, डीिाई, ईपीएस, बी.िी शेयर बािार में इस्तेमाल होन े िाले शब्द ह ै◌ं । (सत्य/असत्य) 2.6 साराशं ज्ञान मनष्य के ◌ौवतक तथा बौविक सामाविक वियाकलाप की उपि, सके तों के रूप में िगत के ◌ु ◌ं िस्तवनष्ठ गिों और सबधों, प्राकवतक और मानिीय तत्त्िों के बारे में विचारों की अवव्यवक्त ह।ै ◌ृ ◌ु ◌ु ◌ं ◌ं िागरूकता या विशेष रूप से अवधवनयम, तथ्य , या सच्चाई की समझ को ज्ञान कहते ह ै◌ं । विवर्न्न लोगों ने गवित के महत्त्ि को अपनी अपनी तरह से परर◌ावषत वकया ह।ै गवित, विज्ञान और प्रौद्योवगकी का एक महत्िपिभ उपकरि (टल) ह।ै ◌ौवतकी, रसायन विज्ञान, खगोल विज्ञान आवद गवित के वबना नहीं ◌ू ◌ू समझे िा सकते। ऐवतहावसक रूप से दखे ◌ा िाए तो िास्ति में गवित

की अनेक शाखाओ का विकास ही ं इसवलय े वकया गया वक प्राकवतक विज्ञान में इसकी आिश्यकता आ पड़ी थी। ृ प्रारर् से गवित का विद्यालय पाठयिम में महत्िपिभ स्थान रहा ह।ै कोठारी आयोग ने ्री ितभमान वशक्षा ृ ू ं में गवित के महत्ि को स्िीकार ह।ै आधवनक वशक्षा में गवित का स्थान अवधक महत्िपिभ हो िाता ह।ै ु ू ्रौवतक विज्ञान की प्रगवत में इसका महत्िपिभ योगदान ह ै साथ ही िैविक विज्ञान के विकास में ्री ू उत्तराखण्ड मक्त विश्वविद्यालय 96 ु CPS -2 अवधकावधक रूप से इसका प्रयोग वकया िा रहा ह ै । इस शताब्दी में स्िचालन विज्ञान और साइबरनेवटक्स के आगमन से नई िैज्ञावनक औद्योवगक िावत िा िन्म हआ ह ै और इसवलए गवित के ं अध्ययन परै ध्यान दने ा और अवनिाय भ हो गया ह।ै इस विषय का उवचत आधार स्कलों में रखना चवहये। ू ्रारत के ज्यादातर राज्यों में गवित माध्यवमक या उच्च प्राथवमक स्तर तक एक अवनिायभ विषय ह ै । िहााँ छात्र वमवडल या िवनयर हाई स्कल के बाद तकवनकी वशक्षा के क्षेत्र में िाते ह ैं िहा ्री गवित एक ू ू ं अवनिाय भ विषय ह।ै राष्टीय स्तर के विद्यालयों िैसे कें िीय विद्यालय तथा सेन्रल बोडभ आॅ सेकण्डरी एिके शन का पाठयिम विद्यालयों में ्री गवित हाई स्कल तक पाठयचयाभ का एक अवनिाय भ विषय ह।ै ृ ृ ु ू उच्च वशक्षा में गवित एक िैकवलपक विषय बन िाता ह ै । अथाभत वसफभ िही छात्र गवित अध्ययन करते ह ैं विसे इसमें रूवच हो या वफर उच्च वशक्षा या तकवनकी वशक्षा में इसकी ज़रुरत हो। गवित इन स्री गिों को ु विकवसत करने में महत्िपिभ र्वमका वन्राता ह ै । िीिन को व्यिवस्थत बनान े के वलए व्यवक्त को समय, ू ू धन और सामावजक वियाओ को वनयवत्रत आिश्यक ह ै और इसमें गवित का ज्ञान उपयोगी ह।ै साथ ही ं ं साथ गवित मवस्तष्क के अनशासन के वलए ्री ज़रूरी ह ै क्योंवक गवित से तावकभ क बवि का विकास होता ु ु ह।ै मौवलकता - गवित मौवलत वचतन पैर आधाररत ह ै और इसमें रटन्त विद्या की िगह नहीं ह।ै गवित के ं प्रश्न का हल छात्रों में तावकभ क क्षमता को विकवसत ह।ै इससे छात्र आगे चलकर िीिन में आन े िाली समस्याओ को हल करन े के वलए तैयार होता ह।ै ं वकसी ्री राष्ट्र के विकास को गवित से अलग करके नहीं सोचा िा सकता ह।ै मानि अवस्तत्ि के वलए गवित के महत्ि को कोई नकार नहीं सकता। गवित इसान के रोिमराभ की विदगी की गवतविवधयों ं ं से िडी हई ह ै । राष्टीय विकास के आिश्यक स्री क्षेत्रों में गवित के योगदान ह ै िैसे विज्ञान और ु तकनीक, शेयर बाज़ार, बैंवकग, वचवकत्सा, मौसम पिाभनमान, छोटे और मध्यम स्तर के उद्यम इत्यावद । ू ु ं अध्यापक द्वारा वशक्षि सामग्री उपयोग न करना,गवित विषय पर एकावधकार की कमी ,अध्यापक का गवित विषय में दक्ष न होना ,गवित के प्रवत माहौल ,गवित के प्रवत सामावजक विरर्य े िैसी गवित वशक्षि के कछ मद्द े तथा चनौवतयों ह ैं ु ु ु 2.7 अभ्यास प्रश्नों के उत्तर 1. सत्य 2. असत्य 3. सत्य 4. असत्य 5. असत्य 6. सत्य 7. सत्य 8. असत्य उत्तराखण्ड मक्त विश्वविद्यालय 97 ु CPS -2 9. असत्य 10. सत्य 11. सत्य 12. असत्य 13. सत्य 2.8 संदर् भ ग्रन्थ सची ू 1. राष्ट्रीय पाठयचयाभ 2005, रा.शै.अन.प्र.प., 2006 ृ ु 2. गवित वशक्षि, राष्ट्रीय फोकस समह का आधार पत्रा, रा. शै. अन. प्र. प., 2006 ू ु 3. गवित का पाठयिम, रा. शै. अन. प्र. प., 2006 ृ ु 2.9 वनबधात्मक प्रश्न ं 1. गवित का, ज्ञान की एक शाखा के रूप में महत्ि की व्याख्या कीविए।ह ै 2. "विद्यालय की पाठयचयाभ म ें गवित का के न्िीय स्थान ह"ै इस कथन की तकभ सगत व्याख्या ृ ं कीविए । 3. गवित वशक्षि के मद्द े तथा चनौवतयों का विश्लेषि कीविए ? ु ु 4. राष्टीय विकास के एक माध्यम

Plagiarism detected: **0.08%** https://mycoaching.in/r-ke-roop-prakar-matra-s… + 3 resources! id: **128**

के रूप में इसकी र्वमका के सबध में चचाभ कीविए। ू ं ं उत्तराखण्ड मक्त विश्वविद्यालय 98 ु CPS -2 इकाई 3 - ज्ञान की एक शाखा के रूप में विज्ञान 3.1 प्रस्तािना 3.2 उद्दश्े य 3.3 ज्ञान की एक शाखा के रूप म

ें विज्ञान 3.4 विज्ञान का स्कल पाठयिम में स्थान ृ ू 3.5 विज्ञान वशक्षि की समस्याए एिम चनौवतयााँ :िैज्ञावनक प्रिवत्त को अन्तवनविभष्ट करने ृ ु ं में, इसकी र्वमका के सन्दर्भ में एिम सामावजक आवथभक विकास के िाहक के रूप ू में 3.6 साराश ं 3.7 शब्द िाली 3.8 अभ् यास प्रश् नों के उत् तर 3.9 सदर्भ ग्रथ सची ू ं ं 3.10 वनबधात् मक प्रश्न ं 3.1 प्रस्तावना आि का यग

Plagiarism detected: **0.04%** https://sanskartutorials.in/hindi-alphabet-hindi-a… id: **129**

विज्ञान और तकनीकी का यग ह ै । वपछले कछ िषों में विज्ञान न े हमारे िीिन के लगर्ग ु ु ु हर क्षेत्र

में पररितभन ला वदया ह ै । आि हम आकाश को छने, चााँद, तारों तक पहचाँ ने की कलपना को ू साकार रूप प्रदान कर सकने में सक्षम हए ह ैं , यह सब विज्ञान के कारि ही सर्ि् हो पाया ह।ै विज्ञान ं एिम िैज्ञावनक वनरतर हमारे सख सविधाओ की बढ़ोतरी करने में प्रयासरत ह ैं । इस इकाई में हम ज्ञान की ु ु ं ं एक शाखा के रूप में विज्ञान, विज्ञान का स्कल पाठयिम में स्थान , विज्ञान वशक्षि की समस्याए एिम ृ ू ं चनौवतयााँ :िैज्ञावनक प्रिवत्त को अन्तवनविभष्ट करने में, इसकी र्वमका के सन्दर् भ में एिम सामावजक आवथभक ृ ु ू विकास के िाहक

Plagiarism detected: **0.14%** https://mycoaching.in/hindi-varnamala + 3 resources! id: **130**

के रूप में, के विषय में विस्तारपिभक चचाभ करेंगे। ू 3.2 उद्दश्े य इस इकाई के अध्ययन के पश्चात आप 1. ज्ञान की एक शाखा के रूप में विज्ञान िीिन के प्रत्येक क्षेत्र को वकस प्रकार प्र्रावित कर रहा ह ै , यह समझ सकें गे । 2. विज्ञान का हमारे स्कल पाठयिम में क्या स्थान ह,ै इसका विस्तारपिभक िभिन कर सकें गे । ृ ू ू उत्तराखण्ड मक्त विश्वविद्यालय 99 ु CPS -2 3. विज्ञान

के अध्ययन के फलस्िरूप छात्रों के व्यवक्तत्ि में होने िाले पररितभनों के विषय में विस्तारपिभक िभिन कर सकें गे । ू 4. िैज्ञावनक प्रिवत्त को अन्तवनविभष्ट करन े तथा सामावजक आवथभक विकास के िाहक

Plagiarism detected: **0.05%** https://mycoaching.in/hindi-varnamala + 5 resources! id: **131**

के रूप में, विज्ञान ृ वशक्षि के क्षेत्र में आने िाली समस्याओ और चनौवतयों को समझ सकें गे । ु ं 5. विज्ञान वशक्षि के क्षेत्र में आने िाली समस्याओ और चनौवतयों को दर करन े हते क्या प्रयास वकय े ु ु ं ू िा सकते ह ैं , इसका विस्तारपिभक िििभन कर सकें गे। ू 3.3 ज्ञान की एक शाखा के रूप म ववज्ञान ें मनष्य का मन स्िििरािी से ही विज्ञा

Plagiarism detected: **0.09%** https://mycoaching.in/hindi-varnamala + 2 resources! id: **132**

स होता ह,ै िो कछ ोरी हमारे आस पास , हमारे घर या सिमि में घवटत ु ु ु होता ह,ै उसके बारे में िानन े की हमारी विज्ञासा सहि और स्िािराविक ही होती ह ै । उदाहरि के वलए िषाभ क्यों होती ह?ै आसमान का रग नीला क्यों ह

ोता ह?ै कमपयटर के माध्यम से कै से दर बैठे व्यवक्तयों ू ं ू को दखे ा या सना िाता ह ै ? इस प्रकार के अनेक प्रश्न वनरतर हमारे मवस्तष्क में आते ही रहते ह ैं । इन सोरी ु ं प्रश्नों के सही उत्तर प्राप्त करने और सत्य की खोि में लगे रहने के काय भ को विज्ञान का नाम वदया िा सकता ह ै । विज्ञान अथाभत Science शब्द की उत्पवत्त लेवटन ोराषा के शब्द Scire (To know) से हई ह,ै विसका अथभ ह ै िानना । इस प्रकार विज्ञान शब्द का अथभ उस ज्ञान से ह,ै िो हमारी बवि द्वारा ग्रहि ु वकया िाये तथा इस प्रकार ग्रहि वकया गया ज्ञान शब्दों के माध्यम से दसरों तक प्रेवषत वकया िाय े । ू

Plagiarism detected: **0.04%** https://sanskartutorials.in/hindi-alphabet-hindi-a… + 3 resources! id: **133**

सामान्य अथत में “सामान्य ज्ञान का सगवठत रूप विज्ञान ह।ै अथिा “ज्ञान का िमबि रूप विज्ञान ह ै ।” ं आइस्टीन के अनसिा

Quotes detected: **0.05%** id: **134**

“हमारी ज्ञान अनर्वतयों की अस्त व्यस्त विवर्न्नता को एक तकभ पिभ विचार ु ु ू ू ं प्रिाली वनवमभत करने के प्रयास को विज्ञान कहते ह।ैं ”

Plagiarism detected: **0.15%** https://mycoaching.in/hindi-varnamala + 6 resources! id: **135**

ज्ञान की एक शाखा के रूप में विज्ञान का क्षेत्र अत्यत विस्तत एिम व्यापक ह ै । ोरौवतक विज्ञान, िीि ृ ं विज्ञान, , वचवकत्सा विज्ञान, अन्तररक्ष विज्ञान , कवष विज्ञान, िै प्रोधोवगकी विज्ञान, रक्षा एिम परमािा ृ ु उिाभ, आवद क्षेत्रों में िो ोरी कछ आि उपलब्ध ह,ै िह विज्ञान की ही देन ह ै । विज्ञान के क्षेत्र में होने ु िाली प्रगवत एिम विकास ने ज्ञान की एक शाखा के रूप में मानि िीिन के लगर्ग हर एक क्षेत्र

को विस तरह से प्रोराववत वकया ह,ै यहाँ पर हम उसकी चचाभ करेंगे- 1. िैवनक जीवन में उपयोग - ोरौवतक विज्ञान के अतगभत दो उपविषय ोरौवतकी एिम रसायन शास्त्र ं आते ह।ैं ोरौवतक विज्ञान के माध्यम से छात्रों को विवर्न्न पदाथो के गि धमो का अध्ययन करने , ु उनका विश्लेषि सश्लेषि करके , उनकी रचना और उनके पारस्पररक प्रिियों से अिगत होने का ं अिसर प्राप्त होता ह ै । िवबवक िीि विज्ञान के अतगभत तीन उपविषय िंत विज्ञान, िनस्पवत विज्ञान ु ं ं एिम सक्ष्म िैविकी आते ह ैं । िीि विज्ञान िीिों एिम िनस्पवतयों के गि धमभ एिम विशेषताओ

Plagiarism detected: **0.03%** https://www.amojeet.com/2021/05/ka-se-gy-tak… id: **136**

के ू ु ं बारे में िमबि अध्ययन करने में सहायता करता ह ै । िीि विज्ञान के ज्ञान

के कारि ही हम रेशम के कीड़ों से रेशम एिम र्ड़े ों से ऊन प्राप्त करके अपन े वलए िस्त्रों का वनमाभि कर पाते ह ैं । हमारे शरीर के विवर्न्न अगों की कायभप्रिाली , उनके रोगों एिम उन रोगों से वनदान कै से हो? , यह सब िीि विज्ञान ं उत्तराखण्ड मक्त विश्वविद्यालय 100 ु CPS -2 के ज्ञान द्वारा ही सिर् हो पाता ह ै । िीि विज्ञान के आधवनक ज्ञान के कारि ही आि हमारे दशे के ु ं वचवकत्सा विोराग ने इतनी तरक्की कर ली ह ै वक वकसी ोरी बड़े से बड़े रोग की िाच एिम वनदान ं आि हमारे दशे में ही सिर् ह ै । हमारे घरों में दवै नक िीिन में उपयोग वकये िाने िाले विवर्न्न ं उपकरि िैसे पखा, टिवि, कलर , ए. सी., यातायात के विवर्न्न साधन िैसे कार , बस , रेल ,विमान ू ं , यहाँ तक की वबिली ोरी ोरौवतक शास्त्र की ही देन ह ैं । इन सोरी ससाधनों न े हमारे िीिन को ं सरल एिम सगमय बना वदया ह ै । इसी प्रकार हमारे दवै नक िीिन में उपयोग में आने िाली विवर्न्न ु िस्तए िैसे : पीने का शि पानी ,विवर्न्न रोगों के वलए प्रयोग में आने िाली दिाइया, इिंक्शन, ु ु ं ं ं साबन, शिैम , शेमप कपडे , आवद सब रसायन विज्ञान के ज्ञान के कारि ही हमको प्राप्त हो रह े ह ैं । ु ू 2. कक्रष- ोरारतीय कवष में िािवत विज्ञान की ही देन ह ै । लगर्ग 75% वकसानों ने उिभरकों, कीटनाशकों ृ ृ ं ि कवष की आधवनक विवधयों को अपनाया ह,ै विसके फलस्िरूप फसलों एिम फलों की वकस्मों में ृ ु सधार हआ ह ै । इस समबन्ध में ोरारतीय वशक्षा आयोग ने ोरी वलखा ह ै वक

Quotes detected: **0.12%** id: **137**

“ क्रवज्ञान पि आिाररत ु नयी कक्रष प्रौद्योक्रगकी का क्रवकास सवातक्रिक महत्वपणत है क्रपछले सौ वषों में क्रवश्व के अनेक ृ ू भागों में कक्रष में िाक्रत आई है , जैसे- िासायक्रनक इक्रजक्रनयरिग तथा याक्रत्रकीकिण का ृ ं ं ं ं क्रवकास तथा जैव-वैज्ञाक्रनक सोच में िाक्रत आना मनष्ट्य के िहने के ढग के वैज्ञाक्रनक ु ं ं िक्रष्टकोण से कक्रष प्रौद्योक्रगकी में अत्यत िसिा हआ है ”

। विज्ञान ही ह ै विसके महत्िपिभ ृ ु ु ू ं योगदान के कारि आि हम कवष के क्षेत्र में आत्मवनर्रभ हो गये ह ैं । आिादी से पहले िहााँ हमारे देश ृ की समपिभ िनता को अनाि उपलब्ध नही हो पाता था । िहीं विज्ञान के योगदान के कारि आि ू हमारा दशे इस वस्थती में ह ै वक दशे के सररी लोगों के वलए अन्न की आपवतभ करने के बाद ररी हम ू आि अन्न का वनयाभत करने की वस्थती में ह ैं । आि रेवडयो एिम टेलीविजन पर प्रसाररत वकये िाने िाले विवर्न्न कवष आधाररत कायिमों के माध्यम से वकसानों को कीट वनयत्रि, फसलों की ृ ं दखे ररोल और खाद के प्रयोग की उवचत िानकारी प्राप्

Plagiarism detected: **0.11%** https://mycoaching.in/r-ke-roop-prakar-matra-s… + 5 resources! id: **138**

त हो िाती ह।ै फलस्िरूप इन कायभिमों से वकसानों को फसलो को उन्नत बनाने के वलए उवचत ज्ञान प्राप्त होता ह,ै साथ ही उन्ह ें मौसम की पिभ ू िानकारी ररी हो िाती ह,ै विससे अब ि फसलों की कटाई एिम बिाई के प्रवत सिग एिम ु सािधान रहने लगे ह।ैं 3. क्रचक्रकत्सा - वचवकत्सा के क्षेत्र

में विज्ञान हमारे शारीररक स्िास्थ्य के साथ साथ मानवसक स्िास्थ्य को ररी बनाय े रखन े म ें महतिपिभ र्वमका वनररा रहा ह।ै पहले विन र्यिाह रोगों के उपचार के वलए ू ू हमें विदेश िाना होता था , विज्ञान के विकास के कारि , आि ऐसे वकसी ररी बड़े से बड़े रोग की वचवकत्सा सविधा हमारे दशे में ही उपलब्ध ह।ै आि सचार के विवर्न्न माध्यमों िैसे अख़बार, ु ं रेवडयो एिम टेवलविज़न के माध्यम से स्िास्थ्य समबन्धी सचनाए सदर ग्रामीि क्षेत्र तक पहचाँ रही ह ैं । ू ु ं ू विज्ञान के द्वारा ही विवर्न्न रोगों िैसे- हैि ा, चचे क पर परी तरह से तथा टी.बी., पोवलयो ि बच्चों ू के वदमागी बखार पर काफी सीमा तक काब पा वलया गया ह ै । आि कररी असाध्य लगन े िाले रोग ु ू िैज्ञावनकों द्वारा खोिी गयी विवर्न्न दिाइयों, उपकरिों , ससाधनों, एिम तकनीवकयों के प्रयोग से ं असाध्य नही रह गय े ह ैं । उत्तराखण्ड मक्त विश्वविद्यालय 101 ु CPS -2 4. अन्तररक्ष - आि हमारा दशे िैज्ञावनक प्रगवत के पथ पर अग्रसर ह।ै ररारत को आि उन सात दशे ों की श्रेिी में रखा िाता ह,ै िोवक उपग्रह छोड़ने की क्षमता रखते ह।ैं विज्ञान के द्वारा दरस्थ वशक्षा के ू क्षेत्र में िावत हई ह ै , एडसेट िैसे शैवक्षक उपग्रहों के माध्यम से हमें आि घर बैठे ही वशक्षा के ु ं विवर्न्न कायिभ मों की िानकारी

Plagiarism detected: **0.06%** https://www.amojeet.com/2021/05/ka-se-gy-tak… id: **139**

ररी प्राप्त हो िाती ह।ै अन्तररक्ष में स्थावपत वकये गये विवर्न्न उपग्रहों के माध्यम से हम पथ्िी के िातािरि एिम महासागर पर वनगरानी रखकर ,मौसम की हर पल ृ िानकारी प्राप्त

करते रहते ह ैं । हमारे पथ्िी के िातािरि में वकस प्रकार के पररितभन हो रह े ह ैं िैसे : ृ नलोबल िावमिंग ,ओिोन परत क्षरि , य े पररितभन क्यों हों रह े ह?ैं इन पररितभनों के वनकट र्विष्य में क्या दष्पररिाम हो सकते ह?ैं इन पररितभनों से होने िाले नकसान को कै से रोका िा सकता ह ै ? ये ु ु सारी िानकारी विज्ञान के कारि ही हमको प्राप्त हो पा रही ह।ै 5. िक्षा एवम पिमाण ऊजात- िैज्ञावनक प्रगवत एिम विकास पर ही हमारे देश की सरक्षा व्यिस्था वनर्भर ु ु करती ह।ै विज्ञान ही ह ै विसके कारि हमारी सैन्य शवक्त एिम सगठन मिबत हो रहा ह।ै आि हमारे ू ं पास पथ्िी, आकाश, वत्रशल , नाग एिम अवनन िैसी सफल वमसाइलें ह ैं ,िो हमारे देश को विपरीत ृ ू पररस्थवत में वकसी ररी चनौती का सामना करन े में सक्षम बनाती ह ैं और वकसी ररी विपरीत पररवस्थवत ु में हमारे दशे की सरक्षा करन े में सक्षम ह।ैं ु 6. जैव प्रौद्योक्रगकी क्रवज्ञान- िैज्ञावनक दृवष्टकोि से िैि प्रोधोवगकी एक नया विषय ह ै । आि िैि प्रोधोवगकी ही ह ै , विसके द्वारा हम वफगर वप्रवटग िैसी तकनीकी का प्रयोग वकसी अपरावधक समस्या ं ं ं को सलझान े में करके , अपराधी को सिा वदलाने में सक्षम हो गय े ह ैं । िैि प्रोधोवगकी की सहायता से ु ही हम , डी. एन. ए. टेवस्टग द्वारा वकसी बालक के िैविक वपता की िानकारी ररी प्राप्त कर सकने म ें ं सक्षम हो गये ह।ैं इसके माध्यम से िहााँ एक ओर हमन े कवष के क्षेत्र में फसलों की नयी नयी उन्नत ृ वकस्मों का विकास वकया ह ै ,िहीं दसरी ओर हमन े रासायवनक उिभरकों की वनर्भरता को कम करने के ू वलए िैविक उिभरकों का ररी विकास वकया ह ै । आि हम उत्पावदत खाद्य सामग्री को िैि प्रोधोवगकी के माध्यम से ही लमबे समय तक सरवक्षत रख सकते ह ैं । ु अभ्यास प्रश्न 1. विज्ञान अथाभत Science शब्द की उत्पवत्त_____ररााषा के शब्द _____से हई ह,ै विसका अथभ ह ै िानना। 2. ररौवतक विज्ञान के अतगभत दो उपविषय _____ एिम _____आते ह।ैं ं 3. एडसेट पथ्िी के िातािरि पर वनगरानी रखन े हते अन्तररक्ष में स्थावपत वकया गया एक उपग्रह ह।ै ृ ु ु (सत्य / असत्य) 4. वफगर वप्रवटग िैसी तकनीकी का प्रयोग वकसी बालक के िैविक वपता की िानकारी प्राप्त करने हते ु ं ं ं वकया िाता ह।ै (सत्य / असत्य) उत्तराखण्ड मक्त विश्वविद्यालय 102 ु CPS -2 3.4 ववज्ञान का स्कू ल पाठ्यक्रम म स्थान ें कोठारी आयोग न े अपनी ररपोटभ में स्पष्ट रूप से वलखा था वक

Quotes detected: **0.04%** id: **140**

“क्रवज्ञान औि गक्रणत क्रवद्यालय जीवन के प्रथम िस वषों में सभी क्रवद्याक्रथतयों को उनकी सामान्य क्रशक्षा के रूप में अक्रनवायत रूप से पढाये जाने चाक्रहए”

। विज्ञान और गवित की पढाई पर इन वदनों काफी िोर वदया िा रहा ह।ै हमारे दशे की प्रगवत और विकास के वलए यह अत्यत आिश्यक ह ै वक विज्ञान के अध्ययन के स्तर को ऊाँ चा ं वकया िाये और इन विषयों की वशक्षा पर छोटी कक्षाओ से ही ध्यान वदया िाये। आि विज्ञान का ं अध्ययन करने िाले छात्रों की सख्या में अप्रत्यावशत बढ़ोतरी हई ह ै । सरकार के द्वारा ररी छात्रों में विज्ञान ं की वशक्षा को प्रोत्सावहत करने के वलए विवर्न्न स्कीम चलायी गयी ह ैं ,विनके द्वारा छात्रों को वशक्षा हते आवथभक मदद प्रदान की िाती ह।ै उदहारि के वलए NCERT , वदलली,

Plagiarism detected: **0.04%** https://sanskartutorials.in/hindi-alphabet-hindi-a… + 2 resources! id: **141**

प्रत्येक िषभ राष्ट्रीय विज्ञान ु प्रवत◌्रा खिो परीक्षा आयोवित करती ह ै ,इस परीक्षा के माध्यम से चने गय े छात्रों को विज्ञान विषय में ु वशक्षा प्राप्त करने हते आवथभक मदद प्रदान की िाती ह।ै ु सामन्यतया हम समय और समिा की माग के आधार पर ही स्कल के पाठयिम में वकसी विषय को ू ू ं स्थान प्रदान करते ह।ैं वशक्षा को सस्कवत के सरक्षि, सिधभन एिम हस्तानन्तरि की प्रविया

Plagiarism detected: **0.04%** https://mycoaching.in/r-ke-roop-prakar-matra-s… + 3 resources! id: **142**

के रूप में ृ ं ं ं परर◌्रावषत वकया िाये या व्यवक्तत्ि के विकास एिम सामाविक विकास की प्रविया के रूप म ें परर◌्रावषत वकया िाये , विज्ञान का महत्ि स्िय ही स्पष्ट हो िाता ह ै । वकसी ◌्री दशे का विकास उसकी आवथभक ं वस्थवत पर वनर्भर करता , देश की आवथभक वस्थवत उत्पादन पर वनर्भर करती ह ै और उत्पादन में अप्रत्यावशत िवि नयी िैज्ञावनक तकनीकी

Plagiarism detected: **0.07%** https://mycoaching.in/hindi-varnamala + 3 resources! id: **143**

के प्रयोग के कारि ही सिर् हो सकती ह।ै व्यवक्तत्ि के ृ ं विकास के वलए ◌्री व्यवक्त में िैज्ञावनक प्रवित्त होना एिम उसका िैज्ञावनक विवधयों के प्रयोग में वनपि ृ ु होना आिश्यक ह।ै इस प्रकार

हम कह सकते ह ैं वक आधवनक यग में

Plagiarism detected: **0.11%** https://sanskartutorials.in/hindi-alphabet-hindi-a… id: **144**

प्रत्येक व्यवक्त के वलए विज्ञान ु ु विषय का ज्ञान अवनिायभ हो गया ह ै । अतः छात्रों को स्कल से ही विज्ञान वशक्षा सही प्रकार से दी िाये , ू इस उद्दश्े य को ध्यान में रखते हए हमारे स्कल पाठयिम में विज्ञान को एक अवनिाय भ विषय बनाकर ू ू महत्िपिभ स्थान वदया गया ह।ै स्कल पाठयिम में विज्ञान

को एक महत्िपिभ विषय के रूप में रखकर हम ू ू ू ू छात्रों के व्यवक्तत्ि में िो पररितभन कर सकते ह ैं ,यहाँ पर हम उनकी विस्तत चचाभ करेंगे- ृ 1. अन्िक्रवश्वासों से मवक्त विलाना - विज्ञान एक ऐसा विषय ह ै विसमें

Quotes detected: **0%** id: **145**

“क्या”,

Quotes detected: **0%** id: **146**

“क्यों”

एिम

Quotes detected: **0%** id: **147**

“कै से”

ु प्रश्न वनवहत होते ह।ैं िब छात्र स्कल की वशक्षा से ही विज्ञान का अध्ययन प्रारमर् कर दते ◌ा ह ै तो ये ू स◌्री प्रश्न छात्र के व्यवक्तत्ि का वहस्सा बन िाते ह।ैं अब छात्र अपने घर या आस पास के समिा में वकसी ◌्री घटना को दखे ता ह,ै तो उसका मन मवस्तष्क अपन े आप ही उस घटना का विश्लेषि करने लगता ह ै । िह उस घटना को यूँ ही तब तक स्िीकार नही करता, िब तक उसको कोई ठोस प्रमाि ू नही वमल िाता । इसको हम एक उदाहरि की सहायता से समझ सकते ह ैं ,मान लीविये यवद वकसी विज्ञान पढन े िाले छात्र को यह बताया िाता ह ै वक यज्ञ करने से र्गिान प्रसन्न होते ह ैं और तब िषाभ होती ह ै , तो यह छात्र इस तथ्य को य ◌ँू ही स्िीकार नही करेगा ।िह स्िय यज्ञ करके देखेगा और ू ं यवद प्रत्येक यज्ञ के बाद िषाभ नही हई तो िह इस तथ्य को पिभतया अस्िीकार कर दगे ◌ा वक यज्ञ ू उत्तराखण्ड मक्त विश्वविद्यालय 103 ु CPS -2 करने से िषाभ होती ह ै । इस प्रकार

Plagiarism detected: **0.15%** https://sanskartutorials.in/hindi-alphabet-hindi-a… id: **148**

विज्ञान का अध्ययन करने से छात्र को समिा में व्याप्त अन्धविश्वास से ◌्री स्िय मवक्त वमल िाती ह ै । ु ं 2. कायत क्षमता में वकृि किना- विज्ञान के अध्ययन से छात्र की काय भ क्षमता में ◌्री ििि होती ह।ै ृ ृ विस छात्र को विज्ञान की आधवनक तकनीवकयों का ज्ञान होता ह,ै िह अपन े कायभ िैज्ञावनक ु तकनीकी की सहयता से शीघ्र एिम कम समय म ें समाप्त कर लेता ह ै । उदहारि के वलए यवद विज्ञान

के छात्र को ई-मेल का ज्ञान ह ै और िह वकसी दसरे दर बैठे व्यवक्त को कोई पत्र िेर्े ना ू ू चाहता ह ै तो िह छात्र पराने माध्यम यावन डाक के द्वारा अपना पत्र ना िेर्कर, दर बैठे व्यवक्त को ई- ु ू मेल करेगा और कछ वमनट या सेके ण्ड में पत्र को ई-मेल के माध्यम से दसरे व्यवक्त तक आसानी से ु ू पहचा दगे ◌ा । इस प्रकार विज्ञान के ज्ञान से ही हमे दवै नक िीिन के वकसी ◌्री कायभ को कम समय, ं कम व्यय, ि कम श्रम में परा करने में सहायता वमलती ह ै । ू 3. तथ्यात्मक क्रचतन पिक्रत क्रवकक्रसत किना -

विज्ञान छात्रों में तथ्यात्मक वचतन पिवत विकवसत ं ं करने में सहायक होता ह ै । विज्ञान की प्रकवत ऐसी होती ह ै वक िब ्री हमें कोई नया तथ्य वमलता ह ै ृ तो हम उसके प्रकाश में परानी स्री धारिाओ को पनः परर्रावषत कर लेते ह ैं । इस प्रकार इन परानी ु ु ु ं धारिाओ का के िल ऐवतहावसक महत्ि रह िाता ह।ै हमारे समाि में ्री कछ रीवत-ररिाि एिम ु ं सामाविक रुवड़यााँ ह ैं िो पीड़ी डर पीड़ी चली आ रही ह ैं । विज्ञान छात्र में ऐसी वचतन पिवत ं विकवसत करता ह ै वक छात्र अपने आस पास के सामाविक िीिन में व्याप्त परानी परमपराओ को ु ं स्िय ही नए तथ्यों के प्रकाश में पनः परर्रावषत करता िाता ह ै और रुवडयों से हमेशा के वलए मक्त ु ु ं होता िाता ह।ै उदहारिस्िरुप यवद वकसी विज्ञान के छात्र को उसके आस पड़ोस के लोगों द्वारा या घर के सदस्यों द्वारा यह बताया वदया िाता ह ै वक लड़वकया वसफभ कढ़ाई बनाई करन े में दक्ष होती ह,ैं ु ं गवित के सिाल हल करने में दक्ष

Plagiarism detected: **0.06%** https://mycoaching.in/hindi-varnamala id: **149**

नही होती ह ैं । ऐसी वस्थवत में यवद यही छात्र अपनी कक्षा की वकसी सहपाठी को या अन्य वकसी छात्रा को गवित के सिाल हल करन े में दक्ष पाता ह ै , तो िह पर

्ानी धारिा को नए तथ्य के प्रकाश में पनः परर्रावषत कर लेता ह ै और समझ लेता ह ै वक िो ु ु प्राचीन तथ्य उसे समाि द्वारा बताया गया था िह महत्िहीन ह ै , एक लड़की ्री गवित के सिाल हल करने में दक्ष हो सकती ह ै । इस प्रकार िह प्राचीन रुवडयों के बधन से ्री मक्त हो िाता ह।ै ु ं 4. सामाक्रजक प्रगक्रत के क्रलए तैयाि किना - विज्ञान सामाविक प्रगवत के वलए छात्रों को तैयार करता ह।ै वकसी ्री समाि की प्रगवत समाि में रहने िाले लोगों के िवष्टकोि पर वनर्रभ करती ह।ै विज्ञान का अध्ययन ही हमें यह बताता ह ै वक वकसी सिामक रोग के फै लने से बचाि करने के वलए क्या ं उपाय वकय े िाये? अपने आस पास के िातािरि को वकस प्रकार शि रखा िाये? समाि के लोगों ु को र्विष्य में अस्िच्छ पानी के सेिन से होने िाली स्िास्थ्य समबन्धी समस्यायों के प्रवत वकस प्रकार सचेत वकया िाय े ? विज्ञान छात्रों में समाि के प्रवत उत्तरदावयत्ि एिम सामाविक िेतना का विकास करता ह ै । विज्ञान वचतन पिवत छात्रों को सकवचत िवष्टकोि से सािभ्रौवमक िवष्टकोि की ु ं ं ओर ले िाती ह।ै आगे चलकर यही छात्र िब बड़े होकर समाि का वहस्सा बनते ह ैं तो िे विज्ञान उत्तराखण्ड मक्त विश्वविद्यालय 104 ु CPS -2 के द्वारा पररिवतभत अपन े सािभ्रौवमक िवष्टकोि की सहायता से सामाविक प्रगवत में सहायक होते ह ैं । 5. जीवन की क्रिनक

Plagiarism detected: **0.02%** https://basicfoundation.in/ya-words-in-hindi/ id: **150**

समस्याओ को वैज्ञाक्रनक क्रवक्रि से हल किना क्रसखाना : विज्ञान छात्रों क

ो ं उनके दवै नक िीिन में आने िाली वकसी ्री समस्या को िैज्ञावनक विवध से हल करना वसखाता ह।ै िैज्ञावनक विवध के कछ वनवश्चत सोपान ह,ै पहला सोपान ह ै – समस्या की पहचान करना , दसरा ु ू सोपान ह-ै समस्या पर वचतन करना , तीसरा सोपान ह-ै वचन्तन के फलस्िरूप समस्या के िो ्री हल ं सामने आयें, उनकी सत्यता िाचने के वलए प्रयोग करना, चौथा सोपान ह-ै प्रयोगों के पररिाम को ं अन्य पररवस्थवतयों में िाचना एिम पाचिा सोपान ह-ै िो पररिाम सही वसि हों, उन्ह ें वनयम मान ं ं लेना। उदाहरि के वलए यवद छात्र अपने घर पर टेलीविज़न पर कोई कायभिम देख रहा ह ै त्री टेवलविज़न चलते चलते अचानक बद हो िाय े और स्िीन खाली वदखने लगे, तो छात्र सबसे पहले ये दखे ता ं ह ै की समस्या क्या ह ै ? क्या स्री चैनल पर टेलीविज़न की स्िीन खाली वदख रही ह?ै हर चैनल पर िह यही पाता ह ै की स्िीन खाली ही निर आ रही ह।ै अब िह इस पर वचतन करता ह ै वक हआ ं क्या ह ै ? क्या के िल आिाज़ नही आ रही ह,ै या तस्िीर ्री नही आ रही ह ै या टेलीविज़न गरम हो गया ह ै उसके कारि ऐसा हो रहा ह ै । अब वचतन के फलस्िरूप उसके सामने एक हल आता ह ै वक ं के बल ऑपरेटर की वबिली चली गयी होगी , विस ििह से ये हआ होगा । अब छात्र के बल ऑपरेटर को िोन करके इसकी पवष्ट करता ह ै और उसे पता चल िाता ह ै वक के बल ऑपरेटर के ु यहााँ वबिली चले िाने से ये समस्या हई ह,ै कछ ही समय में य े समस्या सही हो िाएगी और ु टेलीविज़न पर वफर से कायभिम प्रसाररत होने लगेंगे। इस उदाहरि के समान ही

Plagiarism detected: **0.03%** https://sanskartutorials.in/hindi-alphabet-hindi-a… + 2 resources! id: **151**

विज्ञान का छात्र अपन े दवै नक िीिन की प्रत्येक समस्या को िैज्ञावनक विवध का प्रयोग

करके ठीक प्रकार से हल करने में सक्षम हो िाता ह ै । 6. अनशासनात्मक क्रिक्रष्टकोण क्रवकक्रसत किना - विज्ञान एक ऐसा विषय ह ै विसका अध्ययन करने ु के वलए एकाग्रता, कविन पररश्रम , वनयम, सव्यिवस्थत ज्ञान , वनयमानसार प्रयोगात्मक कायभ करने ु ु की आिश्यकता िैसी अनेक आिश्यक पररवस्थवतया ह ैं ,विनका पालन एक विज्ञान के छात्र को ं करना ही होता ह।ै अतः विज्ञान के छात्र में अनशासन से रहन े की आदत का वनमाभि स्िय ही हो ु ं िाता ह ै 7. नैक्रतक मल्य क्रवकक्रसत किना - सच्चाई , ईमानदारी, न्यायवप्रयता, समय का पाबद होना, दसरे के ू ं ू िवष्टकोि को समम्मान दने ा, दसरे के विचारों का आदर करना, लर्ा बरा सोचने की सामथ्य भ रखना, ु ू वनयमों का पालन करना आवद स्री गि िो एक अच्छे चररत्र के वलए वनिाभयक ह ैं , विज्ञान के ु अध्ययन के फलस्िरूप छात्र में स्िय ही विकवसत हो िाते ह ैं । ं 8. सावतभौक्रमक क्रिक्रष्टकोण क्रवकक्रसत किना - िैज्ञावनक वचतन पिवत छात्रों में सािभ्रौवमक िवष्टकोि ं विकवसत करने में सहायक होती ह।ै धमभ एिम सस्कवत की वचतन पिवत िाले छात्र का िवष्टकोि ृ ं ं

Plagiarism detected: **0.03%** https://mycoaching.in/hindi-varnamala + 5 resources! id: **152**

क्षेत्र विशेष की सीमा से बधा होता ह ै । िबवक विज्ञान के वनयम और व्याख्यायें वकसी क्षेत्र

या राष्ट्र ं उत्तराखण्ड मक्त विश्वविद्यालय 105 ु CPS -2 की सीमा में बधे नही होते ह ैं । िैज्ञावनक वचतन पिवत िाला छात्र वकसी ्री राष्ट्र द्वारा विज्ञान के ं ं क्षेत्र में वकये गय े योगदान को देखकर, वबना वकसी ्रेदि्ा के उस राष्ट्र का सम्मान करता है । उसका वचतन एिम िविष्टकोि सकवचत नही होता ह ै अवपत सािभ्रौवमक होता ह।ै ु ु ं ं अभ्यास प्रश्न 5. स्कल पाठयिम में विज्ञान को एक महत्िपूि विषय के रूप में रखने से छात्रों के व्यवक्तत्ि में होने ृ ू ू िाले वकन्ही तीन पररितभनों को बताइये? 3.5 ववज्ञान वशक्षण की समस्याए ं एवम चुनौवतया ाँ : वैज्ञावनक प्रववत्त को ृ अन्तवनर्ववष्ट करने म, इसकी ्रूवमका के सन्दर् भ म एवम सामावजक आर्वथक ें ें ववकास के वाहक के रूप म ें विज्ञान की वशक्षा का मख्य उद्देश्य छात्रों में िैज्ञावनक प्रिवत्त का विकास करना ह ै और साथ ही छात्रों को ृ ु सामाविक आवथभक विकास के वलए तैयार करना ह ै । पवण्डत ििाहर लाल नेहरु न े 1946 में अपनी पस्तक

Quotes detected: **0.01%** id: **153**

" वडस्किरी आँफ इवडया"

में िैज्ञावनक प्रिवत्त का सामान्य विचार स्पष्ट वकया था उन्होंन े इसे ृ ु ं िीिन शैली, सोचने का तरीका, काय भ करन े का तरीका, तथा सहचरों के साथ व्यिहार करने का तरीका बताया था । िनमानस में िैज्ञावनक िविष्टकोि का विकास हमारे सविधान के अनच्छेद 51, अ के अतगभत ु ं ं मौवलक कत्तभव्य में से एक ह।ै िषभ 1976 में 42 िें सविधान सशोधन में

Quotes detected: **0%** id: **154**

"िैज्ञावनक प्रिवत्त"

के साथ ृ ं ं

Quotes detected: **0.01%** id: **155**

"मनष्य िीवत की सेिा"

को िोड़ा गया ह।ै इसी के साथ ्रारत दवनया का पहला राष्ट्र बन गया ह ै , विसने ु ु िैज्ञावनक चेतना को नागररक कत्तभव्यों में शावमल वकया ह ै । अन्िेषि की प्रिवत्त तथा प्रश्न पछे िान े का अवधकार िैज्ञावनक प्रिवत्त का मलाधार ह।ै अतः िैज्ञावनक ृ ृ ू ू प्रिवत्त विकवसत करने के वलए छात्रों में िैज्ञावनक ढग से सोचने समझने की क्षमता और कायभ करने की ृ ं आदत होनी चावहए। छात्रों को वकसी ्री प्रकार के अधविश्वासों से दर रहकर वकसी ्री बात को वबना ं ू प्रयोग एिम परीक्षि के स्िीकार नही करना चावहए। हमारी िेंन, साख्य एिम बौि परमपराए ्री इसी मत ं ं का समथभन करती ह।ैं अतः विज्ञान की वशक्षा इस प्रकार दी िानी चावहए वक छात्रों में िैज्ञावनक प्रिवत्त ृ विकवसत की िा सके और उनमे तथ्यों को गहरायी से िानने की एिम नयी नयी बातों को िानन े तथा खोिने की विज्ञासा बनी रह े । िहीं छात्रों को सामाविक आवथभक विकास हते तैयार करने के वलए यह ु िानना िरुरी ह ै वक वकस प्रकार रहन े से एिम वकस प्रकार के कायभ करने से सामाविक एिम आवथभक विकास होगा। िैसे शरीर को स्िस्थ वकस प्रकार रखा िाये? छत की बीमाररयों को फै लने से कै से रोका ू िाय े ? वकन िैज्ञावनक तकनीवकयों का प्रयोग वकया िाये विनकी सहायता से कम धन , कम श्रम एिम उत्तराखण्ड मक्त विश्वविद्यालय 106 ु CPS -2 कम समय में अवधक उत्पादन वकया िा सके ? इत्यावद इस प्रकार का सपिूभ ज्ञान विज्ञान की वशक्षा के ू ं द्वारा ही प्राप्त वकया िा सकता ह।ै िैज्ञावनक प्रिवत्त को अन्तवनविभष्ट करन े में तथा छात्रों को सामाविक आवथभक विकास हते तैयार करन े में, ृ ु विज्ञान वशक्षि के क्षेत्र में अनेक समस्यायें एिम चनौवतयााँ ह ैं यहााँ पर हम उन स्री की विस्तारपिूभक चचाभ ु ू करेंगे- 1. क्रवज्ञान क्रशक्षकों के क्रलए उक्रचत प्रक्रशक्षण कायतिम का अभाव - हमारे दशे में

Plagiarism detected: **0.15%** https://mycoaching.in/hindi-varnamala + 3 resources! id: **156**

विज्ञान वशक्षको के वलए उवचत प्रवशक्षि कायभिम का अ्िा ह।ै कछ विद्यालयों में पयाभप्त ्रौवतक सविधाओ एिम ु ु ं नयी तकनीकी से पररपूिभ प्रयोगशाला तो ह ैं वकन्त विज्ञान वशक्षकों को इन नयी तकनीकीयों को ू ु प्रयोग करने का ज्ञान ही नही ह ै । कक्षा में स्माटभ बोडभ ह,ैं कम्प्यटर ह,ैं लेवकन प्रि्ाशाली विज्ञान ू ं वशक्षि के वलए इनका प्रयोग कै से करना ह,ै इसकी िानकारी विज्ञान वशक्षकों को नही ह।ै विज्ञान वशक्षकों को वशक्षि के क्षेत्र

में प्रयोग होने िाली नयी वशक्षि विवधयों का ्री उवचत ज्ञान नही ह ै , िे आि ्री कक्षाओ में प्राचीन परपरागत वशक्षि विवधयों के माध्यम से ही वशक्षि कायभ समपावदत करते ं ं ह।ैं अतः

Plagiarism detected: **0.1%** https://sanskartutorials.in/hindi-alphabet-hindi-a… + 2 resources! id: **157**

विज्ञान वशक्षकों के प्रवशक्षि कायभिम में ितभमान समय के अनसार सधार वकये िान े की ु ु आिश्यकता ह ै । विवर्न्न नयी तकनीवकयों को कक्षा में वकस प्रकार प्रयोग करना ह ै , विज्ञान के क्षेत्र में नयी वशक्षि विवधयााँ कौन -सी ह ैं ,उनको प्रि्ाशाली वशक्षि हते वकस प्रकार प्रयोग करना ह ै , ु विज्ञान

वशक्षकों के प्रवशक्षि कायभिम में इसका प्रवशक्षि ्री शावमल वकया िाना चावहए। 2. उच्च गणवत्ता वाले क्रवज्ञान क्रशक्षकों का अभाव- हमारे दशे में उच्च गिित्ता िाले विज्ञान ु ु वशक्षकों का पहले से ही अ्िा ह,ै क्योंवक हमारे दशे में वशक्षकों को पयाभप्त

ितन नही वदया िाता ह,ै अतः िो कछ एक उच्च गिित्ता िाले कशल वशक्षक ह ैं ्री, िे अच्छे ितन पाने की लालसा में ु ु ु अपन े दशे में सेिा प्रदान ना करके , दसरे देशों को पलायन कर िाते ह।ैं अतः आिश्यक ह ै की ू वशक्षकों के ितन िवि की वदशा में प्रयास वकय े िायें और ऐसा करके प्रवत्ाशाली वशक्षकों के ृ पलायन को रोका िा सके । 3. कक्षा में क्रशक्षक की भक्रमका - हमारे विद्यालय की कक्षाओ में वशक्षक की वमका एक तानाशाह ू ू ं शाशक के समान होती ह।ै

Plagiarism detected: **0.23%** https://mycoaching.in/hindi-varnamala + 2 resources! id: **158**

छात्रों को वशक्षक से कोई प्रश्न करने की स्ितत्रता नही होती ह।ै वशक्षक िो ं कछ ्री िानता ह,ै उसे छात्रों के मन मवस्तष्क में र्र देने की कोवशश करता ह,ै वबना इस बात की ु परिाह वकय े की छात्रों को कछ समझ आ रहा ह ै वक नही , उनकी सीखन े में कोई रूवच ह ै वक नही ु और उन्होंने कछ सीखा ह ै वक नही । छात्रों में िैज्ञावनक मनोिवत्त विकवसत करने हते छात्रों को वशक्षक ृ ु ु से प्रश्न करन े की और अपने विचार व्यक्त करने की पिभ स्ितत्रता होनी चावहए। वशक्षक को छात्र की ू ं विज्ञासा को शात करने हते एक वमत्र के समान छात्रों का पथ प्रदशभन करना चावहए तथा छात्रों को ु ं स

्िय करके सीखने के अिसर प्रदान करने चावहए । ं 4. नवीन क्रशक्षण क्रवक्रियों के ज्ञान का अभाव - हमारे विद्यालय की कक्षाओ में वशक्षक विज्ञान ं वशक्षि हते आि ्री प्राचीन परपरागत वशक्षि विवधयों का प्रयोग करते ह ैं । कक्षाओ में विज्ञान िैसे ु ं ं प्रयोग आधाररत विषय को व्याख्यान विवध के माध्यम से ही पढाया िाता ह ै । िबवक छात्रों में उत्तराखण्ड मक्त विश्वविद्यालय 107 ु CPS -2 िैज्ञावनक मनोिवत्त विकवसत करन े हते वशक्षक द्वारा

Plagiarism detected: **0.08%** https://mycoaching.in/hindi-varnamala + 2 resources! id: **159**

प्रयोग प्रदशभन विवध ,प्रयोगशाला विवध, कासेप्ट ृ ु ं मैवपग विवध िैसी नई वशक्षि विवधयों का प्रयोग वकया िाना चावहए । वशक्षक कक्षा वशक्षि में ं निीन वशक्षि विवधयों का सफलतापिभक प्रयोग कर सके , इसके वलए वशक्षकों को इन वशक्षि ू विवधयों के प्रयोग

में प्रवशवक्षत वकय े िाने की आिश्यकता ह ै । यवद आिश्यक हो तो वकसी विशेष प्रकरि के स्पष्टीकरि हते वशक्षकों को ,छात्रों को शैवक्षक रम मि पर ्री ले िाना चावहए, िैस े: वकसी ु परमाि अनसन्धान कें ि या वकसी फै क्री या वकसी मयवियम में

Plagiarism detected: **0.26%** https://mycoaching.in/hindi-varnamala + 3 resources! id: **160**

छात्रों को शैवक्षक रम मि पर ले िाना। ु ु ू ऐसा करन े से छात्रों में िैज्ञावनक प्रिवत्त प्रबल होगी । ृ 5. कक्षा में छात्रों की अक्रिक सख्या- विज्ञान एक ऐसा विषय ह ै विसमें छात्रों को स्िय करके सीखने ं ं के अिसर प्रदान वकये िान े चावहए अथाभत छात्र द्वारा वकसी ्री तथ्य को स्िीकत या अस्िीकत करने ृ ृ का आधार छात्र के द्वारा स्िय वकय े गये प्रयोग एिम परीक्षि के वनष्कष भ होने चावहए । कक्षा में छात्र ं को स्िय करके सीखन े के अिसर प्रदान वकये िायेंगे त्ी उनके अन्दर िैज्ञावनक प्रिवत्त विकवसत हो ृ ं सके गी, लेवकन हमारे स्कलों की कक्षाओ में छात्रों की सख्या इतनी अवधक ह ै वक प्रत्येक छात्र को ू ं ं स्िय करके सीखने के अिसर प्रदान करना सिर् नही ह ै । ं ं 6. पाठयिम में प्रयोग

ात्मक कायत का अभाव- हमारा विज्ञान का पाठयिम सैिावतक ह,ै वकन्त ृ ृ ु ं व्यािहाररक नही ह ै । यह छात्रों को स्िय करके सीखन े के अिसर प्रदान नही करता अवपत उनको ु ं तथ्यों को रट लेने की प्रिवत्त पर बल दते ा ह।ै अतः यह आिश्यक ह ै की विज्ञान के पाठयिम को ृ ृ व्यािहाररक बनाया िाये प्रत्येक प्रकरि में प्रयोगात्मक वियाकलापों को अवधक स्थान वदया िाये। विससे की छात्रों में िैज्ञ ावनक प्रिवत्त का विकास हो सके और िे वकसी तथ्य को रटने के स्थान पर ृ स्िय प्रयोग एिम परीक्षि करके ,उसके वनष्कषभ के आधार पर सीख सकें । ं 7. प्रयोगशाला में भौक्रतक सक्रविाओ का अभाव- विज्ञान प्रयोग आधाररत विषय ह,ै हमारे दशे के ु ं कछ स्कलों में या तो प्रयोगशाला ही नही ह ैं और यवद ह ैं ्री तो प्रयोगशालाओ में पयाभप्त ्ौवतक ु ू ं सविधाए ही नही ह।ै विनके अ्ाि में एक कशल प्रवशवक्षत वशक्षक चाहकर ्री छात्र को ऐसा ु ु ं िातािरि ही प्रदान नही कर पाता ह ै वक छात्र विज्ञान िैसे विषय को स्िय प्रयोग करके सीख सके । ं अभ्यास प्रश्न 6. िनमानस में िैज्ञावनक िवष्टकोि का विकास हमारे सविधान के अनच्छेद ________के अतगभत ु ं ं _________ में से एक ह।ै 7. िषभ _________में________ सविधान सशोधन में

Quotes detected: **0%** id: **161**

“िैज्ञावनक प्रिवत्त”

के साथ

Quotes detected: **0.01%** id: **162**

“मनष्य िावत ृ ु ं ं की सेिा”

को िोड़ा गया ह।ै 8. िैज्ञावनक प्रिवत्त का मलाधार बताइये ? ृ ू 9. विज्ञान वशक्षि के क्षेत्र में आने िाली वकन्हीं दो समस्याओ को वलवखए ? ं उत्तराखण्ड मक्त विश्वविद्यालय 108 ु CPS -2 3.6 सारांश विज्ञान के अतगभत होन े िाली नयी नयी तकनीकीयों की खोिें ि अविष्कार, वकसी ्री समाि एिम ं सस्कवत को एक प्रगवतशील स्िरूप प्रदान करते ह।ैं विज्ञान प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष रूप से

हमारे िीिन के ृ ं प्रवत िवष्टकिो को प्रिावित करता ह ै , हमारे आवथभक एिम सामाविक पररितभनों को प्रोत्साहत करता ह।ै विसके कारि कोई िी देश या समाि उन्नवत के पथ पर आगे बढ़ता रहता ह ै । इस इकाई में हमने , ज्ञान की एक शाखा

Plagiarism detected: **0.08%** https://sanskartutorials.in/hindi-alphabet-hindi-a… id: **163**

के रूप में विज्ञान हमारे िीिन के लगिग हर क्षेत्र को वकस प्रकार प्रिावित करता ह,ै इसके विषय में विस्तत अध्ययन वकया ह ै । विज्ञान का स्कल पाठयिम में क्या स्थान ह ै ? स्कल ृ ृ ू ू पाठयिम में विज्ञान

को एक महत्िपिभ विषय के रूप में रखकर हम छात्रों के व्यवक्तत्ि में िो पररितभन कर ृ ू सकते ह ैं , उनके विषय में विस्तारपिभक िििभन वकया गया ह ै । साथ ही िैज्ञावनक प्रिवत्त को अन्तवनविष्ट ृ ू करने में एिम सामाविक आवथभक विकास के िाहक के रूप में ,विज्ञान वशक्षि की क्या समस्याए एिम ं चनौवतयाँ ह ैं , इन समस्यायों और चनौवतयो को वकस प्रकार दर वकया िा सकता ह,ै इस पर िी ु ु ू विस्तारपिभक चचाभ की गयी ह ै । विज्ञान की वशक्षा का मख्य उद्दश्े य छात्रों में िैज्ञावनक प्रिवत्त का विकास ृ ू ु करना ह ै और साथ ही छात्रों को सामाविक आवथभक विकास के वलए तैयार करना ह ै । स्पष्ट ह ै वक िब तक हमारा विज्ञान वशक्षि उन्नत नही होगा, तब तक हम इन उद्देश्यों को प्राप्त ही नही कर सकें गे । अतः हमें विज्ञान वशक्षि को उन्नत बनाने के हर सिंि प्रयास करने चावहय।े ं 3.7 शब्द ािली 1. क्रवज्ञान :

Quotes detected: **0.01%** id: **164**

"ज्ञान का िमबि रूप विज्ञान ह ै ।"

3.8 अभ्य ास प्रश्नों के उत्त र 1. लेवटन, Scire 2. िौवतकी , रसायन शास्त्र 3. असत्य 4. असत्य 5. स्कल पाठयिम में विज्ञान को एक महत्िपिभ विषय के रूप में रखने से छात्रों के व्यवक्तत्ि में ृ ू ू होने िाले तीन पररितभन ह ैं - i. अधविश्वासों से मवक्त वमलना ु ं ii. कायभक्षमता में िवि होना ृ iii. िीिन की दवै नक समस्याओ को िैज्ञावनक विवध से हल करना सीखना ं 6. 51, अ, मौवलक कत्तभव्य 7. 1976, 42 िें उत्तराखण्ड मक्त विश्वविद्यालय 109 ु CPS -2 8. अनिषि की प्रिवत्त तथा प्रश्न पछे िान े का अवधकार ृ ू 9. विज्ञान वशक्षि के क्षेत्र में आने िाली दो समस्याए ह ैं – ं i. विज्ञान वशक्षकों के वलए उवचत प्रवशक्षि कायभिम का अिाि ii. पाठयिम में प्रयोगात्मक कायभ का अिाि ृ 3.9 संदर् भ ग्रंथ सची ू 1. माहश्वे री, िी. के . एिम माहश्वे री, सधा 2005. विज्ञान वशक्षि , आर. लाल. पवब्लके शन्स, ु मेरठ 2. नेगी, प्रो. िे . एस. 2013. िौवतक विज्ञान वशक्षि, अग्रिाल पवब्लके शन्स , आगरा 3. माहश्वे री, िी. के . 2005. आर. लाल. पवब्लके शन्स, मेरठ 4. http://pragati.nationalinterest.in/2014/05/role-of-scientific-temper/ 5. http://therationalistsociety.com/blogging/?p=221 3.10 वनबधात्म क प्रश्न ं 1.

Quotes detected: **0.03%** id: **165**

"विज्ञान को विद्यालय के पाठयिम में महत्िपिभ स्थान वदया िाना एक उवचत वनिभय ह ै ।"

इस ृ ू कथन को विज्ञान द्वारा होने िाले लािों के सन्दर् भ में स्पष्ट कीविए । 2. ज्ञान की एक शाखा के रूप म ें विज्ञान मानि िीिन को वकस प्रकार प्रिावित कर रहा ह ै ? विस्तार से िििभन कीविए । उत्तराखण्ड मक्त विश्वविद्यालय 110 ु CPS -2 इकाई 4 - िाषा : विज्ञान की एक शा

Plagiarism detected: **0.06%** https://mycoaching.in/hindi-varnamala + 3 resources! id: **166**

खा के रुप में 4.1 प्रस्तािना 4.2 उद्दश्े य 4.3 िाषा: अथभ, पररिाषा एिं सप्रत्य ं ं 4.4 िाषा के तत्ि 4.5 िाषा ज्ञान की एक शाखा के रुप म

ें 4.6 पाठयिम में िाषा का स्थान ृ 4.7 समाि के विविन्न कायों में समरसता स्थावपत करने में िाषा की िवमका ू 4.8 राष्रीय एकीकरि में िाषा की िवमका ू 4.8.1 राष्रीय एकीकरि एिं िाषा ं 4.9 िाषा वशक्षि की समस्याएँ एिं चनौवतयाँ ु ं 4.10 साराश ं 4.11 अभ्यास प्रश्नों के उत्तर 4.12 सदर्भ ग्रथ सची एिं सहयोगी पस्तकें ू ु ं ं ं 4.13 वनबधात्मक प्रश्न ं 4.1 प्रस्तावना मानि िावत की अवद्वतीय उपलवब्धयों का यवद उललेख वकया िाए तो िाषा का उस में अग्रिी स्थान ह।ै िाषा मनष्य की िह विवशष्ट उपलवब्ध है िो उसे अन्य प्रावियों से अलग करती ह ै तथा समाि में विचार- ु विवनमय करने के योनय बनाती ह।ै यँू तो विचार-विवनमय या सप्रेषि सके तों के माध्यम से िी होता ह ै ू ं ं लेवकन िाषा सप्रेषि का सिोत्कष्ट माध्यम ह।ै िाषा सप्रेषि को प्रिािी बनाती ह ै विसके पररिामस्िरुप ृ ं ं समाि के विविन्न सदस्यों के मध्य सबध स्थावपत होता ह।ै दसरे शब्दों म ें यह िी कहा िा सकता ह ै वक ं ं ू िाषा के द्वारा ही सामाविक सबधों का वनमाभि होता ह।ै आचायभ हिारी प्रसाद वद्विेदी ने िी कहा ह ै – ं ं

Quotes detected: **0.08%** id: **167**

"शब्द इसी उद्दश्े य से बनाए गए ह ैं वक व्यवक्त की िािना दसरे के वचत्त म ें आसानी से उतार दी िा सके । ू व्यवक्त यवद अपने आप में पररपिभ होता तो शब्द द्वारा अथभ को प्रकट करने िाली िाषा की आिश्यकता ू नहीं होती"

। थोड़ा और विस्तार म ें देखा िाए तो मानि समाि में िाषा द्वारा तीन प्रमख कायभ सपावदत ु ं वकए िाते ह-ैं प्रथम, विचारों के सप्रेषि का कायभ, वद्वतीय, सामाविक सबध स्थावपत करने का कायभ ं ं ं उत्तराखण्ड मक्त विश्वविद्यालय 111 ु CPS -2 तथा ततीय, िाषा के माध्यम से ियवक्तक सचना पाने का कायभ। इस प्रकार, िाषा मानि समाि के वलए ृ ू अवत महत्िपिभ कायों का सपादन करता ह।ै अब यवद यह इतने महत्िपिभ कायों का सपादन करता ह ै तो ू ू ं ं इसका अध्ययन-अध्यापन िी

प्रिापिभ ढग से होना चावहए तावक अपने कायों का सपादन कर सकें । ृ ं ं प्रिापिभ अध्ययन-अध्यापन के वलए िाषा के पाठयिम म ें स्थान, समाि में िाषा की िवमका, राष्ट्रीय ् ृ ू एकता के वलए िाषा की आिश्यकता, आवद का ज्ञान, िाषा के अध्ययन ु एि अध्यापन में लगे हुए व्यवक्तयों के वलए आिश्यक है। प्रस्तत इकाई की रचना इस उद्दश्े य से की गई ह ै वक िाषा के अध्ययन ु एि अध्यापन में लगे हुए व्यवक्तयों को िाषा के सप्रत्यय का गहन ज्ञान हो सके तथा िह समाि एि राष्ट्र ं ं ं के उत्थान म ें िाषा की िवमका से पररवचत हो सके । ितभमान में िाषा वशक्षि की चनौवतयों को िान सकें । ू ु इस प्रकार यह इकाई िाषा वशक्षि एि अवधगम के कायभ में लगे हुए व्यवक्तयों के वलए अवत उपयोगी ह।ै ं इसके इतर अन्य विषयों के वशक्षकों के वलए िी यह बहत उपयोगी ह।ै 4.2 उद्दश्े य इस इकाई के अध्ययन के पश्चात आप- 1. िाषा की पररिाषा द े सकें गे। 2. िाषा के सप्रत्यय की विस्तत वििेचना कर सकें गे। ृ ं 3. िाषा के तत्िों का उललेख कर सकें गे। 4. िाषा को ज्ञान की एक शाखा के रुप में स्थावपत कर सकें गे। 5. विद्यालय पाठयिम म ें िाषा के स्थान पर तकभ पिभ चचाभ कर सकें गे। ् ू 6. समाि म ें समरसता स्थावपत करने म ें िाषा की िवमका की वििेचन कर सकें गे। ू 7. राष्ट्रीय एकीकरि में िाषा की िवमका का वििेचन कर सकें गे। ू 8. िाषा वशक्षि की समस्याओ एि चनौवतयों का वििेचन कर सकें गे। ु ं ं 4.3 िाषा: अथ,भ पवरिाषा एवं सप्रं त्यय अपने व्यापक अथभ म ें िाषा अवर्व्यवक्त का साधन ह ै विसमें मनष्य की िाषा के साथ– साथ, साके वतक ु ं िाषा एि पश-पवक्षयों की िाषाएँ िी शावमल होती ह।ै सकवचत अथभ में, िाषा का आशय वसफभ मनष्य ु ु ु ं ं की िाषा से ह।ै िाषाविज्ञानी िाषा का इसी अथभ में अध्ययन करते ह।ैं िाषा शब्द की व्यत्पवत्त िाष् ु धात से हई ह।ै िाष् धात का अथभ ह-ै अव्यक्त िािी या स्पष्ट िािी या मनष्य की िािी। अथाभत ु ु ु सकवचत अथभ म ें िाषा शब्द क प्रयोग मख्यतः मनष्य के उच्चारि अियिों द्वारा उच्चररत उन ध्िवन ु ु ु ं सके तों के वलए होता ह ै िो अथभिान होते ह।ैं पाविवन ने िी कहा ह-ै

Quotes detected: **0.01%** id: **168**

"व्यक्त िाचा समच्चारि"

। ु ं ं उत्तराखण्ड मक्त विश्वविद्यालय 112 ु CPS -2 डॉक्टि भोलानाथ क्रतविी ने िाषा को पररिावषत करते हुए कहा ह ै वक "िाषा उच्चारि अिवि से उच्चररत याद्दवच्छक ध्िवन प्रतीकों की िह व्यिस्था ह ै विसके द्वारा वकसी िाषा िाषी समाि के लोग आपस में विचारों का आदान-प्रदान करते ह।ैं " आचायत िेंवि नाथ शमात के अनसार, "िाषा याद्दवच्छक ध्िवन सके त प्रिाली को कहते ह ैं विसकी ु ं सहायता से मनष्य परस्पर विचार-विवनमय या सहयोग करते ह।ैं " ु चॉम्स्की के शब्दों में , "अथभपिभ उच्चररत ध्िवनयों की वनयमानशावसत व्यिस्था िाषा ह।ै " ू ु उपयक्त पररिाषाओ से चार बातें स्पष्ट होती ह:ैं ु ं i. भाषा ध्वक्रन सके तों का समह है - िाषा का अवनिायभ अग ध्िवन ह।ै ध्िवन मनष्य की ू ु ं ं िावगवियों एि वनःश्वास िाय की अतविभ या के पररिामस्िरुप उत्पन्न होती ह।ै इसे ध्िवन या ध्िवन ु ं ं ं समह को िाषा कहते ह।ैं ू ii. यह ध्वक्रन सके त याद्दक्रच्छक होते हैं - याद्दवच्छक का अथभ होता ह ै मनगढ़त या अपनी इच्छा से ं ं वनवमभत। ध्िवन सके त विस अथभ का प्रवतवनवधत्ि करते ह ैं इनका उसके साथ कोई सबध नहीं होता ं ं ं ह।ै िैसे- आम िो वक एक िक्ष का प्रवतवनवधत्ि करता ह,ै सस्कत म ें उसी के वलए रसाल तथा ृ ृ ं अग्रेिी में मैंगो शब्द का प्रवतवनवधत्ि करता ह।ै दसरे शब्दों में हम यह कह सकते ह ैं वक ध्िवन ं ू और अथभ में कोई तावकभ क सबध नहीं होता ह।ै ं ं iii. ये ध्वक्रन सके त रुढ़ होते हैं - समय के साथ-साथ एक अथभ विशेष का प्रवतवनवधत्ि करने के ं वलए विशेष ध्िवन सके तों का समह समाि में प्रिवलत हो िाता ह।ै इसे ही ध्िवन सके त या ध्िवन ू ं ं सके त के समहों का रुढ़ हो िाना कहा िाता ह।ै अब प्रश्न यह उठता ह ै वक अथभ और ध्िवन म ें ू ं यवद कोई तावकभ क सबध नहीं ह ै तो एक विशेष िाषा िाषी समाि के अवधकाश सदस्य द्वारा एक ं ं ं अथभ विशेष को व्यक्त करने के वलए एक ही ध्िवन सके त या ध्िवन सके तों के समह का प्रयोग ू ं ं क्यों वकया िाता ह।ै अथाभत आम को आम ही क्यों कहा िाता ह,ै कटहल क्यों नहीं कहा िाता ह?ै iv. ध्वक्रन सके त अथतवान होते हैं- प्रत्येक ध्िवन सके त एक अथभ का प्रवतवनवधत्ि करते ह।ैं ं ं उपरोक्त वििेचन के आधार पर िाषा को इस प्रकार पररिावषत वकया िा सकता ह-ै "मनष्य की ु िागेंवियों एि वनःश्वास िाय की अतविभ या के पररिामस्िरुप उत्पन्न ध्िवन या ध्िवनयों के समह ु ू ं ं विनके द्वारा विचारों के सप्रेषि का कायभ सपन्न होता ह,ै िाषा कहते ह"ैं । ं ं 4.4 िाषा के तत्व वकसी िस्त के वनमाभि में प्रयक्त सामग्री को उस िस्त का तत्ि कहते ह।ैं यथा- मानि शरीर के वनमाभि म ें ु ु ु पाँच मल तत्ि होते ह-ैं वक्षवत, िल, पािक, गगन और समीर। मवतभ के वनमाभि में मल तत्ि होता ह ै वमट्टी। ू ू ू अब यवद इन मल तत्िों को हटा वदया िाए तो इनसे वनवमभत िस्त का अवस्तत्ि िी समाप्त हो िाता ह।ै ू ु उत्तराखण्ड मक्त विश्वविद्यालय 113 ु CPS -2 वमट्टी ह ै तो मवतभ अन्यथा नहीं। अतः, यवद िाषा ह ै तो इसके कछ मलित तत्ि िी होंगे और िे तत्ि ह-ैं ू ु ू ू ध्िन्यात्मकता (साउड एवलमेंट) और अथभित्ता (मीवनग एवलमेंट)। ध्िवन और अथभ के अिाि म ें िाषा ं ं की कलपना नहीं की िा सकती ह ै । अभ्यास प्रश्न 1. िाषा शब्द की व्यत्पवत्त ___________धात से हई ह।ै ु ु 2.

Quotes detected: **0.01%** id: **169**

'व्यक्त िाचा समच्चारि'

। यह कथन_______________ ह।ै ु ं 3. अथभ और ध्िवन या ध्िवन समह में तावकभ क सबध ________ होता ह।ै ू ं ं 4. सकवचत अथभ में िाषा से आशय वसफभ ____________की िाषा से ह।ै ु ं 5. ध्िन्यात्मकता एि अथभित्ता _______________ के तत्ि ह।ैं ं 6. डॉ० िोलानाथ वतिारी के अनसार िाषा को पररिावषत कीविए । ु 7. आचाय भ दिे ेंि नाथ शमाभ ने िाषा को वकन शब्दों में पररिावषत वकया ह।ै 8. चॉमस्की के अनसार, िाषा की पररिाषा क्या ह?ै ु 9. ध्िवन

सके त के याद्दवच्छक होने से आप क्या समझते ह?ैं ं 10. ध्ि्वन सके त के रुढ़ होन े से क्या आशय ह?ै ं 4.5 ्राषा ज्ञान की एक शाखा के रुप म ें उपरोक्त ि्विेचन से स्पष्ट ह ै वक ्राषा का समि म ें महत्ि्पिभ स्थान ह।ै ्राषा के कारि ही मनष्य एक-दसरे ू ु ू के वनकट आए। उनके मध्य सबध स्थावपत हए और समि का वनमाभि हआ। इस प्रकार, ्राषा समि का ं ं एक महत्ि्पिभ अग ह।ै िब मनष्य ने एक साथ रहना प्रारर् वकया उस समय उनके द्वारा कछ मलय, ररती- ू ु ु ू ं ं रीरि परपराएँ, विश्वास आवद विकवसत की गई तावक समि के विवर्न्न सदस्यों के बीच सघष भ ना हो ं ं ं और सामाविक ि्िीन शैली का विकास हो सके । आने िाली सतवत को इन मलयों, विश्वासों, रीवत- ू ं ररिीों, परपराओ, आवद विन्ह ें की सयक्त रुप से सस्कवत कहा िा सकता ह,ै हस्तातररत करने की ृ ु ं ं ं ं ं आिश्यकता ने वशक्षा को िन्म वदया। ्राषा के वबना तो वशक्षा की कलपना ्री नहीं की िा सकती ह।ै अथाभत वशक्षा ग्रहि करने एि वशक्षा प्रदान करने के वलए ्राषा एक अवनिायभ आिश्यकता ह।ै कालातर ं ं में ज्ञान के नतन आयाम विकवसत होते गए और उन्ह ें अविभत करने के वलए ्राषा की आिश्यकता बढ़ती ू गई। इस प्रकार, ्राषा मानि समि की एक महत्ि्पिभ आिश्यकता ह।ै अब प्रश्न यह उठता ह ै वक इस ू महत्ि्पिभ तथ्य को व्यवक्त सीखता कै से ह?ै क्या यह िन्मिात ह ैं या वफर इसे मनष्य समि के साथ ू ु अतविभ या करके सीखता ह?ै इस प्रश्न के उत्तर में यह कहा िा सकता ह ै वक ध्ि्वनयों को उत्पन्न करने की ं शवक्त बालक म ें िन्मिात होती ह ै और िावगवन्ि्यों में पररपक्ि्ता के साथ-साथ बालक ध्ि्वनयाँ उत्पन्न उत्तराखण्ड मक्त विश्वविद्यालय 114 ु CPS -2 करने लगता ह।ै लेवकन उवचत रुप से बोलन े की शवक्त का विकास पररिार एि समि के साथ अतविभ या ं ं करने से ही होता ह।ै कब कौन सी ध्ि्वन उत्पन्न करनी ह,ै कौन सी ध्ि्वन कब वकस अथभ का प्रवतवनवधत्ि करेगी, आवद तथ्यों

Plagiarism detected: **0.04%** https://www.amojeet.com/2021/05/ka-se-gy-tak… id: **170**

का ज्ञान तो समि के साथ अतविभ या के पररिामस्ि्रुप ही उपाविभत हो पाता ह।ै ं अथाभत ्राषा को सीखन

ा पड़ता ह।ै अब िब ्राषा मानि समि के वलए इतना महत्ि्पिभ ह ै और यह ्री ू स्पष्ट हो गया ह ै वक यह िन्मिात नहीं ह,ै इसे अविभत करना पड़ता ह ै तो ज्ञान के अन्य शाखाओ की तरह ं इसे ्री ज्ञान की एक शाखा के रुप में स्थावपत वकया िा सकता ह।ै ज्ञान की एक शाखा के रुप म ें स्थावपत कर इसके औपचाररक अध्ययन-अध्यापन का लार् यह हआ ह ै वक व्यवक्त वसफभ स्ि्य की ्राषा का ही ं अध्ययन नहीं कर रहा ह ै िरन अन्य ्राषा ्राषी समि के ्राषाओ को ्री सीख रहा ह।ै इसके ं पररिामस्ि्रुप विवर्न्न ्राषा्राषी दो या अवधक समि एक दसरे के सपकभ में आ रह े ह।ैं उनके मध्य ं ू वनकटता स्थावपत हो रही ह ै और िसिधै कटबकम वक हमारी धारिा को बल वमल रहा ह।ै ु ु ु नलोबलाइिेशन को हम इसके पररिाम के रुप म ें देख सकते ह।ैं 4.6 पाठ्यक्रम म ्राषा का स्थान ें ्राषा की परर्राषा एि ज्ञान की एक शाखा के रुप म ें उसकी स्थापना से पाठयिम म ें उसका स्थान स्ि्तः ् ं स्पष्ट हो िाता ह।ै इसे वनमन तत्िों के माध्यम से और स्पष्ट वकया िा सकता ह:ै 1. पाठयिम वनमाभि के विवर्न्न वसिातों में से एक वसिात विषयों के समािेशन से सबवधत ह।ै इस ् ं ं ं ं ं वसिात के अनसार, पाठयिम में उन विषयों का समािेश आिश्यक ह ै होता ह ै िो विद्याथी के ् ु ं बौविक, मानवसक, चाररवत्रक, सिनात्मक एि िि्यात्मक शवक्तयों के विकास में सहायक हो, िो उस ृ ं में सामाविक और राष्ट्रीय गिों की समवि करे तथा उसके ि्िीन की समस्त आिश्यक्ताओ की पवतभ ृ ु ू ं में सहायक हो। दसरे शब्दों में कहा िा सकता ह ै वक व्यवक्तत्ि के सिांगीि विकास के वलए ू आिश्यक विषयों का समािेश पाठयिम म ें वकया िाना चावहए। ्राषा इसके वलए सिाभवधक ् महत्ि्पिभ विषय ह ै और इस द्दवष्ट से पाठयिम म ें इसका स्थान सिोच्च ह।ै ् ू 2. ्राषा वसफभ एक विषय मात्र ही नहीं ह ै िरन अन्य विषयों के अध्ययन-अध्यापन का माध्यम ्री ह।ै अथाभत ्राषा ज्ञान की एक शाखा के साथ-साथ ज्ञान के अन्य शाखाओ के अिभन का साधन ह।ै ं विद्याथी म ें ्राषाई योनयता वितनी पररपक्ि् होगी बालक उतनी ही शीघ्रता से पाठय सामग्री को ग्रहि ् करता ह।ै अतः, ्राषा की वशक्षा पर विशेष बल प्रदान वकया िाना चावहए और यह विशेष बल तब प्रदान हो सकता ह ै िब पाठयिम म ें इसका विशेष स्थान हो। ् 3. बह्राषी राष्ट्र होने के कारि ्राषा की वशक्षा और महत्ि्पिभ हो िाती ह।ै ्राषा की उवचत वशक्षा से ू हम एक-दसरे की ्राषा को समझ पाएँगे। हमारे मन म ें उनके प्रवत सममान पैदा होगा और पररिाम ू स्ि्रुप राष्ट्र म ें व्याप्त ्राषाई समस्या में कमी आएगी। अतः, पाठयिम म ें ्राषा का महत्ि्पिभ स्थान ् ू होना चावहए। उपरोक्त ि्विेचन के आधार पर यह कहा िा सकता ह ै वक पाठयिम में ्राषा का स्थान ् अवनिायतभ ः सिोपरर ह।ै उत्तराखण्ड मक्त विश्वविद्यालय 115 ु CPS -2 अभ्यास प्रश्न 11. वशक्षा ग्रहि करने एि वशक्षा प्रदान करने का सशक्त माध्यम_____________ह।ै ं 12. ध्ि्वन उत्पन्न करने की शवक्त बालक में _____________ होती ह।ै 13. ्राषा ज्ञान िास्ि्त में व्यवक्त का _____________ के साथ अतविभ या का पररिाम ह।ै ं 14. पाठयिम में ्राषा का स्थान _____________ ह।ै ् 4.7 समाज के वववर्न्न इकाइयों म समरसता स्थावपत करने म ्राषा की ें ें ्रूवमका समि के विवर्न्न वि्रागों में समरसता का होना अवत आिश्यक ह।ै विस प्रकार से सगीत यवद मधर नहीं ु ं होता ह ै तो शोर कहलाता ह ै और आनददायक नहीं होता ह ै उसी प्रकार यवद समि के विवर्न्न वि्रागों ं में अथाभत समि के विवर्न्न सस्थानों, उसके सदस्यों, उसके आदशों, आवद म ें समरसता ना हो तो समि ं विरुवपत हो िाता ह ै और इसके विवर्न्न इकाइयों में द्वद को िन्म वमलता ह।ै पररिामस्ि्रुप सामाविक ं असतलन म ें िवि होती ह।ै ऐसी वस्थवत उत्पन्न न हो इसके वलए समि में समरसता का होना आिश्यक ृ ु ं ह।ै अब प्रश्न यह उठता ह ै वक समरस समि हारमोवनयस सोसाइटी वकसे कहगें े। एक समि समरस तब कहा िाएगा िब िह अपने स्री सदस्यों के साथ एक समान व्यिहार करता ह ै तथा सब को समान अिसर प्रदान करता ह।ै समरसता िह आनददायक प्रि्रिा ह ै िो विवर्न्न घटकों स े सयक्त होकर एक होने से उत्पन्न होता ह।ै ु ं ं समरसता से तात्पयभ एकरुपता से कदावप नहीं ह।ै यह विचारों, व्यिहारों या वियाओ में एकरुपता का नाम ं नहीं ह।ै यह तो एक ऑके स्रा की तरह ह।ै विस प्रकार से ऑकि स्रा में गायक, िादक और सचालक ं वमलकर आनवदत करने िाल े कायभिम की प्रस्तवत करते ह ैं उसी प्रकार विवर्न्न

घटक वमलकर िब वकसी ु ं एक िस्त का वनमाभि करके आनद प्रदान करते ह ें तब उसे समरसता कहते ह।ें ु ं समिा विविध प्रकार के मनष्यों ए सस्थाओ का एक सगठन ह।ै प्रत्यके सस्था या व्यवक्त की अपनी ु ं ं ं ं ं आिश्यकताएँ होती ह,ै अपने लक्ष्य होते ह।ें ि अलग-अलग ्राषाएँ बोलते ह।ें उनका धम भ अलग होता ह,ै सस्कवत अलग होती ह ै लेवकन वफर ्री उन्ह ें एक साथ कायभ करना होता ह ै तावक हम समिा के लक्ष्य, िो ृ ं वक व्यवक्तगत लक्ष्य से श्रेष्ठ होता ह,ै को प्राप्त कर सकें । एक समरस समिा से आशय ऐसे समिा से ह ै विसमें सबके वलए सरक्षा, सममान, समान अिसर और िवकोपािन के उवचत साधन हो। इसके वलए ु समिा के प्रत्यके सदस्य को अपनी प्रवत्रा के विस्तार का अिसर ए सामाविक वस्िकवत वमलनी ृ ं चावहए। ्राषा ए समिा एक दसरे से अवत घवनष्ठ रुप से सबवधत ह।ै ्राषा समिा में अनेक प्रकार के कायभ ं ं ं ू वनष्पावदत करता ह।ै समिा ्री ्राषा को विस्तार प्रदान करता ह।ै इस प्रकार दोनों एक-दसरे के परक ह।ें ू ू उत्तराखण्ड मक्त विश्वविद्यालय 116 ु CPS -2 अगर यह कहा िाए की दोनों एक-दसरे के अवस्तत्ि के वलए आिश्यक ह ै तो यह अवतशयोवक्त नहीं होगी। ू समिा म ें सप्रेषि, शावत, सामाविक व्यिस्था, सत्ता ए अवधकाररता के प्रकटीकरि तथा सामाविक ं ं ं उद्दश्े यों के प्रकटीकरि के वलए ्राषा एक उपकरि

Plagiarism detected: **0.04%** https://mycoaching.in/r-ke-roop-prakar-matra-s… + 2 resources! id: **171**

के रुप म ें कायभ करता ह।ै लेवकन ्राषा का अगर त्रवटपिभ ढग से या अनप्रयक्त ढग से प्रयोग हो िाता ह ै तो िह समिा की सारी व्यिस्था को वछन्न-वर्न्न ु ू ु ु ं ं कर दते ा ह।ै अतः, ्राषा को व्यवक्तगत वर्न्नता को महत्ि देते हुए द्वद को समाप्त करने िाला होना तथा ं सामाविक मलयों को बढ़ािा देनेिाला होना चावहए। ू इस प्रकार, यह कहा िा सकता ह ै वक सामाविक सबधों को बनाए रखने में ्राषा सहायता करता ह।ै ्राषा ं ं न वसफभ सामाविक सबधों को बनाए रखने में सहायता करता ह ै अवपत यह ्राषा ए उसके

Plagiarism detected: **0.12%** https://mycoaching.in/hindi-varnamala + 2 resources! id: **172**

प्रयोक्ता के ु ं ं ं मध्य सबधों की ्री िानकारी दते ा ह।ै ं ं ्रारत एक बह्राषी राष्ट्र ह।ै बह्रावषकता से आशय एक से अवधक ्राषाओ के प्रयोग से ह।ै ऐसे म ें ्राषा ं की वर्मका और ्री सशक्त हो िाती ह ै क्योंवक एक ्राषा एक सस्कवत का द्योतक होती ह ै और अगर ृ ू ं ्राषा का सही ढग से प्रयोग नह

ीं वकया िाए तो विवर्न्न ्राषा्राषी समहों के मध्य वििाद प्रबल हो िाता ू ं ह।ै ्राषा समिा के विवर्न्न सदस्यों के मध्य सेत का कायभ करती ह।ै िह उन्ह ें एक-दसरे के करीब लाती ह,ै ु ू एक-दसरे को समझने का अिसर दते ी ह।ै इसके पररिामस्िरुप पारस्पररक सबधों म ें प्रगाढ़ता स्थावपत ं ं ू होती ह ै िो कालातर म ें समरुपता में पररिवतभत हो िाती ह।ै ं 4.8 राष्ट्रीय एकीकरण म ्राषा की ्रवमका ें राष्ट्रीय एकीकरि म ें ्राषा की वर्मका को समझने से पहले राष्ट्रीय एकीकरि को समझना आिश्यक ह।ै ू राष्ट्रीय एकीकरि िास्ति में एक अमतभ सप्रत्य ह।ै समस्त अलगाििादी प्रिवत्तयों से ऊपर उठकर राष्ट्र को ृ ू ं एक सत्र म ें बाँधने के प्रयास को राष्ट्रीय एकीकरि की सज्ञा दी िाती ह।ै दसरे शब्दों म ें कहा िाय तो यह ू ं ू एक राष्ट्र िो वक र्म ए र्मािासी, िन तथा िनसस्कवत तीनों का सवममवलत स्िरुप ह।ै इस प्रकार, ृ ू ू ं ं रष्ट्रीय एकीकरि राष्ट्र के स्री नागररकों म ें समावहत सामवहकता, एकता ए रम ातत्ि की िािना आवद के ृ ू ं विकास की प्रविया ह।ै वनमनवलवखत परर्राषाओ के माध्यम से इसके अथभ को और अवधक स्पष्ट वकया ं िा सकता ह।ै डॉक्टर बेदी के अनसार, "राष्ट्रीय एकता का अथभ ह-ै दशे के विवर्न्न राज्यों के व्यवक्तयों की आवथभक, ु सामाविक, सास्कवतक ए ्राषा विषयक विवर्न्नताओ को िाछनीय सीमा के अतगभत रखना और उनमें ृ ं ं ं ं ं ्रारत की एकता का समािेश करना"। राष्ट्रीय एकता सममेलन में राष्ट्रीय एकीकरि को परर्रावषत करते हुए कह गया ह ै वक "राष्ट्रीय एकता एक मनोिैज्ञावनक तथा शैवक्षक प्रविया ह ै विसके द्वारा लोगों के वदलों में एकता, सगठन ए सवन्नकटता की ं ं िािना, सामान्य नागररकता की िािना और राष्ट्र के प्रवत र्वक्त की िािना का विकास वकया िाता ह।ै सक्षेप में यह कहा िा सकता ह ै वक राष्ट्रीय एकता का प्रयास ही राष्ट्रीय एकीकरि ह।ै ं उत्तराखण्ड मक्त विश्वविद्यालय 117 ु CPS -2 4.8.1 िाष्ट्रीय एकीकिण एव भाषा ं ्राषा राष्ट्रीय एकीकरि के माग भ की सबसे बड़ी बाधा ए सबसे बड़ा समाधान दोनों ह।ै राष्ट्रीय एकता के ं विघटनकारी तत्िों म ें से ्राषा एक प्रमख तत्ि ह ै और उसका ज्िलत उदाहरि ह ै राज्य पनगभठन आयोग ु ु ं द्वारा ्राषाई आधार पर राज्यों का पनगभठन। ्राषा राष्ट्रीय एकता का सशक्त माध्यम ह ै क्योंवक उसी ्राषा ु के प्रयोग से ही महात्मा गाधी िी न े समस्त राष्ट्र को एक सत्र म ें बाँधकर दशे को स्ितत्र कराया। ू ं ं अब प्रश्न यह उठता ह ै वक राष्ट्रीय एकता की आिश्यकता क्या है? िब हम सब एक राष्ट्र के िासी ह ें तो एकता स्िा्राविक रुप से होनी चावहए लेवकन विि्रानकारी शवक्तयों के प्रि्रा म ें आकर यह खवडत होने ं लगती ह।ै ये वि्रेदनकारी शवक्तयाँ वनमनवलवखत ह:ें िाििाद साप्रदावयकता ं ्राषािाद क्षेत्रिाद िोट की रािनीवत प्रातिाद आवद। ं इन विघटनकारी शवक्तयों के प्रि्रा को ्राषा के माध्यम से समाप्त वकया िा सकता ह।ै वशक्षा आयोग 1964-66 ने अपने प्रवतिेदन में इस सदर्भ में कछ सझाि वदए थे िो वनमनित ह-ै ु ु ं 1. स्कल तथा कॉलेिों म ें वशक्षा का माध्यम मात्राषा हो और उच्चतर वशक्षा का माध्यम प्रादेवशक ृ ू ्राषाएँ बनाई िाए।ें प्रादवे शक ्राषाओ में पस्तक ए सावहत्य तैयार वकए िाए।ें वहदी के अवतररक्त ु ं ं ं स्री आधवनक ्रारतीय ्राषाओ के अतरा्रज्यीय आदान-प्रदान का साधन बनाया िाए। ्रारत की ु ं ं विवर्न्न ्राषाओ को सवनयोवित ढग से प्रोत्सावहत वकया िाए। ु ं ं 2. ्राषा ए यिाओ का सशवक्तकरि- यिाओ के सशवक्तकरि से आशय उन्ह ें शारीररक रुप से सशक्त ु ु ं ं ं करना नहीं ह ै बवलक उन्ह ें स्री प्रकार की सख-सविधाएँ तथा उपयक्त िातािरि प्रदान करना ह ै तावक ु ु ु िह सकारात्मक पररितभन म ें योगदान दके र अपने िीिन को आनवदत कर सकें । ्राषा इसका एक ं प्रमख मलतं उपकरि ह।ै यह

समिा के िविचत िगभ और आरवक्षत सदस्यों के बेहतरी का प्रमख ु ू ू ु ं साधन ह।ै सामाविक न्याय ए़ि समता के लक्ष्य को प्राप्त करने का प्रमख उपकरि वशक्षा ह।ै समिा ु ं विज्ञानी, इसे समिा के िविचत और हावशए पर रह रह े सदस्यों के कलयािा का श्रेष्ठ उपकरि मानते ह।ैं ं इस प्रकार, ़ाषा यिाओ को उपयक्त िाितारि प्रदान करता ह ै तावक यह सशक्त होकर समिा म ें ु ु ं सकारात्मक पररितभन ला सकें । इसके मध्यम से उनमें राष्ट्र के प्रवत एकता की ि़ािना प्रबल होती ह ै और राष्ट्रीय एकीकरि को बल वमलता ह।ै उत्तराखण्ड मक्त विश्वविद्यालय 118 ु CPS -2 3. ़ाषा, सावहत्य ए़ि राष्ट्रीय एकीकरि- ़ाषा या विवर्न्न ़ाषाओ के सावहत्य तथा सस्कवत म ें बहत ृ ं ं ं घवनष्ठ सबध ह।ै ़ाषा के वबना वकसी प्रकार के सावहत्य की सकलपना नहीं की िा सकती ह।ै ़ाषा ं ं ं ए़ि सस्कवत को एक-दसरे से पथक नहीं वकया िा सकता है। इस प्रकार, ़ाषा, सावहत्य ए़ि सस्कवत ृ ृ ृ ं ं ं ं ू तीनों एक-दसरे म ें अतगभवमफत ह ै और ि राष्ट्रीय एकीकरि में महत्ि़िपि़भ र्वमका वऩाते ह।ैं सावहत्य ु ू ू ं ू एक कला ह ै िो लोगों का मनोरिन करती ह,ै अनदवे शत करती ह ै तथा उन्ह ें आने िाल े सकट से ु ं ं आगाह करती ह।ै यह विविध प्रकार के मलयों ए़ि अवर्व्यवक्तयों को विकवसत करती ह।ै सस्कवत का ृ ू ं ं ज्ञान प्रदान करती ह ै तथा नागररक उत्तरदावयत्ि ए़ि प्रिातावत्रक मलयों को बल प्रदान करती ह।ै ू ं ं 4.9 ़ाषा वशक्षण की समस्याओ ं एवं चुनौवतया ाँ(5.7 एवं 5.8 के ववशेष संदर् भ म) ें वकसी ़ी राष्ट्र की सस्कवत ए़ि रिानीवत का उस राष्ट्र की ़ाषा से व्यापक सबध होता ह।ै ़ारत िैसे ृ ं ं ं ं बह़ावषक सस्कवत िाले राष्ट्र में तो यह सबध और ़ी स्पष्ट पररलवक्षत होता ह।ै ़ारतीय पररदृश्य में ृ ं ं ं ं ़ारत की सास्कवतक, सामाविक और रािनवै तक वस्थवत का यहााँ की ़ाषाओ पर व्यापक प्ऱिा़ ह ै ृ ं ं दृवष्टगोचर होता ह।ै इस प्ऱिा़ के अनरुप ़ारतीय ़ाषाओ की एक विशेष शैवक्षक प्रवस्थवत तथा ु ं समस्याएँ ह।ैं यथा, वहदी ़ाषा का उत्तर ़ारत म ें मात़ाषा ए़ि विदशे ी ़ाषा

Plagiarism detected: **0.04%** https://mycoaching.in/hindi-varnamala + 3 resources! id: **173**

के रुप में अध्ययन-अध्यापन ृ ं ं होता ह ै तो दवक्षि ़ारत में वद्वतीय ़ाषा ए़ि विदशे ी ़ाषा के रुप म

ें इसका अध्ययन-अध्यापन होता ह।ै ं इन विशेष शैवक्षक प्रवस्थवत ए़ि समस्याओ के कारि ़ाषा वशक्षि ए़ि अवधगम में अनेक चनौवतयों ए़ि ु ं ं ं ं कवठनाइयों का सामना करना पड़ता ह।ै एक ़ाषा वशक्षक को वशक्षि कायभ करते समय विन प्रमख ु चनौवतयों का सामना करना पड़ता ह ै उनका िणभन वनमनवलवखत ह:ै ु 1. भाषा के कायत का अपणत प्रचिा- ़ाषा को सप्रेषि के माध्यम के रुप में इतना अवधक प्रचाररत ू ं कर वदया गया ह ै वक िनमानस इसके अवतररक्त ़ाषा के विषय म ें कछ और सोचता ही नहीं ह।ै ु लेवकन सप्रेषि का माध्यम होने के साथ ही साथ ़ाषा प्रत्यके बालक को उसका दृवष्टकोि ं विकवसत करने में सहायता करती ह।ै िह बालक की रुवचयों, क्षमताओ, मलयों ए़ि अवि़ि़वतयों ृ ू ं ं को ़ी आकार प्रदान करती ह।ै 2. भाषाई कौशल का सम्यक क्रवकास- ़ाषा वशक्षक का कायभ प्रमख चार ़ावषक कौशलों- ु श्रि़ि, िाचन, लेखन ए़ि पठन कौशल का विकास करना होता ह।ै विद्यालय में ़ाषा वशक्षक ं बालक में पठन ए़ि लेखन कौशल के समयक विकास म ें तो सफल हो पाता है लेवकन विद्यालय ं पाठयिम के कारि श्रि़ि ए़ि िाचन कौशलों के समयक विकास म ें सफल नहीं हो पाता ह।ै ् ं 3. भाषा एव साक्रहत्य के प्रक्रत रुक्रच का अभाव- यह ़ारतीय पररप्रेक्ष्य में एक बहत बड़ी चनौती ु ं ह ै क्योंवक यहााँ अंग्रेिी ़ाषा को छोड़कर िनमानस म ें वकसी अन्य ़ाषा ए़ि उस ़ाषा के ं ं सावहत्य के प्रवत पयाभप्त पयाभप्त अरुवच ह।ै विद्याथी का ध्यान विज्ञान ए़ि िाविज्य िैसे विषयों पर ं उत्तराखण्ड मक्त विश्वविद्यालय 119 ु CPS -2 कें वित रहता ह।ै ़ाषा ए़ि सावहत्य के प्रवत उसका कोई रुझान नहीं होता ह।ै पररिामस्िरुप ़ाषा ं वशक्षि में अरुवच की समस्या

Plagiarism detected: **0.03%** https://teachingyatra.com/hindi-varnamala/ id: **174**

उत्पन्न हो िाती ह।ै 4. भाषा का मानक रुप व स्थानीयता- ़ाषा वशक्षि के साथ स

्थानीयता को सबवधत करना ं ं आिश्यक ह।ै यवद ़ाषा को स्थानीयता के साथ सबवधत नहीं वकया िाएगा तो विद्याथी अपन े ं ं ससार को साथभक रुप से नहीं समझ पाएँगे। वहदी ़ाषा के

Plagiarism detected: **0.06%** https://mycoaching.in/hindi-varnamala + 4 resources! id: **175**

क्षेत्र में तो यह बात और ़ी महत्ि़िपि़भ ू ं ं हो िाती ह।ै ग्रामीि क्षेत्रों में आवदिासी क्षेत्रों के विद्यावथभयों की मात़ाषा िहााँ की स्थानीय ृ बोली होती ह।ै उन

बोवलयों को वहदी की बोवलयों म ें सवममवलत वकया तो गया ह ै लेवकन उन ं बोवलयों म ें और वहदी के मानक रुप में गहरा अतर होता ह।ै यह अतर अवधगम प्रविया के ं ं ं प्ऱिा़िपि़भ सपादन में बाधक ह।ै ू ं 5. वततनी उच्चािण सबक्रित त्रक्रटयााँ- शि वलखना ि शि बोलना वकसी ़ी ़ाषा का एक ु ु ु ं ं महत्ि़िपि़भ अग होता ह।ै शि लेखन ए़ि शि िाचन का महत्ि़िपि़भ अग शि ितभनी ि शि ू ु ु ू ु ु ं ं ं उच्चारि ह।ै ़ाषा के वशक्षकों में त्रवटपि़भ ितभनी ए़ि उच्चारि की समस्या का पयाभप्त मात्रा म ें ु ू ं पाया िाना ़ाषा वशक्षि की एक बड़ी चनौती है क्योंवक िब वशक्षक ही शि अशि वलखेंगे ए़ि ु ु ु ं बोलेंगे तो विद्याथी कहीं से शि वलखना ए़ि बोलना सीख पाएँगे। ु ं 6. पािपरिक क्रशक्षण क्रवक्रियााँ- आि ़ी ़ाषा वशक्षक वशक्षि की पारपररक विवधयों का ही ं ं सहारा लेते ह ैं िो की ़ाषा वशक्षि को नीरस बना देता ह।ै 7. सहायक उपकिणों के अभाव की समस्या- ितभमान यग तकनीकी का यग ह।ै वशक्षि ु ु अवधगम के वलए अनेक प्रकार के यावत्रक साधनों का विकास बहत पहले ही हो चका ह।ै ़ाषा ु ं वशक्षि के वलए ़ाषा प्रयोगशाला के सप्रत्यय को ़ी िन्म वमल चका ह ै ए़ि उसका पयाभप्त ु ं ं विकास ़ी हो चका ह।ै लेवकन ़ारतीय पररदृश्य में आि ़ी विद्यालयों में इन उपकरिों का ु पयाभप्त अ़ि़ा ह ै और वशक्षकों को इन

उपकरिों के उपयोग के वलए प्रवशवक्षत ◌री नहीं वकया ◌िाता ह।ै अतः, सहायक उपकरिों का अ◌िा ◌राषा वशक्षि के वलए एक महत्◌िपिभ चनौती ह।ै ◌ू ◌ु वहदी ◌राषा वशक्षि की उपरोक्त चनौवतयों को सामाविक एकीकरि एि राष्ट्रीय एकीकरि के सदर्भ म ◌ें ◌ु ◌ं ◌ं ◌ं ◌राषा वशक्षि की चनौती के रुप म ◌ें ◌री देखा ◌िा सकता ह।ै सामाविक एकीकरि एि राष्ट्रीय एकीकरि म ◌ें ◌ु ◌ं ◌राषा की र्वमका महत्◌िपिभ होती ह।ै अब यवद ◌राषा का वशक्षि ही ठीक से नहीं हो पाएगा तो ◌राषा द्वारा ◌ू ◌ू वकए ◌िाने ◌िाल ◌े कायों का उवचत सपादन कै से स◌िर् हो पाएगा। यथा, ◌राषा का एक कायभ समि के ◌ं ◌ं विवर्न्न सदस्यों के मध्य सप्रेषि स्थावपत करना एि विद्यावथभयों म ◌ें मलय, द्दवष्टकोि एि अवर्व्यवक्त ◌ू ◌ं ◌ं ◌ं विकवसत करना ह।ै ◌राषा का वशक्षि उवचत ढग से नहीं होगा तो विद्याथी को शि-शि बोलना, ◌ु ◌ु ◌ं वलखना, पढ़ना और सनना नहीं आएगा। समि के विवर्न्न सदस्यों से सप्रेषि कै से करेगा? उसमें मलय, ◌ु ◌ू ◌ं अव◌िव्यवत्त, द्दवष्टकोि आवद का समवचत विकास कै से होगा? वनष्कषभतः, हम यह कह सकते ह ◌ैं वक ◌राषा ◌ृ ◌ु वशक्षि की उपरोक्त सारी चनौवतयाँ सामाविक एकीकरि एि राष्ट्रीय एकीकरि के सदर्भ म ◌ें ◌राषा वशक्षि ◌ु ◌ं ◌ं की चनौवतयाँ ह।ैं ◌ु उत्तराखण्ड मक्त विश्वविद्यालय 120 ◌ु CPS -2 अभ्यास प्रश्न 15. समि के विवर्न्न इकाइयों में समरसता स्थावपत करने में ◌राषा की र्वमका के पक्ष में कम से ◌ू कम पाँच तकभ द।ें 16. राष्ट्रीय एकीकरि में ◌राषा की र्वमका के पक्ष में कम से कम पाँच तकभ वलखें। ◌ू 17. राष्ट्रीय एकीकरि के वि◌रे्दनकारी शवक्तयों को सचीबि कीविए । ◌ू 18. वशक्षा आयोग 1964-66 न ◌े अपने प्रवतिेदन में ◌राषा के माध्यम से राष्ट्रीयकरि के वलए ◌िो सझाि वदए थे, उनका सक्षेप में उललेख कीविए । ◌ु ◌ं 19. ◌राषा वशक्षि की समस्याओ एि चनौवतयों का उललेख कीविए । ◌ु ◌ं ◌ं 4.10 सारांश ◌राषा एक अवत व्यापक शब्द ह।ै इसमें मनष्य एि मनष्यते र प्रावियों दोनों की ◌राषाओ को शावमल वकया ◌ु ◌ु ◌ं ◌ं ◌िाता ह।ै लेवकन ◌िब हम अध्ययन-अध्यापन के एक विषय के रुप में या ज्ञान की एक शाखा के अथभ में बात करते ह ◌ैं तो ◌राषा का अथ भ सकवचत हो ◌िाता ह ◌ै और इसका आशय वसफभ मनष्य की ◌राषा से हो ◌िाता ◌ु ◌ु ◌ं ह।ै प्रस्तत इकाई में ◌राषा को परर◌रावषत करते समय वसफभ मनष्यों की ◌राषा की ही बात की गई ह।ै इकाई ◌ु ◌ु के अगले खड में ◌राषा के आिश्यक तत्◌िों पर प्रकाश डाला गया ह।ै ◌राषा ज्ञान की एक शाखा ह;ै कै से? ◌ं इस कथन पर ◌री पयाभप्त चचाभ इस अध्याय में की गई ह।ै इसके साथ ही साथ पाठयिम में ◌राषा का क्या ◌् स्थान होना चावहए, इसकी ◌री व्याख्या की गई ह।ै समरस समि के अथभ को समझाते हए समि के विवर्न्न इकाइयों में समरसता स्थावपत करने में ◌राषा की र्वमका का ◌िि◌िभन ◌री वकया गया ह।ै राष्ट्रीय ◌ू एकीकरि, ◌िो वक ◌ितभमान की सबसे बड़ी चनौती ह,ै में ◌राषा की र्वमका का ◌िि◌िभन इकाई के अतररम ◌ु ◌ू ◌ं ◌राग में वकया गया ह।ै इकाई के अवतम ◌राग में ◌ितभमान परर्दृश्य में ◌राषा वशक्षि की चनौवतयों को प्रस्तत ◌ु ◌ु ◌ं वकया गया ह।ै इस प्रकार यह इकाई स्थावपत करती ह ◌ै वक ◌राषा वसफभ ज्ञान प्राप्त करन ◌े का माध्यम ही नहीं ह ◌ै ◌िरन स्◌िय ◌री ज्ञान की एक शाखा ह ◌ै विसका अन्य विषयों की ही ◌रााँवत अध्ययन-अध्यापन होना चावहए। ◌ं इकाई द्वारा की गई यह स्थापना ◌राषा-वशक्षि एि अवधगम को प्रोत्साहन प्रदान करेगी। ◌ं 4.11 अभ्यास प्रश्नों के उत्तर 1. ◌राष् 2. पाविनी 3. नहीं 4. मनष्य ◌ु 5. ◌राषा उत्तराखण्ड मक्त विश्वविद्यालय 121 ◌ु CPS -2 6. ◌राषा उच्चारि अियि से उच्चररत याद्दवच्छक ध्◌िवन प्रतीकों की ◌िह व्यिस्था ह ◌ै विसके द्वारा वकसी ◌राषा ◌राषी समि के लोग आपस में विचारों का आदान-प्रदान करते ह।ैं 7. ◌राषा याद्दवच्छक ध्◌िवन सके त प्रिाली को कहते ह ◌ैं विसकी सहायता से मनष्य परस्पर विचार- ◌ु ◌ं विवनमय या सहयोग करते ह।ैं 8. अथभपिभ उच्चररत ध्◌िवनयों की वनयमानशावसत व्यिस्था ◌राषा ह।ै ◌ू ◌ु 9. याद्दवच्छक का अथभ होता ह ◌ै मनगढ़त या अपनी इच्छा से वनवमभत। ध्◌िवन सके त विस अथभ का ◌ं ◌ं प्रवतवनवधत्◌ि करते ह ◌ैं इनका उसके साथ कोई सबध नहीं होता ह।ै ◌िैसे- आम ◌िो वक एक ◌िक्ष ◌ृ ◌ं ◌ं का प्रवतवनवधत्◌ि करता है, सस्कत में उसी के वलए रसाल तथा अग्रि◌ेी में मैंगो शब्द का ◌ृ ◌ं ◌ं प्रवतवनवधत्◌ि करता ह।ै दसरे शब्दों में हम यह कह सकते ह ◌ैं वक ध्◌िवन और अथभ में कोई तावकभ क ◌ू सबध नहीं होता ह।ै ◌ं ◌ं 10. समय के साथ-साथ एक अथभ विशेष का प्रवतवनवधत्◌ि करने के वलए विशेष ध्◌िवन सके तों का ◌ं समह समि में प्रवसि हो ◌िाता ह।ै इसे ही ध्◌िवन सके त या ध्◌िवन सके त के समहों का रुढ़ हो ◌ू ◌ू ◌ं ◌ं ◌िाना कहा ◌िाता ह।ै 11. ◌राषा 12. ◌िन्मित 13. समि 14. सोपरर 15. इस प्रश्न के उत्तर के वलए इस इकाई का खड 5.7 देखें। ◌ं 16. इस प्रश्न के वलए इस इकाई का खड 5.8 वलखें। ◌ं 17. राष्ट्रीय एकीकरि की वि◌रे्दनकारी शवक्तयाँ वनमनवलवखत ह:ैं ◌िवतिाद साप्रदावयकता ◌ं ◌राषािाद क्षेत्रिाद ◌िोट की रािनीवत तथा प्रातिाद ◌ं 18. इस प्रश्न के उत्तर के वलए इस इकाई का खड 5.8.1 दखे ◌ें। ◌ं 19. ◌राषा वशक्षि की चनौवतयाँ एि समस्याए ◌ँ वनमनवलवखत ह:ैं ◌ु ◌ं ◌राषा के कायभ का अपिभ प्रचार ◌ू ◌राषाई कौशल का समयक विकास ◌राषा एि सावहत्य के प्रवत रुवच का अ◌िा- ◌राषा का मानक रुप ◌ि ◌ं उत्तराखण्ड मक्त विश्वविद्यालय 122 ◌ु CPS -2 स्थानीयता ◌ितभनी उच्चारि सबवधत त्रवटयाँ ◌ु ◌ं ◌ं पारपररक वशक्षि विवधयाँ ◌ं सहायक उपकरिों के अ◌िा की समस्या 4.12 सदं र् भग्रंथ सची एवं सहयोगी पुस्तकें ◌ू 1. कमार, कष्◌ि (2004), बच्चे की ◌राषा और अध्यापक, राष्ट्रीय पस्तक न्यास, नई वदलली। ◌ृ ◌ु ◌ु कौवशक, ◌ियनारायि (1987), वहन्दी वशक्षि, हररयािा सावहत्य अकादमी, चडीगढ़। ◌ं 2. गप्ता,मनोरमा (1984), ◌राषा अवधगम, कें ◌िीय वहन्दी सस्थान, आगरा। ◌ु ◌ं 3. चतिेदी, रामस्◌िरूप (2005), वहन्दी सावहत्य और सिेदना का विकास, लोक◌रारती प्रकाशन, ◌ु ◌ं वदलली। 4. ◌िोसेफ ◌िस्सी(1997), ◌राषा की ◌िविकता, ज्ञानोदय प्रकाशन, धारिाड़। 5. वतिारी, ◌रोलानाथ(1990), वहन्दी ◌राषा वशक्षि, वलवप प्रकाशन वदलली। 6. वद्विेदी, हिारी प्रसाद ◌राषा, सावहत्य और देश (गगल पस्तक)। ◌ू ◌ु 7. पाविनी, अष्टाध्यायी या सत्रपाठ गगल से प्रप्त वकया हआ। ◌ू ◌ू 8. पाण्डेय, रामशकल(1993), वहन्दी वशक्षि, विनोद पस्तक मवदर, आगरा। ◌ु ◌ं 9. पाडेय, हमे चन्◌ि (2001), ◌रावषक समप्रेषि और उसके प्रवतदशभ। ◌ं 10. लहरी,रिनीकान्त (1975), वहन्दी वशक्षि, राम प्रसाद एड सस, आगरा। ◌ं ◌ं 11. ◌ियगॉत्सकी (2009), विचार और ◌राषा(अन०), ग्रथ वशलपी, नई वदलली। ◌ू ◌ं 12. शमाभ, रामविलास (1978), ◌रारत की ◌राषा समस्या, रािकमल प्रकाशन, नई वदलली। 13. श्रीिास्ति, रिीन्◌िनाथ (2009) , ◌राषाई अवस्मता और वहदी, ◌िािी प्रकाशन, नई वदलली। ◌ं 14. वसह, वनरिन कमार (1981) माध्यवमक विद्यालयों में वहन्दी वशक्षि, राि स्थान वहन्दी ग्रथ ◌ु ◌ं ◌ं ◌ं अकादमी, ◌ियपर। ◌ु 15. शमाभ, दिे ◌ें◌ि नाथ, यथा उित शमा,भ ◌िािपेयी, कष्◌िदास; वहदी शब्दानशासन, ◌िारािसी। ◌ृ ◌ु ◌ं ◌ृ 4.13 वनबधात्मक प्रश्न ◌ं 1. ◌राषा के तत्◌िों का

उललेख कीविए। 2. ्राषा ज्ञान की एक शाखा ह।ै इस कथन की िविेचना कीविए । 3. पाठयिम में ्राषा के स्थान पर एक वनबध वलवखए । ् ं उत्तराखण्ड मक्त विश्वविद्यालय 123 ु CPS -2 4. समरस समिा से आप क्या समझते ह?ैं 5. समिा के विवर्न्न इकाइयों में समरसता स्थावपत करने में ्राषा कै से योगदान करता है? 6. राष्ट्रीय एकीकरि से आप क्या समझते हैं? 7. राष्ट्रीय एकीकरि में ्राषा की र्वमका का िििभन कीविए । ू 8. ितभमान पररदृश्य में ्राषा वशक्षि की चनौवतयों पर एक वनबध वलवखए । ु ं उत्तराखण्ड मक्त विश्वविद्यालय 124 ु

Disclaimer:

This report must be correctly interpreted and analyzed by a qualified person who bears the evaluation responsibility!

Any information provided in this report is not final and is a subject for manual review and analysis. Please follow the guidelines: Assessment recommendations

Plagiarism Detector - Your right to know the authenticity! © SkyLine LLC